संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से प्रकाशित साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी, मार्च—2023, RNI-50756

वर्ष-33, अंक-389

60/-

विशेष : सुरेन्द्र सुकुमार की प्रसिद्ध कहानी 'अगिहाने'

अपनी बात...

प्रिय पाठकगण,

श्री सुरेंद्र सुकुमार को कई दिनों से फेसबुक पर पढ़ रहा था। कुछ रोचक था तो कुछ हल्का–फुल्का। सुकुमार लिखते नियमित थे। उन्हों ने गुजरे समय के अपने कवि सम्मेलनों का जिक्र किया तो मुझे सोचना पड़ा कि आखिर यह सुरेंद्र सुकुमार है कौन जिसे मैं सुन नहीं पाया था क्योंकि अस्सी के दशक में राजधानी के हर कवि सम्मेलन को रात–रात जाग कर सुना था पर उसमें तो कोई सुरेंद्र सुकुमार न था। अस्सी का दौर हमारे स्कूल–कॉलेज का था और नव लेखन का भी। 1977 तक हम फुल पैंट कम ही पहनते थे। इसी साल दसवीं पास की थी। 1979 में बारहवीं पूरी की, फिर दिल्ली यूनिवर्सिटी। मजाल है हमसे कोई कवि सम्मेलन बच जाय।

रामलीला मैदान पर गोपाल प्रसाद व्यास का कवि सम्मेलन हो या फिर दरियागंज की श्री महावीर वाटिका का आयोजन हम अपने दोस्तों के साथ इन आयोजनों में पूरी पूरी रात बैठे रहते। लेखन की शुरुआत हो चली थी। लक्ष्मी नारायण लाल, जैनेंद्र जैन, भवानी प्रसाद मिश्र, यशपाल जैन, संतोषानंद के साक्षात्कार पर परिचर्चा नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हो चुकी थी। कवि संतोषानंद से घनिष्ठता बढ़ गई थी। गए ब गाहे उनके मिंटो रोड के सरकारी निवास पर जाना होता था। वे दिल्ली सरकार के एक विद्यालय में अध्यापन करते थे और मिंटो रोड पर रहते थे।अपनी पत्नी को "राजू बेटा" कह कर पुकारते थे। दिल्ली में जिस कवि सम्मेलन में वे जाते मैं उनके साथ रहता। एक ऐसा ही आयोजन साप्ताहिक हिंदुस्तान का मंडी हाउस के एक सभागार में था। वहां रोचक किस्सा हुआ। आदरणीय नीरज जी कविता पाठ के लिए आए। उनका एक शेर था जिसे वे हर कवि सम्मेलन में अवश्य पढ़ते थे। इस आयोजन में भी उन्हों ने पढ़ा "न पीने का सलीका, न पीने का शऊर ऐसे भी लोग चले आए हैं मयखाने में"

हुआ यह कि अंतिम पंक्ति कहते कहते वे संतोषानंद की तरफ घूम गए। संतोषानंद को लगा कि उन्हों ने उनके ऊपर व्यंग्य किया है। वे वहीं झगड़ने लगे। उन्हें बड़ी मुश्किल से मनाया जा सका। कवि सम्मेलन फिर शुरू हुआ तो नीरज जी के बाद रमानाथ अवस्थी जी को बुलाया गया। उन्हों ने नीरज जी की सारी कविता को ही खारिज करते हुए कहा कि "हिंदी कवि सम्मेलन अब शुरू होता है।" उन्हों ने "चाहे मसान का हो चाहे मकान का हो धुएं का रंग एक है।" गीत पढ़ा। यहीं से मुझे मंचीय कवियों की गुटबाजी का पता चला। ऐसा ही एक आयोजन दूरदर्शन के गोल्डन जुबली का भी था। कवि सम्मेलन का संचालन गीतकार वीरेंद्र मिश्र कर रहे थे और आयोजन की अध्यक्षता हरिवंश राय बच्चन जी कर रहे थे। कवि सम्मेलन के संचालक वीरेंद्र मिश्र जी ने अपने लंबे और उबाऊ गीत "नदी के बंध कटेंगे तो नदी रोएगी।" को पढ़ा और माइक बच्चन जी को दे दिया। बच्चन जी भी ऊब गए थे उन्हों ने झट कार्यक्रम समाप्त होने की घोषणा कर दी, लोग अपनी सीटों से उठने लगे। मुझ से न रहा गया। मैं अगली सीट पर ही था, मैंने ऊंचे स्वर में कहा कि जब तक कवि सम्मेलन के अध्यक्ष कविता नहीं सुनाएंगे कार्यक्रम संपन्न नहीं हो सकता। कार्यक्रम का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण चल रहा था, कैमरा मेरे ऊपर फोकस था। लोग सीटों पर ठहर गए। बच्चन जी ने फिर माइक ले लिया तो मेरा हौसला बढ़ा। मैं ने कहा बिना मधुशाला के पाठ के कवि सम्मेलन समाप्त नहीं होगा। बच्चन जी मुस्कुराए और कहा "मुझ से मधुशाला सुननी होती तो 1933 में सुनते।"

मैं ने तुरंत उत्तर दिया "इसमें मेरा क्या दोष, तब मैं पैदा ही नहीं हुआ था।" बहुत जोर का ठहाका लगा कर फिर उन्हों ने सस्वर मधुशाला का पाठ किया। हां तो मैं कह रहा था कि मैं सुरेंद्र सुकुमार कवि से अनभिज्ञ रह गया था। फिर एक दिन उनके धर्मवीर भारती और कमलेश्वर पर संक्षिप्त संस्मरण पढ़े तो जिज्ञासा और बढ़ी कि यह सुरेंद्र कुमार कौन है?

इसी जिज्ञासा में मैंने कादम्बिनी के पूर्व मित्र कवि धनंजय सिंह से बात की तो उन्हों ने हंस कर उनके बारे में बताया। राम अरोरा और विनोद क्वात्रा से भी चर्चा की। विनोद क्वात्रा जी ने बताया कि वह तो "हमारे एटा जिले का ही है और फक्कड़ तबीयत इंसान है। इसकी एक कहानी सारिका में छपी थी। कहानी का नाम अगिहाने है और यह कहानी बहुत चर्चित हुई थी।" इतना सुनने के बाद सुरेंद्र सुकुमार में मेरी जिज्ञासा और बढ़ गई। मैंने सुरेंद्र सुकुमार से फोन नंबर मांगा और बात की। पता चला कि वे अलीगढ़ रहते हैं। अब सुरेंद्र से मिलने की मेरी बेचैनी और बढ़ गई। मैंने तुरंत 22 फरवरी का दिल्ली से अलीगढ़ का लखनऊ शताब्दी का टिकट कटाया और उन्हें बताया कि में 22 फरवरी की प्रातः अलीगढ़ पहुंच रहा हूं। उन्हों ने कहा आएं, मैं घर पर ही रहता हूं। यह सब हो ही चुका था कि एक सुबह सारिका वाले कथाकार रमेश बत्रा जी की पत्नी जया का फोन आया, उनसे जिक्र किया कि अलीगढ़ सुरेंद्र सुकुमार से मिलने जा रहा हूं। वे जिद्द करने लगीं कि वे भी अलीगढ़ चलेंगी। "मैं भी सुरेंद्र से मिलूंगी। उसने मुझ से कहा था कि उसकी अब तक इक्यावन प्रेमिकाएं हो चुकी हैं। वो हमारे यहां लारेंस रोड वाले घर भी आया करता था। और रमेश ने मुझे जिंदगी का पहला झापड़ भी उसकी वजह से ही मारा था। मैं झन्ना कर रह गई थी।" जया ने यह भी बताया कि सुरेंद्र की एक बेटी है जो गुरुग्राम में रहती है। टिकट इत्यादि के चलते जया का मेरे साथ अलीगढ़ जाना संभव न हो पाया पर उनसे मिली जानकारी ने आग में घी का काम किया। अब मैं इस सुरेंद्र सुकुमार से हर हालत में मिलना चाहता था। (क्रमशः) **सादर, सुधेन्दु ओझा**

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

अनुक्रमणिका मार्च—2023

क्रम सं:	शीर्षक :	लेखक :	पृष्ठ संख्या :
1	संपादकीय		2
2	बेटियों पर बढ़ता भरोसा....	सोनम लववंशी	4-5
3	लघुकथा : जन-जन के राम	डॉ प्रखर दीक्षित	5
4	समकालीन परिवेश में नारी विमर्श	आकांक्षा यादव	6-12
5	चिंता का चिंतन : आत्म	सुरेन्द्र सुकुमार	13-14
6	लघुकथा : सौगात	यशोधरा भटनागर	14
7	एक स्त्री की काव्य यात्रा	प्रतिमा पुष्प	15-16
8	लघुकथा : ठेलावाला	मिन्नी मिश्रा	16
9	होली : उड़त गुलाल...	पद्मा अग्रवाल	17-19
10	भारतीय संस्कृति में होली	कृष्ण कुमार यादव	20-23
11	पर्यटन : ककलोत जलप्रपात	नीना सिन्हा	24
12	कविता	विजय कनौजिया	24
13	कहानी : मि. कोबरा	संजय कुमार सिंह	25-29
14	काशी साहित्य सम्मान कृष्ण कुमार यादव को	समाचार	29
15	पुस्तक समीक्षा : जी भर बतियाने के बाद	आशा पाण्डेय ओझा	30-31
16	कविता	अर्चना गौतम मीरा	31
17	व्यंग्य : इंग्लिश पप्पू	दिलीप कुमार सिंह	32-35
18	कविताएं	केशव शरण	35
19	बालिकाओं में शिक्षा	प्रदीप छाजेड़	36
20	कहानी : न मुकरनेवाला गवाह	प्रद्युम्न कुमार सिंह	37-40
21	लघुकथा : पानी	नीना सिन्हा	40
22	कविता	डॉ मालती महर्षि	41
23	सांस्कृतिक विरासत में मातृभाषा का योगदान	डॉ रघुनंदन प्रसाद दीक्षित	41
24	शालिग्राम में राम जी	राजेश पाठक	42-43
25	व्यंग्य : ढेंकुरी पर कौव्वा	रामानुज अनुज	44-46
26	ग़ज़ल	सुशील साहिल	46
27	कविता	सोनिया अक्स	46
28	कविता	इन्दु सिन्हा 'इन्दु'	46
29	मेलाराम नगरिया : "थपेड़े" पुस्तक लोकार्पण	समाचार	47
30	लघुकथा : कसाई	यशोधरा भटनागर	47
31	कविता	संजय सिंह, रमेश मनोहरा, गुलशन पँवार व राजेंद्र ओझा	48
32	कहानी : धरोहर	प्रेमलता यदु	49-50
33	कहानी : अगिहाने	सुरेन्द्र सुकुमार	51-54

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

बेटियों पर बढ़ता भरोसा

सोनम लववंशी

हमारे समाज में महिलाओं ने दशकों तक अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। महिलाओं को चारदीवारी में भी लंबे समय तक कैद रखा गया। धीरे-धीरे इस परिस्थिति में बदलाव आना शुरू हुआ। जिसके बाद मातृशक्ति ने लैंगिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए अपनी एक पहचान बना ली! आज वैश्विक परिदृश्य पर महिलाएं बेड़ियों को तोड़कर अपने सपनों और लक्ष्यों को साकार कर रही हैं। जिसमें हमारे देश की महिलाएं भी पीछे नहीं हैं। सुखद पहलू यह है कि हमारे समाज की सोच और धारणा भी अब मातृ शक्ति के प्रति बदल रही है। आज महिलाओं को भरपूर अवसर उपलब्ध कराए जा रहें हैं। पहले स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव किया जाता था, महिलाओं को घर के कामों तक ही सीमित रखा जाता था, लेकिन अब ज़मीन से लेकर आसमां तक महिलाओं की पहुँच सुनिश्चित हो चुकी है। महिलाएं स्वयं

अपनी क़िस्मत की लकीर खींच रही, तो पिता और पति भी अब मातृ शक्ति को पारिवारिक व्यवसाय में आगे बढ़ा रहे। जो समाज में बदलाव का संकेत है।

दुनिया के सबसे अमीर शख्स बने बर्नार्ड अरनॉल्ट ने अपनी एक कंपनी 'क्रिश्चियन डिओर' की जिम्मेदारी अपनी बेटी डेल्फिन को सौंपी है। जो आधुनिक समाज और मातृ शक्ति के सशक्तिकरण की दिशा में एक मिसाल है। बेटियों पर उद्योगपतियों का बढ़ता भरोसा इस बात का भी द्योतक है कि अब मानवीय संवेदना और मूल्यों में भी परिवर्तन आ रहा है। पहले पितृसत्तात्मक समाज की सोच यही रहती थी कि कुल का दीपक एक लड़का ही हो सकता है। परिवार का व्यापार बढाने का काम एक बेटा ही कर सकता है, लेकिन इस सोच में बदलाव वैश्विक स्तर पर देखने को मिल रहा है। जिसमें हमारा देश भी पीछे नहीं है। मुगल काल के पश्चात भले हमारे समाज में महिलाओं के हक़ में कटौती कर दी गई, लेकिन धीरे-धीरे संवैधानिक मूल्यों को तरज़ीह देते हुए महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। भारत में भी वर्तमान समय में कई बड़े उद्योगपति हैं। जिन्होंने अपने व्यवसाय की जिम्मेदारी बेटियों को सौंपी है।

एक रिपोर्ट की मानें तो वर्तमान समय में देश में 24 फीसदी पारिवारिक व्यवसाय महिलाएं चला रही हैं। जिसमें से 76 प्रतिशत पिता और 24 फीसदी महिलाएं पति का व्यवसाय संभाल रही हैं। जो मातृ शक्ति के आत्मनिर्भर बनने और सशक्तिकरण की नई परिभाषा पेश करती है।

देश में ईशा अंबानी एक ऐसा नाम है। जो 2014 से रिलायंस जियो और रिलायंस रिटेल की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। यह जिम्मेदारी उनके पिता मुकेश अंबानी ने दी थी। नोएल टाटा की बेटी लेह वर्ष भी 2022 से ताज होटल समूह की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। इसके अलावा आदी गोदरेज की बेटी निसाबा गोदरेज वर्ष 2017 से गोदरेज समूह की कार्यकारी अध्यक्ष हैं। शिव नाडार की बेटी रोशनी ने 2020 में एचसीएल के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल ली थी। ऐसे नामों की एक लंबी फेहरिस्त है। जिसमें विनिता गुप्ता, देशबंधु गुप्ता की बेटी भी शामिल हैं। विनिता गुप्ता 2013 से देश की तीसरी बड़ी दवाई कंपनी ल्युपिन के प्रमुख का दायित्व निभा रही हैं।

वही कुछ बेटियां ऐसी भी हैं। जिन्हें अपने पिता या पति के व्यवसाय में कोई रुचि नहीं दिखाई पड़ी तो उन्होंने स्वयं की लकीर खींचने का प्रयास किया। इसमें बोतलबंद पानी कंपनी 'बिसलेरी' के मालिक रमेश चौहान की बेटी जयंती और कुमार मंगलम की बेटी अनन्या शामिल हैं। बिसलेरी के मालिक रमेश चौहान की बेटी ने अपने पिता के व्यवसाय को आगे चलाने से इनकार कर दिया। जबकि कुमार मंगलम बिड़ला की बेटी अनन्या ने पिता का व्यवसाय चलाने के बजाय खुद की कंपनी माइक्रोफिन प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना की। ये कुछ ऐसी मातृ शक्ति की कहानी है। जो आज हमारे समाज को आईना दिखाने का कार्य कर रही हैं। आज महिलाएं अपने बलबूते हर क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रहीं हैं। साथ ही पितृसत्तात्मक सोच में बदलाव भी देखने को मिल रहा है। लोकतांत्रिक सरकारें भी लगातार आधी आबादी को पूरे अधिकार उपलब्ध कराने का भरपूर प्रयास कर रही हैं। साथ ही हमारी रहनुमाई व्यवस्था ने महिला शक्ति को जन धन योजना से जोड़कर बड़ा आर्थिक समृद्धि का कदम उठाया। उसके बाद महिलाओं के लिए अनगिनत ऐसी योजनाएं क्रियान्वित की। जिससे समाज में भ्रूण हत्या जैसे घिनौने कृत्य पर काबू पाया जा सके।

आज हमारे समाज में कन्या भ्रूण हत्या के मामलों में तेजी से गिरावट आई है। जो इस तरफ़ इशारा करती है कि समाज ने अब बेटा-बेटी में भेदभाव को दरकिनार करना शुरू कर दिया है। बीते दिनों की ही बात है। जब लालू यादव की बेटी ने अपने पिता के लिए किडनी दान की थी। ऐसे में देखें तो महिलाओं को जब भी अवसर मिला है। उन्होंने हर रूप में अपने उत्तरदायित्वों का सफ़ल निर्वहन किया है और यही वज़ह है कि महिलाएं-पुरुषों से आज किसी भी मामले में उन्नीस नहीं हैं! फिर चाहें वह बात व्यापार की हो या घर-परिवार और सरकार चलाने की।

(लघुकथा)

जन जन के राम

"अरी चल ना.....शीला के माई.."
मुखियाईन भौजी खीजीं।

हाथ में भरे लोटा गंगा जल साधे दूसरे हाथ में अक्षत रोली माला फूल दबाए शीला की माई सुशीला झिकयानी-

"दिदिया हमरे राम .....भगवान राम ईहै रस्ता अईलै बानी.....तू तौ मुखियाइन हौउ बाटे .....तोहरा संगै बदरुआ बा...अब जलदी चला जाए मुखियाईन जी। "

आज काली या यूं कहें गंडक नदी में से वाहन द्वारा दो शिला उसी राह से वाहन से जाएंगी...जहां से त्रेता युग में कभी राम जी जानकी मैया को मिथिला से ब्याह के अयोध्या लेकर गये थे। आज बरसों बरस बाद उसी रास्ते से यह शिलाएं राम जी ,लछमन और जानकी बनने अयोध्या जी जा रहे हैं।

सुशीला चहकी-" दिदिया ऊह देखा ताsss राम जी आवत हअ अ आ....दर्शन करि लें ....हम सब का सौभाग्य बा"

"ठीक हौऊ शीला के माई...का मालुम दुसरका बेर दर्शन होई कि ना.....

शिला वाहन रुका श्रद्धालुओं विधि विधान से वंदन किया..... और सुख शांति का मनोरथ माना।

तभी बिसेसर जी जन सैलाब देखकर चौंके-तिनि देयखा मुखिया जी राम जी के चमत्कार...न ऊंच नीज ,न गरीब अमीर, न छोट न बड़ न , न जाति न धरम कहवां गईल तोहरा तुलसी बाबा के निकिष्ट कहे वाला बानी। "

".....और वह मानस को जलाने वाले लोग। " मास्टर सिंह जी ने अपनी बात जोड़ी।

नीचे सिर किए मुखिया के मुँह इतना ही निकल सका -"सियासत पर आस्था भारी पड़ गया.....जन जन के राम किसी प्रमाण से परे हैं।

डॉ प्रखर दीक्षित

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर विशेष

समकालीन परिवेश में नारी विमर्श

आकांक्षा यादव

नारी विमर्श, नारीवाद, नारी अस्मिता, नारी स्वातंत्र्य, नारी सशक्तिकरण जैसे तमाम विषय आज पूरी दुनिया में गंभीर बहस का विषय हैं। इन पर अकादमिक से लेकर राजनैतिक स्तर तक और घरेलू से लेकर सामाजिक और आर्थिक स्तर तक बहसें हो रही हैं। औपचारिक से लेकर अनौपचारिक स्तर तक चल रही इस पहल ने नारी के भीतर एक नई शक्ति और संभावनाओं के नए युग की शुरुआत की है। इसने जहाँ नारी के भीतर अधिकारों की लौ जलाई है, वहीं उन्हें अपने अधिकारों के लिए सतत संघर्ष करना भी सिखाया है। कभी अरस्तू ने कहा था, "स्त्रियाँ कुछ निश्चित गुणों के अभाव के कारण स्त्रियाँ हैं" तो संत थॉमस ने स्त्रियों को "अपूर्ण पुरूष" की संज्ञा दी थी, पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऐसे तमाम सतही सिद्वान्तों का कोई अर्थ नहीं रह गया एवं नारी अपनी जीवटता के दम पर नए आयाम गढ़ रही है। नारी आज न सिर्फ सशक्त हो रही है, बल्कि लोगों को भी सशक्त बना रही है।

वैश्विक स्तर पर देखें तो नारी विमर्श का उदय पश्चिम में हुआ माना जाता है। पाश्चात्य दार्शनिक और विचारक एच.टी मिल तथा जे.एस. मिल ने सर्वप्रथम निबंधों की एक सीरीज प्रकाशित की जिसमें कहा गया कि स्त्रियोचित तथा पुरूषोचित गुणों का विकास सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। वास्तव में स्त्रियों की सामाजिक पराधीनता को समाप्त करना आज के दौर में सबसे आवश्यक है। उन्हें सामाजिक और आर्थिक अवसर तथा शिक्षा उपलब्ध कराना ही सही अर्थों में न्याय दिलाने में उपयोगी साबित होगा। कालांतर में नारी विमर्श ने मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित होकर सामाजिकता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता को भी दर्शाया। उसके बाद उग्र नारीवाद आया। इसमें यह कहा गया कि पुरुष द्वारा स्त्री का शोषण सर्वत्र और हर समाज में

होता है। वहीं प्रसिद्ध समाजशास्त्री सिमोन द बोउआर ने कहा कि, "स्वाभाविक तौर पर स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि उसमें लिंगभेद की चेतना पैदाकर उसके स्त्री होने का अहसास कराया जाता है। स्त्री-पुरुष समता में शरीर न तो बाधक है न बंधक। समाज की मनोवृत्ति में बदलाव किये बिना विमर्श के लाभ को पूरी तरह प्राप्त करना संभव नहीं है।"

नारियों को अपनी पहचान बनाने लिए काफी संघर्ष करना पड़ा। 1900 के आरंभ में 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाने की शुरूआत हुई थी। वर्ष 1908 में न्यूयार्क की एक कपड़ा मिल में काम करने वाली करीब 15 हजार महिलाओं ने काम के घंटे कम करने, बेहतर वेतन और वोट का अधिकार देने के लिए प्रदर्शन किया था। इसी क्रम में 1909 में अमेरिका की ही सोशलिस्ट पार्टी ने पहली बार नेशनल वुमन-डे मनाया था। वर्ष 1910 में डेनमार्क के कोपेनहेगन में कामकाजी महिलाओं की अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला दिवस मनाने का फैसला किया गया और 1911 में पहली बार 19 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। उस समय इसका प्रमुख ध्येय महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिलवाना था क्योंकि उस समय अधिकतर देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था। इसे सशक्तिकरण का रूप देने हेतु लाखों महिलाओं ने रैलियों में हिस्सा लिया। 1911 में ही महिलाओं के अधिकार के लिये लड़ने

वाली नेन्सी एस्टर, ब्रिटिश संसद की पहली-

हिला साद बनीं। जैसे-जैसे महिलाएं मुखर होती गईं, आंदोलनों दायरा भी बढ़ता गया। 1917 में रुस की महिलाओं ने, महिला दिवस पर रोटी और कपड़े के लिये हड़ताल पर जाने का फैसला किया। यह हड़ताल भी ऐतिहासिक थी। अंततः जार ने सत्ता छोड़ी और अन्तरिम सरकार ने महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिये। उस समय रुस में जुलियन कैलेंडर चलता था और बाकी दुनिया में ग्रेगेरियन कैलेंडर। इन दोनो की तारीखों में कुछ अन्तर है। जुलियन कैलेंडर के मुताबिक 1917 की फरवरी का अंतिम रविवार 23 फरवरी को था जबकि ग्रेगेरियन कैलैंडर के अनुसार उस दिन 8 मार्च था। इस समय पूरी दुनिया में (यहाँ तक कि रूस में भी) ग्रेगेरियन कैलैंडर चलता है। तब से विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए 8 मार्च को महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

यद्यपि नारी आंदोलन और विमर्श की

जड़ें पाश्चात्य देशों में खोजी जाती हैं, पर भारत में भी आरंभ से ही इसके सूत्र मिलते हैं। भारतीय संस्कृति में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह शिव भी है और शक्ति भी, तभी तो भारतीय संस्कृति में सनातन काल से अर्धनारीश्वर की कल्पना सटीक बैठती है। शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी की महत्ता को स्वीकार किया गया है, "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।" सिंधु संस्कृति में भी मातृदेवी की पूजा का प्रचलन परिलक्षित होता है। नारी का कार्यक्षेत्र न केवल घर बल्कि सारा संसार है। प्रकृति ने वंश वृद्धि की जो जिम्मेदारी नारी को दे रखी है, वह न केवल एक दायित्व है अपितु एक चमत्कार और अलौकिक सुख भी है। इन सबके बीच नारी आरंभ से ही अपनी भूमिकाओं के प्रति सचेत रही है। 'नारीवाद' या 'फेमिनिज्म' के रूप में नारी द्वारा अपने अधिकारों के लिए की जाने वाली लड़ाई सदियों पुरानी है। भारतीय संदर्भ में देखें तो हमारे वेद और ग्रंथ नारी शक्ति के योगदान से भरे पड़े हैं। विश्ववारा, अपाला, लोमशा, लोपामुद्रा तथा घोषा जैसी विदुषियों ने ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की रचना करके और मैत्रेयी, गार्गी, अदिति इत्यादि विदुषियों ने अपने ज्ञान से तब के तत्वज्ञानी पुरूषों को कायल बना रखा था। नारी को आरंभ से ही सृजन, सम्मान और शक्ति का प्रतीक माना गया है। जब गार्गी याज्ञवल्क्य के साथ संवाद करती है, तो कहीं-न -कहीं वह नारी अस्मिता और इसके सशक्तिकरण की लड़ाई लड़ रही होती है। इसी प्रकार जब शकुंतला, दुष्यंत द्वारा न पहचाने जाने पर उन्हें भला-बुरा कहकर वहाँ से लौटने लगती है, तो वो भी वह अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ रही होती है। महाभारत काल में जब द्रौपदी भरी सभा में अपने अपमान पर वहाँ उपस्थित लोगों से धर्म का अर्थ पूछती है और अपने पतियों को धिक्कारती है, तो वहाँ भी एक तरह का नारीवाद है। नारी ने जब-जब आवाज उठाई उसकी आवाज को कुंद करने का प्रयास किया गया लेकिन उसका संघर्ष भी उतना ही पुराना है। पश्चिम में भले ही उसे 'नारीवाद' नाम मिल गया हो, लेकिन स्त्री की अपनी अस्मिता, अस्तित्व और अधिकारों की ये लड़ाई प्रायः हर देश-काल में मौजूद थी और सदियों पुरानी है।

भारतीय संस्कृति में नारी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वह शिव भी है और शक्ति भी, तभी तो भारतीय संस्कृति में सनातन काल से अर्धनारीश्वर की कल्पना सटीक बैठती है। शास्त्र से लेकर साहित्य तक नारी की महत्ता को स्वीकार किया गया है, "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।" सिंधु संस्कृति में भी मातृदेवी की पूजा का प्रचलन परिलक्षित होता है।

नारी मुक्ति आन्दोलन से नारी ही प्रथमतः जुड़ी, जिसकी अभिव्यक्ति उसके लेखों, नारों इत्यादि में दिखायी देती है। लिंगीय विभेद के प्रश्न को उठाने वाली प्रथम पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तक सिमोन द बोउआर (The second sex -1949) थीं। अस्तित्ववादी विचारों की पोषक बोउआर ने स्त्रियों के विरूद्ध होने वाले अत्याचारों और अन्यायों का विश्लेषण करते हुए लिखा, "पुरूष ने स्वयं को विशुद्ध चित्त (Being-for- itself : स्वयं में सत्) के रूप में परिभाषित किया है और स्त्रियों की स्थिति का अवमूल्यन करते हुए उन्हें "अन्य" के रूप में परिभाषित किया है व इस प्रकार स्त्रियों को "वस्तु" रूप में निरूपित किया गया है। बोउआर का मानना था कि स्वयं स्त्रियों ने भी इस स्थिति को स्वीकार कर लिया। 19वीं सदी की महान नारीवादी ब्रिटिश लेखिका वर्जीनिया

वुल्फ की 'ए रूम ऑफ वन्स ओन' से लेकर तस्लीमा नसरीन की 'औरत के हक में', हिंदी लेखिका मैत्रेयी पुष्पा की 'आज की नारी' और प्रभा खेतान की 'बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ' जैसी तमाम पुस्तकें नारी विमर्श को बढ़ावा देती हैं। वृंदा करात की 'भारतीय नारी संघर्ष और मुक्ति', इतालवी पत्रकार और लेखिका ओरियाना फेलेसी की 'एक खत अजन्मे बच्चे के नाम', तथा जेस्मिन लोरेंस की 'महिला श्रमिक : सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं', ऐलिन मोर्गन की 'नारी का अवतरण' जैसी तमाम पुस्तकें स्त्री समाज के विभिन्न आयामों को उनके परिवेश के साथ प्रतिबिंबित करती हैं और उनका विश्लेषण करती नजर आती हैं। व्यापक सरोकार को समेटे इन तमाम कृतियों के केंद्र में स्त्री का संघर्ष और अस्मिता है। ये न तो नारेबाजी में उतरती हैं, न किसी हवालोक में जाकर कोई आदर्शवादी चित्र प्रस्तुत करने की राह पकड़ती हैं। उनके पास खुद के भोगे गए यथार्थ अनुभव और अपने परिवेश की घटनाओं की पूंजी है, जिससे नारी विमर्श आकार लेता है।

नारीवादी विमर्श किसी एक कालखण्ड से बंधा हुआ नहीं है बल्कि यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अतीत का विश्लेषण करता है। भारतीय सभ्यता-संस्कृति में भी यह स्त्री की ऐतिहासिक अवस्थिति को पहचानने की कोशिश करता है। स्त्री की पीड़ा यह है कि उसे अपनी बात कहने का हक ही नहीं दिया गया। जब स्त्री ने कुछ कहने की सोची तो उसे उसके दायरे में कैद कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्री की रचनात्मकता और वैचारिकता का प्रस्फुटन ही उसकी मानसिक पीड़ा और समस्या बन गई। इससे स्त्री के अंदर का छुपा सच समाज के सामने नहीं आ पाया। यह भी सोचने का विषय है कि जहाँ एक ओर अभिव्यक्ति के लिए नारे लगाए जाते हों वही दूसरी ओर स्त्री को अपनी बात भी कहने का अधिकार न हो। स्त्री की वेदना का अनुभव संसार कितना बड़ा है, लेकिन हमेशा उसे सामाजिक पटल पर आने से रोका जाता रहा। भारतीय संस्कृति में एक ओर स्त्री को देवी मानने का आदर्श रहा है तो दूसरी ओर पुरूष प्रधान सत्ता के तहत स्त्री को अधीनस्थ बनाए रखने का यथार्थ भी। तभी तो डॉ. राम मनोहर लोहिया जैसे विचारक स्त्री को परतंत्र बनाने वाली विभिन्न शक्तियों और उनके आपसी संघात को देखते हैं और मानते हैं कि स्त्री की स्थिति जैविक रुप से एक खास शारीरिक इकाई होने का ही प्रतिफल नहीं, बल्कि स्त्री की परतंत्रता, जाति, वर्ग, धर्म जैसे कारकों का भी प्रतिफल होती है। धर्म और संस्कृति के सहारे पितृसत्ता स्त्री के एक स्वतंत्रचेता व्यिंक्तत्व होने की संभावनाओं को नष्ट करती रही है। अभी भी तमाम धार्मिक स्थलों पर नारी के प्रवेश को लेकर तमाम बंदिशें हैं। हिंदू समाज में उसी स्त्री को आदर्श माना गया जो मनसा-वाचा-कमर्णा पति की अनुगामिनी रही हो। निर्गुण रुप में वह स्त्री को देवी मानता है, सगुण में दासी। लोहिया कहते हैं कि पुरुष स्त्री को प्रतिभासंपन्न और बुद्धिमती भी बनाना चाहता है और उसे अपने कब्जे में भी रखना चाहता है। दूसरे शब्दों में कहें तो आज के दौर में पुरुष को ऐसी स्त्री चाहिए, जो अपने कौशल में तो अंग्रेज स्त्रियों की तरह हो, लेकिन भारतीय संस्कृति यानी पुरानी पितृसत्ता की संवाहक भी हो।

भूमंडलीकरण के बाद के प्रभावों, प्रतिफलों, सरोकारों और चिंताओं से नारी विमर्श भी अछूता नहीं रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति कई बार नारी कोएक आब्जेक्ट के रूप में पेश करती है, जिसे केवल उपभोग करना है, मानो उसकी कोई भावना ही नहीं। ऐसे में पाश्चात्य सभ्यता के समर्थक कुछ लोगों को नारी

नारीवादी विमर्श किसी एक कालखण्ड से बंधा हुआ नहीं है बल्कि यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अतीत का विश्लेषण करता है। भारतीय सभ्यता-संस्कृति में भी यह स्त्री की ऐतिहासिक अवस्थिति को पहचानने की कोशिश करता है। स्त्री की पीड़ा यह है कि उसे अपनी बात कहने का हक ही नहीं दिया गया। जब स्त्री ने कुछ कहने की सोची तो उसे उसके दायरे में कैद कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्री की रचनात्मकता और वैचारिकता का प्रस्फुटन ही उसकी मानसिक पीड़ा और समस्या बन गई। इससे स्त्री के अंदर का छुपा सच समाज के सामने नहीं आ पाया।

स्वतंत्रता का रास्ता दैहिक वर्जनाओं को तोड़ने और उन्मुक्तता में दिखा। महिलाओं को बाजार में उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री में लुभाने के अंदाज के कारण भी यह स्थिति उत्पन्न हुई। कई समकालीन विद्वान स्त्री की अस्मिता और स्वतंत्रता को उसकी यौन स्वतंत्रता की परिधि में ही सीमित रखने की रूढ़ि के शिकार हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग अब स्वीकारता है कि स्त्री को "सेक्स" का पर्यायवाची बनाकर "यौन प्राणी" मात्र बना दिया गया अर्थात पुरूष को विषयी, निरपेक्ष व स्वायत्त रूप में एवं स्त्री को विषय, अन्य, सापेक्ष व पराधीन रूप में माना गया। इस प्रकार एक चेतन वर्ग द्वारा दूसरे चेतन वर्ग को अधीनता प्रदान की गयी और दूसरे वर्ग ने अपनी अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार स्त्री-पुरुष में एक द्वैत की स्थापना की गई है। एक विचारक के शब्दों में, "पुरुषों की नैतिकता महज सेक्स तक सीमित है लेकिन स्त्री की नैतिकता को उसके व्यवहार से जोड़ दिया गया है।" ऐसे में मॉरल-पुलिसिंग के नाम पर नैतिकता का समस्त ठीकरा महिलाओं के सिर पर थोप दिया जाता है। समय समय पर महिलाओं के वस्त्र-चयन को लेकर, शिक्षा, घूमने-फिरने इत्यादि को लेकर नियम बनाये जाते हैं। कई बार तो सुनने को भी मिलता है कि महिलाएं अपने पहनावे से ईव-टीजिंग को आमंत्रण देती हैं, मानो वे सेक्स ऑब्जेक्ट हों। इन दोनों छोरों के बीच नारी अपनी अस्मिता के लिए दोहरा संघर्ष करती है। आज नारी अपने अस्तित्व और अस्मिता दोनों के प्रति सजग हो रही है।

कई समकालीन विद्वान स्त्री की अस्मिता और स्वतंत्रता को उसकी यौन स्वतंत्रता की परिधि में ही सीमित रखने की रूढ़ि के शिकार हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग अब स्वीकारता है कि स्त्री को "सेक्स" का पर्यायवाची बनाकर "यौन प्राणी" मात्र बना दिया गया अर्थात पुरूष को विषयी, निरपेक्ष व स्वायत्त रूप में एवं स्त्री को विषय, अन्य, सापेक्ष व पराधीन रूप में माना गया। इस प्रकार एक चेतन वर्ग द्वारा दूसरे चेतन वर्ग को अधीनता प्रदान की गयी और दूसरे वर्ग ने अपनी अधीनता स्वीकार कर ली।

नारी अस्मिता एक व्यापक शब्द है, जिसमें वह एक तरफ तो घरेलू मोर्चे पर लड़ती है वहीं घर से बाहर भी उसे अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़नी होती है। वस्तुतः उसका यथार्थ जीवन इतना कटु है कि उसके अपने सपने कब खत्म हो जाते हैं पता ही नहीं चलता। अपनी अस्मिता की तलाश भी वह कल्पना लोक में ही करती रहती है। तभी तो सिमोन द बोउआर ने कहा था, "नारी का बड़बड़ाना भी उसका विरोध दर्ज करना है।" यह अनायास ही नहीं है कि नारी स्वातंत्र्य के नाम पर चल रहे तमाम आंदोलनों और विमर्शों को कई बार परम्परागत मूल्यों के विपरीत बताते हुए अराजक तक कह दिया जाता है। नारी की प्रगतिशील प्रवृत्ति को भी कई बार स्वच्छंदता मान लिया जाता है या फिर स्वच्छंदता की आड़ में स्वतंत्रता पर बंधन लगाने की मानसिकता भी कार्य करती है। वस्तुतः स्वतंत्रता, स्वच्छंदता नहीं है बल्कि यह एक मर्यादा के भीतर अपने अधिकारों का सम्यक प्रयोग और कर्तव्यों का संतुलित निर्वहन है। नारी समाज का एक वर्ग ऐसा भी है जो अभी भी सिर से पाँव तक पूरे कपड़े पहने अपनी बौद्धिकता और जीवटता के दम पर समाज की रूढ़िगत वर्जनाओं को तोड़ने का साहस रखता है। वस्तुतः भूमंडलीकरण के दौर में नारी अपनी शिक्षा एवं सजगता के चलते जहाँ आत्मविश्वास हासिल कर रही है, वहीं घरेलू उत्पीड़न, उपभोग्यता और उपयोगिता से

मुक्ति के साथ-साथ अपनी स्वतंत्र अस्मिता व अस्तित्व के प्रश्न को एक नये सिरे से उठा रही है। स्त्री के इतिहास और मिथक में चित्रित रूपों से, अतिरंजना की परत को हटाकर नारीवादी विमर्श उसके यथार्थ को प्रस्तुत करता है।

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है। वह अपने कर्तव्यों को गृहकार्यों की इतिश्री ही नहीं समझती है, बल्कि अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है। वस्तुतः समाज की यह पारंपरिक सोच कि महिलाओं के जीवन का अधिकांश हिस्सा घर -परिवार के मध्य व्यतीत हो जाता है और बाहरी जीवन से संतुलन बनाने में उन्हें समस्या आएगी, बेहद दकियानूसी लगती है। आज एक महिला घर में अकेले जितना कार्य करती है, उसका मोल कोई नहीं समझता। पुरुष इसे महिला की ड्यूटी मानकर निश्चिन्त हो जाता है। यह उस स्थिति में भी है जबकि महिला भी कमा रही होती है। आज जरूरत इस बात की भी है कि जी.डी.पी. में महिलाओं के कार्य की गणना हो और घरेलू कार्यों को हवा में न उड़ाया जाय। इस अवधारणा को बदलने की जरुरत है कि बच्चों का लालन-पोषण और गृहस्थी चलाना सिर्फ नारी का काम है। यह एक पारस्परिक जिम्मेदारी है, जिसे पति-पत्नी दोनों को उठाना चाहिए। इस बदलाव का कारण महिलाओं में आई जागरूकता है, जिसके चलते वे अपने को दोयम नहीं मानतीं और कैरियर के साथ-साथ पारिवारिक-सामाजिक परम्पराओं के क्षेत्र में भी बराबरी का हक चाहती हैं। अब वे स्वयं के प्रति सचेत होते हुए अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने का माद्दा रखती हैं।

फेमिनिस्ट आन्दोलनों ने नगरीय जीवन में पली-बढ़ी महिलाओं पर तो प्रभाव डाला पर इधर जो एक नई प्रवृत्ति उजागर हुई है, वह है ग्रामीण अंचलों की अशिक्षित महिलाओं द्वारा रूढ़िवादी वर्जनाओं को तोड़कर नये प्रतिमान स्थापित करना। श्मशान में जाकर आग देने से लेकर महिलाएं वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहिती का कार्य करती हैं और विवाह के साथ-साथ शांति यज्ञ, गृह प्रवेश, मुंडन, नामकरण और यज्ञोपवीत भी करा रही हैं। राजनीति, प्रशासन, समाज, उद्योग, व्यवसाय, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, फिल्म, संगीत, साहित्य, मीडिया, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, वकालत, कला-संस्कृति, शिक्षा, आई. टी., खेल-कूद, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। नारी की नाजुक शारीरिक संरचना के कारण यह माना जाता रहा है कि वे सुरक्षा जैसे कार्यों का निर्वहन नहीं कर सकतीं। पर बदलते वक्त के साथ यह मिथक टूटा है। महिलाएं आज पुलिस, सेना, और अर्द्धसैनिक बलों में बेहतरीन तैनाती पा रही हैं। अब जागरूक नारी समाज की अवहेलना करना आसान नहीं रहा। आज वह स्वयं को सामाजिक पटल पर दृढ़ता से स्थापित करने को व्याकुल है। शर्मायी-सकुचायी सी खड़ी महिला अब रुढ़िवादिता के बंधनों को तोड़कर अपने अस्तित्व का आभास कराना चाहती है। महिलाओं को सम्पत्ति में बेटे के बराबर हक देने हेतु हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम में संशोधन, घरेलू महिला हिंसा अधिनियम, सार्वजनिक जगहों पर यौन उत्पीड़न के विरूद्ध नियम एवं लैंगिक भेदभाव के विरूद्ध उठती आवाज नारी को मुखर कर रही है। दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, शराबखोरी, लिंग विभेद जैसी तमाम बुराईयों के विरुद्ध नारी आगे आ रही है। ये सभी घटनाएं अधिकारों से वंचित नारी की उद्धिग्नता को प्रतिबिंबित कर रही हैं।

वर्तमान समय में नारी अपनी सम्पूर्णता को पाने की राह पर निरंतर बढ़ रही है, ताकि समाज के नारी विषयक अधूरे ज्ञान को अपने आत्मविश्वास की लौ से प्रकाशित कर सके। नारी सृजन की प्रतीक है। हमारे यहाँ साहित्य और कला में नारी के कोमल रूप की कल्पना की गई है। कभी उसे कनक-कामिनी तो कभी अबला कहकर उसके रूपों को प्रकट किया गया है। पर आज की नारी इससे आगे है। वह न तो सिर्फ कनक-कामिनी है और न ही अबला, इससे परे वह दुष्टों की संहारिणी भी बनकर उभरी है। नारी की यौनिकता पर चोट करने वालों को नारियों ने करारा जवाब दिया है। वे नारी देह की बजाय उसके दिमाग पर जोर देती हैं। उनका मानना है कि दिमाग पर बात आते ही नारी पुरुष के समक्ष खड़ी दिखायी देती है, जो कि पुरुषों को बर्दाश्त नहीं। इसी कारण पुरुष नारी को सिर्फ देह तक सीमित रखकर उसे गुलाम बनाये रखना चाहता है। यहाँ पर अमृता प्रीतम की रचना 'दिल्ली की गलियाँ' याद आती है, जब कामिनी नासिर की पेंटिग देखने जाती है तो कहती है, 'तुमने वुमेन विद फ्लॉवर, वुमेन विद ब्यूटी या वुमेन विद मिरर को तो बड़ी खूबसूरती से बनाया पर वुमेन विद माइंड बनाने से क्यों रह गए।' निश्चिततः यह कथ्य पुरुष वर्ग की उस मानसिकता को दर्शाता है जो नारी को सिर्फ भावों का पुंज समझता है,

एक समग्र व्यक्तित्व नहीं। दरअसल नारी को 'मर्दवादी यौनिकता' से परे एक स्वतंत्र व समग्र व्यक्तित्व के रुप में देखने की जरुरत है। आज जरूरत है नारी जाति की उपलब्धियों को पितृसतात्मक समाज में स्वीकार किया जाना और उनकी उपलब्धियों की हर कीमत पर रक्षा करते हुए विस्तार।

नारी अस्मिता और विमर्श के नये आयामों, सवालों को नारी आन्दोलन और वैचारिक संघर्ष के केन्द्र में लाकर नारी अपनी नयी पहचान बना रही है। इसमें कोई शक नहीं कि नारी अस्मिता और सशक्तिकरण के संघर्ष को प्रभावी बनाने के लिए जरूरी है कि नारी अपना पक्ष खुलकर रखे, और एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में अपनी स्थिति को जाने, उसे बदले और नये विकल्पों का निर्माण करे। नारी सशक्तिकरण के माध्यम से ही सामाजिक तानेबाने को और अधिक मजबूत किया जा सकता है। यह इक्कीसवीं सदी के बदलते समाज का जटिल यथार्थ है, जिसमें कोई फंतासी भरा नायक या प्रतिनायक नहीं बल्कि साधारण सी दिखने वाली तमाम नायिकाएं हैं जो मिलजुलकर अपने समय का आख्यान रच रही हैं।

लेखिका परिचय :

आकांक्षा यादव, पोस्टमास्टर जनरल आवास, नदेसर, कैण्ट प्रधान डाकघर, वाराणसी-221002

मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

आकांक्षा यादव: कॉलेज में प्रवक्ता के बाद साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी प्रवृत्त। नारी विमर्श, बाल विमर्श और सामाजिक मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से लेखन। लेखन-विधा- कविता, लेख, लघुकथा एवं बाल कविताएँ। अब तक 3 पुस्तकें प्रकाशित- 'आधी आबादी के सरोकार' (2017), 'चाँद पर पानी' (बाल-गीत संग्रह-2012) एवं 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा' (संपादित, 2007)।

देश-विदेश की प्रायः अधिकतर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट पर वेब पत्रिकाओं व ब्लॉग पर रचनाओं का निरंतर प्रकाशन। व्यक्तिगत रूप से 'शब्द-शिखर' और युगल रूप में 'बाल-दुनिया', 'सप्तरंगी प्रेम' व 'उत्सव के रंग' ब्लॉग का संचालन। 60 से अधिक प्रतिष्ठित पुस्तकों/संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी से समय-समय पर रचनाएँ, वार्ता इत्यादि का प्रसारण। व्यक्तित्व-कृतित्व पर डॉ. राष्ट्रबंधु द्वारा सम्पादित 'बाल साहित्य समीक्षा' (नवम्बर 2009, कानपुर) का विशेषांक जारी।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा ''अवध सम्मान'', परिकल्पना समूह द्वारा ''दशक के श्रेष्ठ हिन्दी ब्लॉगर दम्पति'' सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगर सम्मेलन, काठमांडू में ''परिकल्पना ब्लाग विभूषण'' सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, श्री लंका में ''परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान'', विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा डॉक्टरेट (विद्यावाचस्पति) की मानद उपाधि, भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा '' डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय सम्मान'', ''वीरांगना सावित्रीबाई फुले फेलोशिप सम्मान'' व ''भगवान बुद्ध राष्ट्रीय फेलोशिप अवार्ड'', राष्ट्रीय राजभाषा पीठ इलाहाबाद द्वारा ''भारती ज्योति'', साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान द्वारा ''हिंदी भाषा भूषण'', ''एस.एम.एस.'' कविता पर प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कार, निराला स्मृति संस्थान, रायबरेली द्वारा ''मनोहरा देवी सम्मान'', साहित्य भूषण सम्मान, भाषा भारती रत्न, राष्ट्रीय भाषा रत्न सम्मान, साहित्य गौरव सहित विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और सतत् साहित्य सृजनशीलता हेतु 50 से ज्यादा सम्मान और मानद उपाधियाँ प्राप्त। जर्मनी के बॉन शहर में ग्लोबल मीडिया फोरम (2015) के दौरान 'पीपुल्स चॉइस अवॉर्ड' श्रेणी में आकांक्षा यादव के ब्लॉग 'शब्द-शिखर' को हिंदी के सबसे लोकप्रिय ब्लॉग के रूप में भी सम्मानित किया जा चुका है।

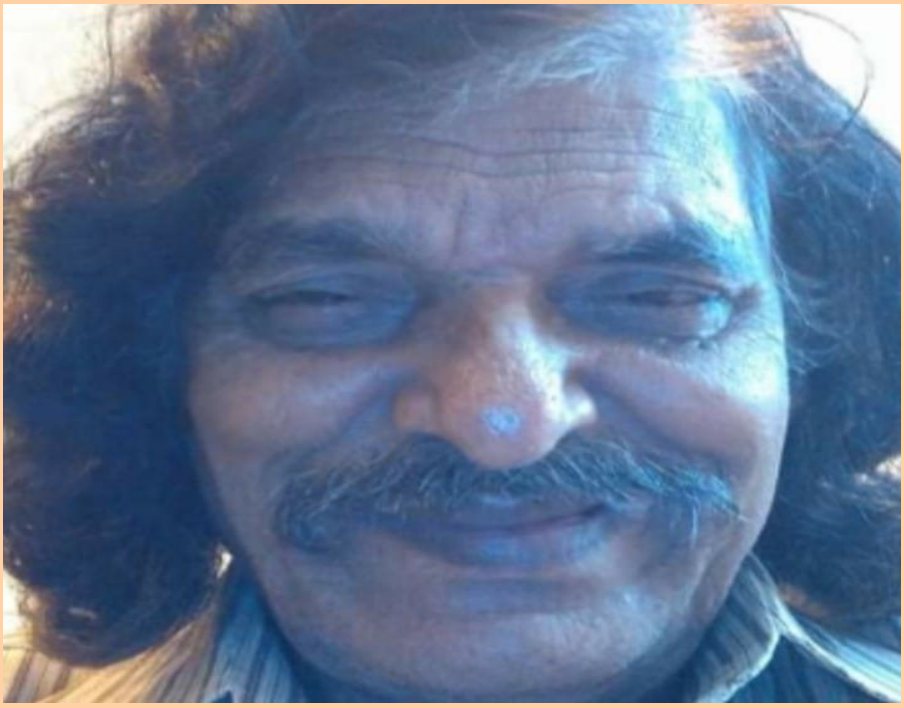

सुरेन्द्र सुकुमार का नियमित

चिंता का चिंतन

आत्म

"आत्म" एक ऐसा शब्द है जिसे कई तरह से कई-कई बार प्रयोग किया जाता है।

यों तो "आत्म" शब्द की उत्पत्ति "आत्मा" से हुई है। "आत्मा" एक ऐसी चीज़ है जिसे आजतक किसी ने भी नहीं देखा है।

श्रीमद्भागवतगीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि "नैनम छिंदति शात्राणि नैनम दहिक पावकः यानिकि इस "आत्मा" को न शस्त्र काट सकते हैं और न ही अग्नि जला सकती है न वायु उड़ा सकती है

"आत्म" दाह, "आत्मा" को जलाया ही नहीं जा सकता है। इन राजनीतिज्ञों ने इस "आत्मा" को मार दिया है अब ये बिना "आत्मा" के ही जी रहे हैं

और न जल डुबा सकता है "आत्मा" निर्गुण निराकार होती है। इस "आत्मा" शब्द से कई शब्द निकले हैं पर वो ग़लत इस्तेमाल किए गए हैं। जैसे कि "आत्म" समर्पण, अब "आत्म" समर्पण जैसी कोई स्थिति नहीं होती है "आत्मा" का समर्पण तो हो है नहीं सकता है। शरीर का समर्पण हो सकता है ऐसे ही "आत्म" हत्या, "आत्मा" की हत्या तो हो नहीं सकती है शरीर की हत्या हो सकती है "आत्म" दाह, "आत्मा" को जलाया ही नहीं जा सकता है। इन राजनीतिज्ञों ने इस "आत्मा" को मार दिया है अब ये बिना "आत्मा" के ही जी रहे हैं "आत्मा" मरे हुए भी ये लोग चुनाव हार जाने पर "आत्म" मंथन, करते हैं। अब "आत्म" कोई समुंद्र तो है नहीं जो इसका मंथन हो राजनीतिज्ञों के "आत्म" मंथन, से ये निष्कर्ष निकलता है कि कुछ कार्यकर्ताओं को टिकट न मिलने के कारण उनकी "आत्मा" मर जाती है और वो बागी हो जाते हैं इसके कारण ही चुनाव हार गए हैं। एक और शब्द है "आत्म" निरीक्षण, अब भला कौन इन्हें समझाए कि "आत्मा" का निरीक्षण तो हो ही नहीं सकता है पर साहब किया जा रहा है।

एक और शब्द है "आत्म" श्लाघा, अब ये जो सम्भव ही नहीं है वो बोला जा रहा है। अब "आत्म" प्रसंशा, "आत्मा" तो अपने आप में प्रसंशनीय है।

"आत्मा" की प्रसंशा भले कैसे हो सकती है एक और शब्द है "आत्म" सम्मान, यों तो हर व्यक्ति "आत्म" सम्मान, चाहता है पर वो होता "आत्म" हीन, ही है। कुछ लोग यह भी अक्सर कहते हैं कि अमुक व्यक्ति मेरा बहुत ही "आत्म" ईय, मित्र है यानिकि "आत्मीय" पर ऐसा होता नहीं है होता यह है कि जबतक एकदूसरे से स्वार्थ सिद्ध होते रहते हैं तबतक "आत्म" ईय, बने रहते हैं एक और शब्द का प्रयोग किया जाता है "आत्म" शुद्धि, "आत्मा" शुद्ध ही होती हैं उसको कैसे शुद्ध किया जा सकता है अब आइए "आत्म" बंधन, की भी बात कर लेते हैं "आत्मा" सदा ही मुक्त होती हैं "आत्मा" को कौन बंधन में बांध सकता है यों तो लोग " आत्म "सम्मान, की बहुत बात करते हैं पर होते "आत्म" निंदित, ही एक और शब्द है "आत्म" मुक्ति यह प्रयोग भी गलत है "आत्मा" से मुक्ति पाने का मतलब मृत्यु का हो जाना एक और महत्वपूर्ण शब्द है "आत्म" बोध, अब जिसको "आत्म" बोध, हो जाए वो तो समझ लो भगवान बुद्ध हो गया। श्रीमद्भागवत गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि करोड़ों-करोड़ों में से किसी एक को अध्यात्म की ओर रुचि जगती है और ऐसे करोड़ों में से किसी एक को "आत्म" बोध होता है।

चलिए मित्रो अब आप लोग भी "आत्म" बोध में लग जाएं।

सौगात

शीतल मन्द बयार!शांत वातावरण में कोयल की कूक!

तभी जोरों के कोलाहल ने शांति भंग कर दी। गाँव आश्चर्य से शहर से अपनी ओर आती पगडंडी को देखने लगा। ओह! आज सूरज कहाँ से निकला है? धूल उड़ाती फर्राटे से दौड़ती बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ! ये सूटेड-बूटेट काले चश्मे लगाए शहरी ! गाँव के रास्ते पर!

"वाह क्या मस्त हवा है। ए.सी. की हवा में वह बात कहाँ!" काला चश्मा लगाए बाल कटी महिला ने गहरी सांस, भरते हुए कहा।

"खेत, आम की बगिया, कुआँ....पिकनिक का मज़ा तो यहीं है।" सिर पर टोपी लगाए सफेद पतलून वाले साहब ने बड़ी दरियादिली से कहा।

गाँव चुपचाप सुन रहा था और सुनते-सुनते खुश भी हो रहा था। चलो देर से ही सही इन्हें मेरी याद तो आई।

खुले मैदान में दौड़ते-भागते ये सभी मानो फेफड़ों में जी भर के ताज़ी हवा भर लेना चाह रहे हों।पेड़ों पर लगे झूलों पर पींगे भरते सारे के सारे बच्चे बन गए हैं और ये महिलाएँ बैलगाड़ी पर सवार हो अपनी लक्ज़री कार भूल गए हैं।

खेत में एक कोने में नीम की छाँह में उपले पर सुनहरी सौंधी-सौंधी बाटियाँ सिक गई, चूल्हे बाल कर चक्की दली देसी दाल पक गई।दाल में तड़का क्या लगा कि कबरी के घी की खुशबू चारों ओर फैल गई। ताज़ी हरी प्याज चार फाँकों में कट थाली में सज गई। शहरियों ने जी भर खाया।

"क्या शहर में इन्हें....

गाँव मुस्कुराते हुए सोच

रहा था पर वह अपने लोगों को, अपने साथ देख आनंद में डूबा हुआ था।सही तो है अपनी जड़ों से कोई अलग थोड़ी रह पाता है!

सूरज ढल रहा था। गोधूलि बेला में गो रज से वातावरण सुवासित हो गया।

"ओह माय गॉड! इट्स सो डस्टी (हे भगवान यह कितना धूल युक्त है)।"

काले चश्मे वाली ने नाक-भौंह सिकोड़ कर कहा।

"दैट्स वाय आय हेट विलेजेस (इसीलिए मैं गाँवों से नफ़रत करती हूँ)।" सफेद पतलून वाले ने अजीब सा मुँह बनाते हुए कहा।

"लैट्स गो बैक नाऊ (हमें अब वापस जाना चाहिए)।" सभी शहरियों ने एक साथ कहा।

हॉर्न बजाती गाड़ियों का काफिला धूल का गुबार उड़ाता फिर शहर की ओर चल दिया। पीछे छोड़ गए मेरे लिए प्लास्टिक की बोतलें, चिप्स के खाली पैकेट्स की सौगात!

यशोधरा भटनागर

एक स्त्री की काव्य यात्रा

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) पर विशेष

एक स्त्री की काव्य यात्रा हमेशा से ही कठिन और उपेक्षित रही है। जब कभी कोई स्त्री प्रेम लिखती है तब हमेशा एक सवाल खडा़ हो जाता है। स्त्री ही सवालों के घेरे में क्यूं ? संदेह और सवाल सीधे स्त्री के चरित्र पर सवालिया निशान क्यों अंकित कर जाता है और यही प्रेम पुरुष को प्रशंसा व सम्मान का सर्वोच्च स्थान दे जाता है।

प्रेम गीतों मे अक्सर राधा, मीरा, शकुंतला , मेनका, उर्वशी के अंग प्रत्यंगों का सरस वर्णन व संयोग वियोग की कातर पुकार भी समाहित होती है और कभी कभी तो निर्लज्जता की परिधि तोड़ती हुई होती है। पुरूष की निर्लज्जता भी काव्य कला की उत्कृष्ट विधा मानी जाती है। लेकिन कभी भी पुरुष के चरित्र पर उँगली नहीं उठती और न ही तीखे कटाक्ष ही सुननें को मिलते हैं।

प्रेम शास्वत सत्य है, कभी न कभी किसी न किसी रूप में प्राणी मात्र को स्पर्श तो करती ही है। दायरों में सिमटी संस्कारों से सुसज्जित नारी स्वयं प्रेम का प्रतीक है जिसे स्वयं प्रेम प्रगट करनें का कोई अधिकार नहीं है।

प्रेम प्रगट करते ही लांछनाओं की अग्नि में झुलस कर अपना मार्ग निकालना पड़ता है। जिस प्रेम को लिखने के लिए जिस नारी को बिंब बनाया जाता है, जिसके अंग प्रत्यंग की ऊंचाई गहराई इंच सेंटीमीटर से मापी जाती है उसी स्त्री को प्रेम के शब्द बोलते हुए समाज

सहन नहीं कर सकता।

सृष्टि का प्रारंभ ही प्रेम से उत्पन्न हुआ था।जब धर्म नहीं थे तब भी प्रेम था , सरहदें नहीं थीं तब भी प्रेम था, ऊँच नीच की भावनाओं के पहले प्रेम था। वर्ग वर्ण व श्रेणी नहीं थी तब भी प्रेम था।

प्रेम की अभिव्यक्ति का सम्मान स्त्री पुरुष दोनों में समभाव था। लोग बदले समय बदला और धारणाएं विकृत रूप ले असामान्य हो उठीं।स्त्री से प्रेम करनें का अधिकार वैसे ही छीन लिया गया जैसे पुष्प से उसकी सुगंध छीन ली गयी हो।मैंने अनुभव किया है, जब स्त्री कभी प्रेम गीत या कविता, गज़ल लिखती है तो लोग न जानें क्यूं सीधे उसे अत्यंत चंचल वाचाल व न जानें क्या क्या की कटेगरी में खडा़ कर उसके चरित्र को अपनी कल्पनाओं में ढाल काल्पनिकता की कहानियों में गढ़नें लगते हैं।और स्त्री की कविताओं की स्त्री विमर्श और रोनें धोनें वाली संकुचित मन:दशा से ग्रसित मान लिया जाता है। तरस आता है ऐसे समाज पर जो खुद तो जो चाहता है वही स्त्री के मुख से बरदाश्त करनें

की क्षमता नहीं रखता।

मीरा और राधा नें भी तो प्रेम के बदले में पीडा़ और प्रताड़ना ही पाई थी लेकिन प्रेम लिखा और प्रेम ही गाया, प्रेम ही जिया।

आज उनका नाम बडी़ श्रद्धा से लिया जाता है लेकिन मजाल है कि कोई स्त्री मीरा व राधा बन सके। यहाँ तक कि स्त्री यदि हँसी ठिठोली भी करे तो उसे अच्छी दृष्टि से तो नहीं देखा जाता है। आज कवियित्रियाँ प्रेम लिखनें के पहले और बाद में भी वो सुख व संतोष नहीं प्राप्त करतीं जो उन्हें मिलना चाहिए या जिसकी धिकारिणी हैं वो।

स्त्रियां प्रेम लिखनें व प्रगट करनें के बाद एक अजीब मनोदशा की गिरफ्त में आकर स्वयं को अपराधिणी समझ निराशा के भंवर में गिर गुम सुम या मानसिक अन्तर द्वन्द से जूझती अपने को अपराधिनी माननें लगती हैं।

यदि कोई स्त्री प्रेम के किसी पहलू को चुनती है और उस विषय पर लिखती है तो आवश्यक नहीं कि उसके जीवन का संबन्ध उस विषय से है, समाज में न जानें कितनी समस्याएं नित्य सर उठाए विचरण कर रही हैं उसमें से एक विषय प्रेम भी है।

प्रेम सिर्फ अभिसार नहीं , वात्सल्य भी है करुणा भी है और मैत्री व सामंजस्य भी है।

उलाहना और उत्साह भी है। संचार और सृष्टि भी है , प्रेम ही सृष्टि का सृजन करता है।आज स्त्री सारे मिथकों को तोड़ कर बहुत आगे आ चुकी है।

उसमें साहस भी है , धैर्य भी और नकारात्मक विचारों के प्रति उपेक्षा भी। रास्ते कठिन हैं लेकिन हौसलों की कमी नहीं है। घर की ड्योढ़ी से साहित्य के प्रगाढ़ अंग काव्य यात्रा में स्त्री नें अपना विशिष्ट स्थान बनाया है और निरंतर गतिमान है।

अब नजरिया अपना अपना .....जिन देखा तिन पाइयां .....।

किसी की सिम्पैथी , किसी की दया या फिर सहारे की मुहताज नहीं है स्त्री स्वयं में परिपूर्ण उदार और क्षमाशील है स्त्री।

सर्वप्रथम प्रेम क्या है इसे समझने की आवश्यकता है .....पहले समझो फिर बोलो, जब प्रेम की परिभाषा ही नहीं समझ सकते तो फिर मत बोलो।

मिन्नी मिश्रा

ठेला वाला

"कैलास पर्वत से एक त्रिकालदर्शी संत जनता की मंशा सुनने कल यहाँ मंदिर परिसर में पधार रहे हैं।" कस्बे के प्रसिद्ध शिव मंदिर के निकट यह एनाउंसमेंट सुनने के बाद एक ठेले वाले ने रात में झपकी तक नहीं ली। वह पुरानी गमछी लपेटे और फटे बनियान पहने अहले सवेरे से ही लाइन में आकर लग गया। उस समय वहाँ कोई नहीं पहुँचा था। लेकिन देखते -देखते लंबी कतार लग गयी। पीछे खड़े लोग उसे धक्के दे रहे थे। कोई केहुनी से मारता, तो कोई जूते से उसके नंगे पैरों को कुचल देता ! फिर भी संत के दर्शन के लिए वह पैर जमाये एक स्थान पर खड़ा था।

"अरे! तू यहाँ क्यों खड़ा हो गया ! चल, हट ! पीछे जाकर लाइन में लग जा,गंवार कहीं का !" ठेले वाले के ठीक पीछे खड़े सूटेड-बूटेड आदमी ने उसे फटकारते हुए कहा।

"नहीं ! मैं पीछे नहीं जाऊँगा। आज ,यहाँ त्रिकालदर्शी संत आ रहे हैं , मुझे अपनी मंशा सुनानी है। उन्हीं के दर्शन के खातिर मैं सवेरे से लाइन में लगा हूँ।" ठेले वाले ने दृढ़ता से कहा। तभी जटाजूट धारी, ललाट पर तिलक लगाए, कानों में कुण्डल और हाथ में त्रिशूल लिए संत पधारे। परिसर में ऊँ नमः शिवाय की ध्वनि गूँज उठी। लोगों का अभिनन्दन स्वीकार करके संत ने पूछना प्रारम्भ किया। पंक्ति में सबसे आगे खड़े ठेले वाले से संत ने पूछा, "वत्स, बताओ, तुम्हारी क्या मंशा है ?"

"हे प्रभो! मैं मानव जीवन से मुक्त होना चाहता हूं , अगले जन्म भी मुझे मानव जीवन न मिले ! क्योंकि मैंने जीवन में बहुत अपमान और कष्ट झेले हैं ! पिता ने मुझे अधिक नहीं पढ़ाया। बचपन से ही वो मुझे अपने साथ काम पर ले जाते थे! बड़ा होकर परिवार के खातिर मैं ठेला चलाने लगा ! ठेला खींचते -खींचते मेरे अस्थि पंजर एक हो गये और हाथों में गहरे छाले पड़ गये हैं !

बावजूद इसके, धनी लोगों ने कभी भी मुझे सम्मान की नजरों से नहीं देखा ! एक तो झिकझीक करके पैसे देते हैं , ऊपर से धौंस भी दिखाते ,जैसे मैं उनसे भीख मांग रहा हूँ ! किस्मत का मारा हूँ , पत्नी मुझे छोड़ कर टैक्सी ड्राइवर के संग भाग गयी! माँ -बाप भी अब नहीं रहे! इसलिए मैं जीना नहीं चाहता प्रभु !" ऐसा कहते हुए उसने डबडबाई नेत्रों से संत के चरण पकड़ लिये।

उपस्थित भीड़ ठेले वाले की बातें सुनकर आपस में फुसफुसाया , " देख इसे , निर्धन होकर भी संत को धनवान बनने की अपनी मंशा नहीं सुनायी ... बड़ा पागल लगता है !"

संत ने उस ठेले वाले को उठा कर गले से लगाया , और आगे बढ़कर पंक्तिबद्ध लोगों से पूछने में मशगूल हो गए।जवाब में ... " कोई कहता , मैं डाक्टर/ इन्जीनियर बनना चाहता हूँ। कोई बहुत बड़ा व्यापारी ,तो कोई लाइलाज बीमारी एवं मुकदमे से निजात पाने की आरजू करने लगा ।"

संत सभी की फरियाद सुन लेने के बाद पुनः ठेले वाले के पास पहुँचकर उससे बोले , "चलो मेरे साथ, मैं तुम्हें देवाधिदेव महादेव के निवास स्थल 'कैलास' पर ले जाऊँगा। वो तुम्हें अपना नया आदेशपाल बनाएँगे। अब मेरे निर्वाण का समय बहुत निकट आ गया है। इसलिए महादेव ने मुझे एक धर्मनिष्ठ आदेशपाल पृथ्वी से ढूंढ कर लाने का आदेश दिया है। सभी तीर्थों से घूम कर मैं यहाँ आया हूँ। धार्मिक स्थल के रूप में इस कस्बे का नाम जगत विख्यात है।तुम्हारे जैसा कर्तव्यनिष्ठ , निर्लोभ आदमी मुझे दूसरा और कोई कहीं नहीं मिला। चलो शीघ्र,अब चलते हैं।" ठेला वाला भी संत के पीछे-पीछे चल पड़ा।जिसे देख मंदिर परिसर के लोगों की आँखें फटी की फटी रह गईं। सुटेड- बुटेड व्यक्ति ठेले वाले को आँखें फाड़ कर देखने लगा। जिसे वो दो कौड़ी का समझ रहा था , उसे संत अपने साथ ले जा रहे थे। उस गरीब ठेले वाले का मायूस चेहरा देदीप्यमान सूर्य की भांति चमक रहा था। मानो उसे मानव जीवन से मुक्ति मिल गयी हो।

उड़त गुलाल अबीर रसीले, गोपाल भये लाल, हरे, पीले...

पद्मा अग्रवाल

मथुरा – कृष्ण का पावन जन्म स्थान कृष्ण सखी कालिन्दी के घाटों पर बहती मलयज हवा के सुगन्धित हवा के सुगन्धित झोंके,विश्रामघाट पर विहार करती नौकाओं के मनोहारी दृश्य, नंद गांव, बरसाना, गोकुल, दाऊ जी और वृंदावन हर स्थान पर राधा कृष्ण के हजारों नेह कथानक, कण कण मे भक्ति का मनोहारी माधुर्य, बृज की सीमा में आते ही इसी भक्ति भावना का कंठ कंठ से रस वर्षण...गोप गोपियों के मुरली बजैया और राधा लाडिली के मीत कृष्ण कन्हाई कुंज सरोवर के रास रचैया गोविन्द बृजरजमें आनं कद ही आनंद.

कृष्ण जन्मभूमि में भगवान कृष्ण की मनोहारी मूर्ति, राधा कृष्ण की युगल मूर्तियां, फूल, रंग बिरंगी झिलमिलाती रोशनी, अगर गंध से सुवसित, सज्जित वातावरण,भक्तों की भारी भीड़ –गुलाल की बुरकियां उड़ रहीं हैं .ढोलक मंजीरों पर नृत्य चल रहा है.रसेया अलापे जा रहे हैं--

'जमुना किनारे मेरा गांव, सांवरे आ जइयो राधा रंगीली मेरौ नाम, बंसी बजाय जइयो देखत रहूंगी तेरी बाट, जल्दी आय जइयो झांकी करेंगी बृज बाल, हंस मुसुकाय जइयो'

वातावरण रस रंग, गुलाल और फूलों की गंध से महमहा रहा है.तरह तरह के वाद्यों पर फागुनी सरगमें तैर रही थीं. लोकगीतों की गहमागहमी मची हुई है. रंग गुलाल, टेसू केसर की पिचकारियों के दौर के बाद शाम को फूल डोल.दूर दूर से गायन मंडलियां अपने साजो सामान के साथ आई हैं. नृत्य मंडलियां भी अपने वाद्यो और साजिन्दों के साथ आई हैं.मंच दुल्हन की तरह सजा हुआ है.रंग बिरंगे फूलों, कलियों लताओं से आच्छादित स्तंभ चंदोवे, फूलों की सुंदर झालरों से सज्जित मंच अत्यंत मनोहारी प्रतीत हो रहा है. हो भी क्यों न कृष्ण राधा की फूलों की होली है.

आज भीड़ इतनी है जैसे पूरी मथुरा नगरी उठ कर यहीं आ गई हो.अपनी अपनी टोलियों वाद्यों के साथ सब व्यस्त हो गये हैं. मृदंग मंजीरे,ढोलक, हारमोनियम और तबले पर रसियों का रस झर रहा है. बृज का होलिकोत्सव अपने यौवन पर है. इस परंपरागत फाग की गूंज से मधुबन बना हुआ है. उछाह उत्साह,ओठों, आंखों से,कंठों से उमड़ा पड़ रहा है. सभी चमचमाती रंग बिरंगी पोशाकों से सजे हुए हैं,धोती कुर्ता,पटका और पगड़ी साफा कसे रसियों के नशीले तेवर. घाघरा, लंहगा, ओढनी, चोली, कंगूरेदार जंपर,जेवर बाजूबंद कसे, चूड़ी से भरे हाथों, घूंघटों में हंसती लजाती बृज वनितायें.नगाड़ों की आवाज के साथ संगीत के स्वर गूंजने लगते हैं :

विमल चंद्र की चांदनी, निर्मल जमुना नीर, मोर मुकुट कुण्डल की झांकी

टेर रही कालिन्दी तट बंसी, रास रचे गिरधारी,चलो री आली, रितु मतवाली.....

रासलीला आरंभ हो गई है. चमकीली कीमती पोशाकों,आभूषणों से सज्जित श्रंगारित राधा

रानी और कृष्ण मुरारी.....रोशनी में कलात्मक मुकुट झिलमिला रहें हैं.रास नृत्य हो रहा है.फूलों की कोमल पंखुड़ियों, सुगंधित पुष्पों की वर्षा हो रही है.ऐसा प्रतीत हो रहा हैकि मानों फूलों की पंखुरियों का ही फर्श बना हो. अलग अलग पुष्पों की अलग अलग सुगंध.....जैसे इत्र का दरिया बह रहा है .लोगों का कहना है कि तीन चार क्विन्टल फूलों, गुलाल और रंगों की मनोहारी होली होती है. बरस फुलवा मकरंद बरस रहे हैं. रसिये शहद घोल रहे हैं. बृज की ठेठ सुरीली तान.....कान्हा की टेर सुनकर...:

"चली कोई उल्टी पटिया पर, चली कोई एक दृग अंजन डार

कान में नथनी झलकेदार, नाक में करनफूल सिर हार

उल्टे सीधे अंग में गहने लीने डार, उल्टे पहरे कपड़ा लत्ता

उल्टे कर सिंगार, सुन मुरली गोपी मन हारी

प्रेम मगन वश भई, बदन को होश गंवायो है

मुकुट वाले तेरो ध्यान लगायो है"

राजती धोती साटन का हरा कुर्ता सिर पर लाल साफा

उड़त गुलाल अबीर रसीले, गोपाल भये लाल, हरे, पीले,'

'ऐसी होरी बिरज मनाई, तन मन भई समाई'

रसियों की प्रसिद्ध टोलियां एक से एक बढकर फाग की तानें छेड़ रहे.....

'मुरली बजाई कृष्ण कन्हाई ,राधा के मन भाई

कुंज गलिन से दौरी राधा पंहुची जमुना तट पे

जमुना केतट पे मारी रे नजरिया,ऐसी सांवरिया ने.....

गगरी छीनी बहिया मरोरी. फिर मैं ऐसी सरमाई'

राधा कृष्ण की युगल जोड़ी की बलिहारी है.नृत्य आरती और संगीत से पूजा हो रही है.कलात्मक बंदनवार के नीचे राधा लली और बृज के कुंवर कन्हाई का रास रसवंती शुरू हो गया है.....मंजीरे मृदंग पर मीठी बृज बोली का पद.....

'कजरा बह गयौ जमना जल में ,कि बिछुआ गिरि गयौ जमना जल में

कैसे होरी खेलूं री मैं या सांवरियां के संग,भर पिचकारी ऐसी मारी कंचुकी ह्वै गई तंग.....

नैनन सुरमा,दांतन मिस्सी ,रंग होत बदरंग'

मसक गुलाल मलै मुख ऊपर,किसुन के संग

'तबला बाजा सारंगी बाजी और बाजै मिरदंग.....

कान्हा जी की बांसुरी बाजी राधा जी के संग.....

गोपियां चुहलबाजी कर कृष्ण को घेर लेती हैं.....

पकरौ री पकरौ या स्याम सुन्दर कूं.....

अपने घर भाज न जाई,छीन लई कान्हा की मुरली.....'

ग्वाल बालों की मंडली उमंग में आकर जय जयकार के फूलों की वर्षा करने लगते हैं.

'होरी है भई होरी है,राधा रानी हमारी पे रंग बरसे, किसन पियारे का मन हरसै.....'

सारंगी, बाजा, नगाड़ा, ढोल, बांसुरी लेकर पूरुषों की टोली गुलाल उड़ाने लगती है

रेशमी ओढनी का लम्बा घूंघट, हाथ भर हरी लाल चूड़ियां, गोटा की किनारी पोत, फूल

जड़ा लंहगा, कामदार चोली ओढना पहन झूमझूम कर नृत्य कर उठती हैं, बृज गूजरी. बड़ा ही चमत्कारपूर्ण पद संचालन है. सिर पर लोटा, उस पर कलसाऔर सबसे ऊपर कटोरा. ठुमक ठुमक थिरकनों के साथ घुमेरे लग रहे हैं. रसिये गाते बजाते मंजीरे तान छेड़ते हिलोरे ले रहे हैं. झम झमा झम पायल घुंघरू, तगड़ी कंगन सब तरंगित....

मोरा नाच रहौ री बृज कुंजन में, दूर दूर से दुनिया आवै हरि चरनन में, नाचै गावै...गोरी हंसै घूंघट अंजन में

रंग़ बिरंगे लंहगे और गोटा दार अंगिया पहने, लंबे घूंघट से अपना सुंदर चेहरे को ढक कर गांव की सुंदरियों का रसिया गायन

'आज बिरज में होरी रे रसिया
होली रे रसिया बरजोरी रे रसिया
कहूँ बहुत कहूँ थोरी रे रसिया
आज बिरज में रसिया

नटखट कृष्ण होली में अपनी ही चलाते हैं . गोपियों का रास्ता रोके खड़े होना उनकी फितरत है, तभी जी भऱ कर फाग खेलने की उन जैसी उच्छृंखलता कहीं देखने को नहीं मिलती. उनकी करामाती हरकतों से गोपियाँ समर्पित हो जाती हैं. और अपनी घूँघट काढने की शर्म हया को बरकरार रखते हुए एक नजर मनमोहन की चितवन को देखने की हसरत जतलाते हुए कहती हैं सच मैं अपने भाई की सौगंध खाकर कहती हूँ कि मैं तुम्हें देखने से रही हूँ .

भावै तुम्हें सो करौ सोहि लालन
पांव पड़ौजनि घूँघट टारौ
वीर की सौं तुम्हें देखि है कैसे
अबीर तो आँखि बचाय के डारौ

जब कभी होली खेलते हुये कान्हा कहीं छिप जाते हैं तब गोपियाँ व्याकुल होकर उन्हें ढूंढतीं हैं. उनके लिये कृष्ण अनमोल रत्न की तरह हैं, जो लाखों में एक ही होता है . गोपियाँ कृष्ण के मन ही नहीं अपितु उने सभी अंगों की सहज संवेदनाओं से परिचित हैं तभी उनके अंगों के स्पर्श के अनुभव का चित्रण करते हुए कहा है

अपने प्रभु को ढूंढ लियो
जैसे लाल अमोलक लाखन में
प्रभु के अंग की नरमी है जिती के लाल लोचन
लालन के मुख लाल ही पीरा
नरमी नहिं ऐसी माखन में

होली खेलते समय कृष्ण लाल रंग मय हो जाते हैंस जागते हुये उनकी आँखें भी लाल हो जाती हैं. नंदलाल लाल रंग से रंगे हैं यहाँ तक कि पीत वस्त्र पीताम्बर सहित मुकुट भी लाल हो गया है ....

लाल ही लाल के लाल ही लोचन
लालन के मुख लाल ही पीरा
लाल हुई कटि काछनी लाल को
लाल के शीश पै लस्त ही चीरा

गोपियाँ कृष्ण को पकड़ कर सारी पहना देती हैं, उन्हें झुमकी, पाँव में महावर आँखो में अंजन लगा कर गोपिका बना देती हैं ...

छीन पीतांबर कारिया
पहनाई कसूरमर सुंदर सारी
आँखन काजर पाँव महावर
साँवरो नैनन खात हहारी

कृष्ण इस रूप में ग्वाल सखाओं के साथ हँसी करने में माहिर हैं.

ऐसो चटक रंग डार् यो श्याम ने
मेरी चूनर में लग गयो दाग री'

इन सुंदर स्वर लहरियों के मध्य जब लट्ठमार होली शुरू हुई तो महिलायें अपनी लाठियों से पुरुषों की पिटाई करने का प्रयास कर रहीं थीं और पुरुष अपनी ढाल पर अपना बचाव कर रहे थे।

लगभग डेढ सौ फीट की ऊंचाई से ब्लोवर से रंग बिरंगे गुलाल की वर्षा ने संपूर्ण वातावरण को इंद्रधनुषी बना दिया और सभी भक्त गुलाल के रंग कर अपने को धन्य अनुभव कर रहे थे। दर्शक झूम रहे थे ,नृत्य कर रहे थे।

घटा नृत्य हो,चरखा नृत्य अथवा मयूर नृत्य सभी विभिन्न होलियों की झांकी प्रस्तुत। कर रहे थे।

होली खेलौ तो आ जइयौ बरसाने रसिया गायन के मध्य जब दो गोपियों ने चरकुला नृत्य प्रस्तुत किया तो वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।सूर्यास्त होते होते लट्ठमार जब समाप्त हुई तो भी सभी दर्शकों के चेहरे पर अतृप्त भाव स्पष्ट दिखाई पड़ रहा था।

प्रेम और उत्सव की भावना से सराबोर चरम आनंद की भाव भंगिमा को आँखों में अंग प्रत्यंग में व्यक्त किये पीढी दर पीढी यह पर्व अनंत काल से चला आ रहा है . कृष्ण, बृज को मन में बसाये हुये होली की निश्छल श्रद्धा को जीवंत रखने हेतु सभी को प्रेरित करता हुआ, आनंद की तरंगें फैलाताआज भी जीवन में रंग घोल कर उल्लसित कर देता है.

ये था मथुरा की होली का अद्भुत वर्णन,जो मेरी आंखों में बसं गया है. आज वर्षों के बाद भी मेरी स्मृति मे गुंजायमान होते रहते हैं. मथुरा नगरी के कण कण में कृष्ण राधा का वास है.राधा कृष्ण राधा कृष्ण का स्वर समस्त जन मानस के मन में गूंजता रहता है.

भारतीय संस्कृति में होली के विभिन्न रंग

कृष्ण कुमार यादव

होली भारतीय समाज का एक प्रमुख त्यौहार है, जिसका लोग बेसब्री के साथ इंतजार करते हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में होली मनाई जाती है। होली के रंग हमें प्रकृति से जोड़ते हैं। वसंत की फगुनाई के बीच घनी भूरी टहनियों पर हरे पत्तों के बीच चटक नांरगी रंग के टेसू के फूल इस उल्लास को और भी बढ़ा देते हैं। आखिर होली के रंग बनाने की शुरुआत तो इन्हीं टेसू के फूलों से ही हुई है। यह होली के समय कहाँ से और कैसे आते हैं, कोई नहीं जानता है? पर हर होली के समय आकर ये एक खुशी जरुर दे जाते हैं। जीवन के उत्सवों की भाँति इनका आना-जाना होली के रंग को और भी चटक बना जाता है। रबी की फसल की कटाई के बाद वसन्त पर्व में मादकता के अनुभवों के बीच मनाया जाने वाला होली पर्व उत्साह और उल्लास का परिचायक है। अबीर-गुलाल व रंगों के बीच भांग की मस्ती में फगुआ गाते इस दिन क्या बूढे व क्या बच्चे, सब एक ही रंग में रंगे नजर आते हैं। भारतीय शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, लोक तथा फ़िल्मी संगीत की परम्पराओं में होली का विशेष महत्व है।

होली की परम्परा काफी पुरानी है। प्राचीन चित्रों, भित्तिचित्रों और मंदिरों की दीवारों पर इस उत्सव के चित्र मिलते हैं। इसका वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में भी मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गार्ह्य-सूत्र। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है। विंध्य क्षेत्र के रामगढ़ स्थान पर स्थित ईसा से 300 वर्ष पुराने एक अभिलेख में भी इसका उल्लेख किया गया है। संस्कृत साहित्य में वसन्त ऋतु और वसन्तोत्सव अनेक कवियों के प्रिय विषय रहे हैं। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य में दर्शित कृष्ण की लीलाओं में भी होली का विस्तृत वर्णन मिलता है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों में होली मनाये जाने के वृहद् उल्लेख मिलते हैं। सुप्रसिद्ध पर्यटक अलबरूनी ने भी अपने ऐतिहासिक यात्रा संस्मरण में होलिकोत्सव का वर्णन किया है।

मुगल काल में भी होली खूब मनाई जाती थी। अकबर का जोधाबाई के साथ तथा जहाँगीर का नूरजहाँ के साथ होली खेलने का वर्णन खूब मिलता है। शाहजहाँ के ज़माने में होली को ईद-ए-गुलाबी या आब-ए-पाशी (रंगों की बौछार) कहा जाता था।

होली मनाने के पीछे भी कई कथाओं का जिक्र आता है। नारद पुराण के अनुसार दैत्य राज हिरणकश्यप को यह घमंड था कि उससे सर्वश्रेष्ठ दुनिया में कोई नहीं, अतः लोगों को ईश्वर की पूजा करने की बजाय उसकी पूजा करनी चाहिए। पर उसका बेटा प्रहलाद जो कि विष्णु भक्त था, ने हिरणकश्यप की इच्छा के विरूद्ध ईश्वर की पूजा जारी रखी। हिरणकश्यप ने प्रहलाद को प्रताड़ित करने हेतु कभी उसे ऊंचे पहाड़ों से गिरवा दिया, कभी जंगली जानवरों से भरे वन में अकेला छोड़ दिया पर प्रहलाद की ईश्वरीय आस्था टस से मस न हुयी और हर बार वह ईश्वर की कृपा से सुरक्षित बच निकला। अंततः हिरणकश्यप ने अपनी बहन होलिका जिसके पास एक जादुई चुनरी थी, जिसे ओढ़ने के बाद अग्नि में भस्म न होने का वरदान प्राप्त था, की गोद में प्रहलाद को चिता में बिठा दिया ताकि प्रहलाद भस्म हो जाय। पर होनी को कुछ और ही मंजूर था, ईश्वरीय वरदान के गलत प्रयोग के चलते जादुई चुनरी ने उड़कर प्रहलाद को ढक लिया और होलिका जल कर राख हो गयी और प्रहलाद एक बार फिर ईश्वरीय कृपा से सकुशल बच निकला। दुष्ट होलिका की मृत्यु से प्रसन्न नगरवासियों ने उसकी राख को उड़ा-उड़ा कर खुशी का इजहार किया। मान्यता है कि आधुनिक होलिकादहन और उसके बाद अबीर-गुलाल को उड़ाकर खेले जाने वाली होली इसी पौराणिक घटना का स्मृति प्रतीक है।

देश के विभिन्न अंचलों में होली मनाने की अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परम्पराएं हैं। होली की रंगत बरसाने की लट्ठमार होली के बिना अधूरी ही कही जायेगी। कृष्ण-लीला भूमि होने के कारण फाल्गुन शुल्क नवमी को ब्रज में बरसाने की लट्ठमार होली का अपना अलग ही महत्व है। ब्रज में तो वसंत पंचमी के दिन ही मंदिरों में डांढ़ा गाड़े जाने के साथ ही होली का शुभारंभ हो जाता है। बरसाना में हर साल फाल्गुन शुक्ल नवमी के दिन होने वाली लट्ठमार होली देखने व राधारानी के दर्शनों की एक झलक पाने के लिए यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु व पर्यटक देश-विदेश से खिंचे चले आते हैं। इस दिन नन्दगाँव के कृष्णसखा 'हुरिहारे' बरसाने में होली खेलने आते हैं, जहाँ राधा की सखियाँ लाठियों से उनका स्वागत करती हैं। यहाँ होली खेलने वाले नंदगाँव के हुरियारों के हाथों में लाठियों की मार से बचने के लिए मजबूत ढाल होती है। परंपरागत वेशभूषा में सजे-धजे हुरियारों की कमर में अबीर-गुलाल की पोटलियाँ बंधी होती हैं तो दूसरी ओर बरसाना की हुरियारिनों के पास मोटे-मोटे तेल पिलाए लट्ठ होते हैं। बरसाना की रंगीली गली में पहुँचते ही हुरियारों पर चारां ओर से टेसू के फूलों से बने रंगों की बौछार होने लगती है। परंपरागत शास्त्रीय गान 'ढप बाजै रे लाल मतवारे को' का गायन होने लगता है। हुरियारे 'फाग खेलन बरसाने आए हैं नटवर नंद किशोर', का गायन करते हैं तो हुरियारिनें 'होली खेलने आयै श्याम आज जाकूं रंग में बोरै री', का गायन करती हैं। भीड़ के एक छोर से गोस्वामी समाज के लोग परंपरागत वाद्यों के साथ महौल को शास्त्रीय रुप देते हैं। ढप, ढोल, मृदंग की ताल पर नाचते-गाते दोनों दलों में हंसी-ठिठोली होती है। हुरियारिनें अपनी पूरी ताकत से हुरियारों पर लाठियों के वार करती हैं तो हुरियार अपनी ढालों पर लाठियों की चोट सहते हैं। हुरियारे मजबूत ढालों से अपने शरीर की रक्षा करते हैं एवं चोट लगने पर वहाँ

ब्रजरज लगा लेते हैं।

बरसाना की होली के दूसरे दिन फाल्गुन शुक्ल दशमी को सायंकाल ऐसी ही लट्ठमार होली नन्दगाँव में भी खेली जाती है। अन्तर मात्र इतना है कि इसमें नन्दगाँव की नारियाँ बरसाने के पुरूषों का लाठियों से सत्कार करती हैं। इसमें बरसाना के हुरियार नंदगाँव की हुरियारिनों से होली खेलने नंदगाँव पहुँचते हैं। फाल्गुन की नवमी व दशमी के दिन बरसाना व नंदगाँव के लट्ठमार आयोजनों के पश्चात होली का आकर्षण वृंदावन के मंदिरों की ओर हो जाता है, जहाँ रंगभरी एकादशी के दिन पूरे वृंदावन में हाथी पर बिठा राधावल्लभ लाल मंदिर से भगवान के स्वरुपों की सवारी निकाली जाती है। बाद में भी ठाकुर के स्वरूप पर गुलाल और केशर के छींटे डाले जाते हैं। ब्रज की होली की एक और विशेषता यह है कि धूलैड़ी मना लेने के साथ ही जहाँ देश भर में होली का खूमार टूट जाता है, वहीं ब्रज में इसके चरम पर पहुँचने की शुरुआत होती है।

यदि मथुरा की होली कृष्ण-राधा के बिना अधूरी है तो वाराणसी की होली भी शिव-पार्वती के बिना अधूरी है। काशी की होली की सबसे खास बात यह है कि यहां होली एक-दो दिन नहीं बल्कि सप्ताह भर मनायी जाती है। बाबा विश्वनाथ के विशिष्ट श्रृंगार के बीच भक्त भांग व बूटी का आनंद लेते हैं। वाराणसी में होली की शुरूआत रंग भरी एकादशी से होती है। ऐसी मान्यता है कि रंग भरी एकादशी के दिन बाबा विश्वनाथ माता पार्वती और पुत्र गणेश के साथ गौना करा कर काशी लौटते हैं। उनके काशी लौटने पर तीन लोकों के लोग उनका स्वागत करते हैं। इस दिन बाबा विश्वनाथ के साथ काशी के लोग रंग-गुलाल खेलते हैं। काशी विश्वनाथ मंदिर के साथ शहर की गली-गली में मौजूद मंदिर रंग-गुलाल से नहा उठते हैं। काशी की होली में एक अलग प्रकार का हुड़दंग और अल्हड़पन दिखाई पड़ता है। परम्परागत फगुआ काशी की गलियों को खूब गुलजार करता है, जब जोगीरा सा रा रा रा रा ...की हुंकार भरते और नाचते हुए युवाओं की टोली यहाँ रंग खेलती है। घाटों पर होनी वाली अद्भुत और अनोखी होली में देश-विदेश के पर्यटक भी खूब शामिल होते हैं। रंग भरी एकादशी के दूसरे दिन महाश्मशान में भगवान शिव अपने भक्तों के साथ भस्म से अनूठी होली खेलते हैं। इन भक्तों में उनके भूत-पिशाच गण और दृश्य-अदृश्य आत्माएं मौजूद होती हैं। यह भस्म कोई साधारण भस्म नहीं होती बल्कि इंसान के शव दहन के बाद पैदा होने वाली राख होती है। तभी तो कहते हैं कि काशी में जन्म और मृत्यु दोनों ही उत्सव हैं। होली के बाद आने वाले मंगलवार को यहाँ बुढ़वा मंगल खास तौर से मनाया जाता है। होली युवाओं के जोश का त्यौहार है तो बुढ़वा मंगल में काशी के बुजुर्ग लोगों का उत्साह भी दिखाई पड़ता है। काशी की होली में जब सुबह-ए-बनारस और फागुन का रंग मिलता है तो उसकी छटा निराली होती है।

कानपुर में होली का अपना अलग ही इतिहास है। यहाँ अवस्थित जाजमऊ और उससे लगे बारह गाँवों में पाँच दिन बाद होली खेली जाती है। बताया जाता है कि कुतुबुद्दीन ऐबक की हुकुमत के दौरान ईरान के शहर जंजान के शहर काजी सिराजुद्दीन के शिष्यों के जाजमऊ पहुँचने पर तत्कालीन राजा ने उन्हें जाजमऊ छोड़ने का हुक्म दिया तो दोनो पक्षों में जंग आरम्भ हो गई। इसी जंग के बीच राजा जाज का किला पलट गया और किले के लोग मारे गये। संयोग से उस दिन होली थी पर इस दुखद घटना के चलते नगरवासियों ने निर्णय लिया कि वे पाँचवें दिन होली खेलेंगे, तभी से यहाँ होली के पाँचवें दिन पंचमी का मेला लगता है। इसी प्रकार वर्ष 1923 के दौरान होली मेले के आयोजन को लेकर कानपुर के हटिया में चन्द बुद्धिजीवियों व्यापारियों और साहित्यकारों (गुलाबचन्द्र सेठ, जागेश्वर त्रिवेदी, पं0 मुंशीराम शर्मा 'सोम', रघुबर दयाल, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', श्याम लाल गुप्त 'पार्षद', बुद्धूलाल मेहरोत्रा और हामिद खाँ) की एक बैठक हो रही थी। तभी पुलिस ने इन आठों लोगों को हुकूमत के खिलाफ साजिश रचने के आरोप में गिरफतार करके सरसैया घाट स्थित जिला कारागार में बन्द कर दिया। इनकी गिरफ्तारी का कानपुर की जनता ने भरपूर विरोध किया। आठ दिनों पश्चात् जब उन्हें रिहा किया गया, तो उस समय 'अनुराधा-नक्षत्र' लगा हुआ था। जैसे ही इनके रिहा होने की खबर लोगों तक पहुँची, लोग कारागार के फाटक पर पहुँच गये। उस दिन वहीं पर मारे खुशी के पवित्र गंगा जल में स्नान करके अबीर -गुलाल और रंगों की होली खेली। देखते ही देखते गंगा तट पर मेला सा लग गया। तभी से परम्परा है कि होली से अनुराधा नक्षत्र तक कानपुर में होली की मस्ती छायी रहती है और आठवें दिन प्रतिवर्ष गंगा तट पर गंगा मेले का आयोजन किया जाता है।

होली के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। उत्तर पूर्व भारत में होलिकादहन को भगवान कृष्ण द्वारा राक्षसी पूतना के वध दिवस से जोड़कर पूतना दहन के रूप में मनाया जाता है तो दक्षिण भारत में मान्यता है कि इसी दिन भगवान शिव ने कामदेव को तीसरा नेत्र खोल भस्म कर दिया था और उनकी राख को अपने शरीर पर मल कर नृत्य किया था। तत्पश्चात कामदेव की पत्नी रति के दुख से द्रवित होकर भगवान शिव ने कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया, जिससे प्रसन्न हो देवताओं ने रंगों की वर्षा की। इसी कारण होली की पूर्व संध्या पर दक्षिण भारत में अग्नि प्रज्वलित कर उसमें गन्ना, आम की बौर और चन्दन डाला जाता है। यहाँ गन्ना कामदेव के धनुष, आम की बौर कामदेव के बाण, प्रज्वलित अग्नि शिव द्वारा कामदेव का दहन एवं चन्दन की आहुति कामदेव को आग से हुई जलन हेतु शांत करने का प्रतीक है। मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले में अवस्थित धूंधड़का गाँव में होली तो बिना रंगों के खेली जाती है और होलिकादहन के दूसरे दिन ग्रामवासी अमल कंसूबा (अफीम का पानी) को प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं और सभी ग्रामीण मिलकर उन घरों में जाते हैं जहाँ बीते वर्ष में परिवार के किसी सदस्य की मृत्यु हो चुकी होती है। उस परिवार को सांत्वना देने के साथ होली की खुशी में शामिल किया जाता है।

होली सिर्फ एक त्यौहार भर नहीं है बल्कि यह हमारी संस्कृति और अध्यात्म का भी अभिन्न अंग बन चुका है। भारतीय उत्सवों को लोकरस और लोकानंद का मेल कहा गया है। लोकसंगीत, नृत्य, नाट्य, लोककथाओं, किस्से-कहानियों और यहाँ तक कि मुहावरों में भी होली के पीछे छिपे संस्कारों, मान्यताओं व दिलचस्प पहलुओं की झलक मिलती है। होली पर खेले गए रंग गन्दगी के नहीं बल्कि इस विचार के प्रतीक हैं कि इन रंगों के धुलने के साथ-साथ व्यक्ति अपने राग-द्वेष भी धुल दे। सही रूप में देखें तो होली के माध्यम से जीवन में व्याप्त निराशाजनक विचारों से मुक्त होकर नए आशावादी विचारों के साथ उल्लासपूर्वक जीवन का आरंभ संभव है। रंगों का यह त्योहार यह सन्देश भी देता है कि इंसानियत का रंग एक ही है। हंसी खुशी, उल्लास का रंग एक है।

लेखक परिचय

कृष्ण कुमार यादव , पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी-221002
09413666599 **ई-मेल:** kkyadav.t@gmail.com

भारत सरकार में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। प्रशासन के साथ-साथ साहित्य, लेखन और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी प्रवृत्त। विभिन्न विधाओं में अब तक कुल 7 पुस्तकें प्रकाशित- 'अभिलाषा' (काव्य-संग्रह, 2005), 'अभिव्यक्तियों के बहाने' व 'अनुभूतियाँ और विमर्श' (निबंध -संग्रह, 2006 व 2007), 'India Post : 150 Glorious Years' (2006), 'क्रांति-यज्ञ : 1857-1947 की गाथा', 'जंगल में क्रिकेट' (बाल-गीत संग्रह, 2012) व '16 आने 16 लोग' (निबंध-संग्रह, 2014)।

देश-विदेश की प्रायः अधिकतर प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट पर वेब पत्रिकाओं व ब्लॉग पर निरंतर प्रकाशित। शताधिक पुस्तकों/संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी लखनऊ, कानपुर, इलाहाबाद, वाराणसी, जोधपुर व पोर्टब्लेयर और दूरदर्शन से कविताएँ, वार्ता, साक्षात्कार का समय-समय पर प्रसारण। व्यक्तित्व-कृतित्व पर एक पुस्तक 'बढ़ते चरण शिखर की ओर : कृष्ण कुमार यादव' (सं.- दुर्गाचरण मिश्र, 2009) प्रकाशित।

उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा ''अवध सम्मान'', पश्चिम बंगाल के राज्यपाल द्वारा ''साहित्य-सम्मान'', छत्तीसगढ़ के राज्यपाल द्वारा ''विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान'', परिकल्पना समूह द्वारा ''दशक के श्रेष्ठ हिन्दी ब्लॉगर दम्पति'' सम्मान, अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन, भूटान में ''परिकल्पना सार्क शिखर सम्मान'', विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार द्वारा डॉक्टरेट (विद्यावाचस्पति) की मानद उपाधि, भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा ''डॉ. अम्बेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय सम्मान'' साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा, राजस्थान द्वारा ''हिंदी भाषा भूषण'', वैदिक क्रांति परिषद, देहरादून द्वारा ''श्रीमती सरस्वती सिंहजी सम्मान'', भारतीय बाल कल्याण संस्थान द्वारा ''प्यारे मोहन स्मृति सम्मान'', राष्ट्रीय राजभाषा पीठ इलाहाबाद द्वारा ''भारती रत्न'', अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति मथुरा द्वारा ''कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान'', आगमन संस्था, दिल्ली द्वारा ''दुष्यंत कुमार सम्मान'', विश्व हिंदी साहित्य संस्थान, इलाहाबाद द्वारा ''साहित्य गौरव'' सम्मान, सहित विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और प्रशासन के साथ-साथ सतत् साहित्य सृजनशीलता हेतु शताधिक सम्मान और मानद उपाधियाँ प्राप्त।

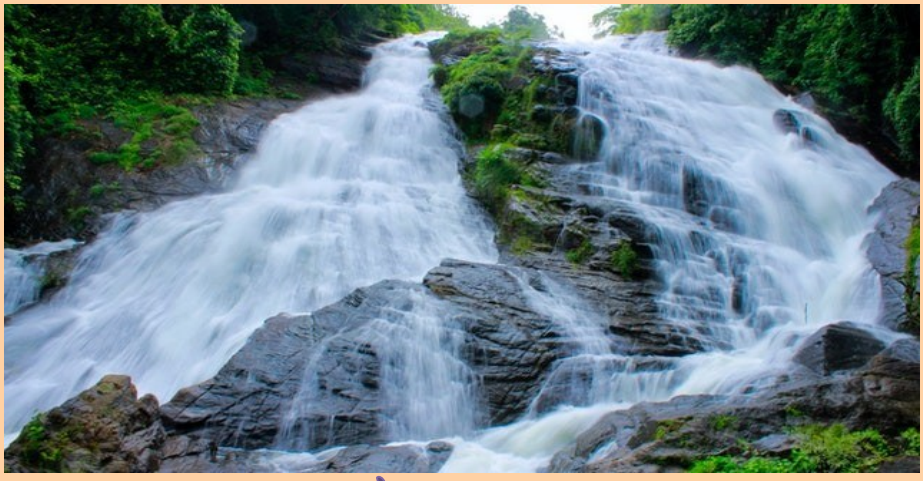

ककोलत जलप्रपात

बिहार के नवादा जिले का ककोलत जलप्रपात अपने प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि के लिहाज से बिहार का कश्मीर कहा जाता है। जलप्रपात तक पहुँचने के रास्ते में दोनों और खेत, पेड़-पौधों की हरियाली यात्रा का मजा बहुगुणित करते हैं। यह जिस पहाड़ी पर बसा है उस पहाड़ी का नाम ककोलत है। यह क्षेत्र खूबसूरत दृश्यों से भरा हुआ है। इन खूबसूरत दृश्यों में सबसे ज्यादा चमकता सितारा यहाँ स्थित ठंडे पानी का झरना तथा झरने के नीचे पानी का विशाल जलाशय है। झरने की ऊँचाई 150 से 160 फीट है। इतनी ऊँचाई से गिरता ठंडा-ठंडा पानी तथा इस झरने के चारों तरफ फैले जंगल का दृश्य अद्भुत आकर्षण तथा आँखों को ठंडक प्रदान करता है। बिहार के कई मनोरम पर्यटक स्थलों में से गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने के लिहाज से ककोलत बहुत अच्छा है। नवादा जिला मुख्यालय के करीब 35 किलोमीटर दूर गोविंदपुर प्रखंड में स्थित ककोलत जलप्रपात पुरातात्विक तो है ही पौराणिक महत्व का भी है। इस झरने के संबंध में एक पौराणिक आख्यान काफी प्रचलित है कि त्रेता युग में एक राजा को किसी ऋषि ने श्राप दे दिया। श्राप के कारण राजा अजगर बन गया और वह यहाँ वास करने लगा। यह भी कहा जाता है कि द्वापर युग में पांडव अपना वनवास काटने यहाँ आए थे, उन्हीं के आशीर्वाद से इस श्राप युक्त राजा को यातना भरी जिंदगी से मुक्ति मिली। श्राप मुक्त होते ही राजा ने भविष्यवाणी की कि जो भी इस झरने में स्नान करेगा वह कभी भी सर्प योनि में जन्म नहीं लेगा। किंवदंती यह भी है कि महाभारत में वर्णित कायंक वन आज का ककोलत ही है। अज्ञातवास के दौरान पांडवों को इसी स्थान पर श्री कृष्ण ने दर्शन दिए थे। आज इस क्षेत्र में कोल जाति के लोग निवास करते हैं इसीलिए इसका नाम ककोलत पड़ा। एक मान्यता यह भी है कि प्राचीन काल में मदालसा नाम की एक पतिव्रता नारी ककोलत के आसपास निवास करती थी और जलप्रपात में अपने रोगी पति पति को कंधे पर बिठाकर स्नान कराने के लिए प्रतिदिन इस जलप्रपात में लेकर आती थी कुछ समय बाद उसका पति निरोग हो गया। लोक कथाओं के अनुसार कृष्ण अपनी रानियों के साथ स्नान करने यहाँ आया करते थे।

यह भारत में सबसे अच्छे झरनों में से एक है, झरने का पानी पूरे वर्ष ठंडा ही रहता है। सुंदरता और प्राकृतिक सौंदर्य के लिहाज से यह देश के किसी जलप्रपात से कम नहीं है, इसी कारण बड़ी संख्या में दूर-दूर से लोग इस झरने में स्नान करने के लिए आते हैं। चैत्र संक्रांति के अवसर पर विसुआ मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर अनेक गाँवों तथा अन्य लोग भी यहाँ आते हैं तथा इस मेला को ककोलत आने का औपचारिक शुरुआत माना जाता है क्योंकि यह गर्मी के शुरुआती दौर में मनाया जाता है। बैसाखी के अवसर पर प्रत्येक वर्ष 14 अप्रैल को यहाँ पाँच दिवसीय सतुवानी मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में लोग जुटते हैं। बस इस साल महामारी का असर इस सतुवानी मेले पर भी दिखा। न के बराबर लोग जुटे। भारत सरकार ने इस जलप्रपात का ऐतिहासिक महत्व देखते हुए इस पर एक डाक टिकट भी जारी किया था। फिलहाल यमुना पासवान यहाँ के रखवाले हैं। कहा जाता है कि 125 से अधिक लोगों को वह डूबने से बचा चुके हैं। यह भी कहते हैं, "यमुना पासवान अगर आस पास हों तो कोई डूब नहीं सकता।"

झरने के नीचे वाले जलाशय की गहराई बहुत अधिक है, पहले डूबने जैसे हादसे हो जाया करते थे, पर अब भारी भारी जंजीरों से घेराबंदी कर दी गई है, ताकि कोई ज्यादा गहरे पानी में न जा सके और सुरक्षा बनी रहे।

नीना सिन्हा

संबंध

"बदले-बदले हालातों से
अपने भी अब बदल गए
सपने जो बुनते थे मिलकर
वो सब तो अब विखर गए ।।
रिश्तों का माधुर्य मिलन जो
सुखदायी सा लगता था
वक्त की आंधी ऐसी आई
वे सब दुःख में बदल गए ।।
जिन रिश्तों को सींचा हमने
स्नेह का जल संचय करके
वे तो अवसरवादी बनकर
ना जाने कब निकल गए ।।
हालातों का ऐसा मंजर
इक दिन ऐसे आएगा
इसी सोच में आंखों से अब
आंसू मेरे निकल गए ।।"

"रिश्तों में सच्चाई ढूंढूं
अपनों की परछाईं ढूंढूं
रिश्तों की जो गहराई थी
वे सब अब बदलाव लिए हैं
संबंधों की नीति बदल गई
मिलने की तकनीक बदल गई
स्वार्थ भरी रिश्तों की चाहत
अब तो ये राजनीति बन गई ।।"

"संबंध भी अब बदलाव लिए
नीरसता के परिधानों में
ना जाने फिर कब बदल जाएं
जीवन की ये परिभाषा है
मन व्यथित हुआ चिंता उपजी
रिश्तों के उन खलिहानों में
जो उपजाऊ वे रिश्ते थे
मुरझाए से अब दिखते हैं ।।"

"मिले गर ज़ख्म अपनों से
छुपा लो तुम उसे साहब
जिस डाली पर कभी बैठो
उसे काटा नहीं करते ।।"

विजय कनौजिया

मि. कोबरा

(कहानी)

संजय कुमार सिंह

सुदेश जी एलीट क्लास के आदमी हैं।एलीट क्लास के लोगों की नैतिकता क्या होती है?वे मन के शोर को प्रकट नहीं करते। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी गंभीरता ओढ़े रहते हैं। मुस्कूरा कर सब कुछ सहन करते हैं, जब मन के अंतस-लोक में सूखा पड़ा रहता है आराम से गार्डेन के फूलों में पानी पटा रहे होते हैं...

आजकल उनकी साहित्यकार डाॅक्टर पत्नी के अनंतर प्रेम के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में कुछ टिप्पणियाँ लगातार छपती रहती हैं, पर उन्होंने इन टुच्ची बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया।शोभना जी और उनके रिश्ते में कोई कटुता भी नहीं परिलक्षित हुई। इन फालतू बातों से इतर उनका जीवन इतना स्तरीय था कि प्रेम और मानवीय संबंधों के बारे में इतने नीचे आकर वे बात ही नहीं कर सकते थे...

उनका अपना भव्य और आलीशान जीवन था। महत्वाकांक्षाओं के इन्द्रधनुष से चमकीले उनके पंख थे, जिन पर सवार होकर इच्छाएँ ऐश्वर्य्य के अनंत आसमान में उड़ती थीं। तीनों बच्चे विदेश में थे। वे खुद अपर सचिव के पद पर थे। दोनों पति-पत्नी सुबह गए रात को लौटते थे। रागात्मक क्षणों में खुद से परे किसी गासिप के लिए जगह नहीं थी, फिर टीवी., मोबाइल , न्यूज पेपर के अलावे बहुत से रोज मर्रे के के क्रिया-कर्म थे...नौकर-चाकर ..हेन-टेन।

शोभना जी थीं, तो पचास की, पर पैंतीस की लगती थीं। उन्हें इस बात का गुमान था कि उनका पति इतना फ्री माइण्ड का था, जो पत्नी की स्वतंत्र अस्मिता को अपनी परछाइयों की डोर से बाँध कर नहीं चलता था। वे हाइटेक थे इस मामले में। वे खुद पत्रिकाओं में छपे लेख और कहानियों की तारीफ करते थे और उसे इन्क्रेज करते थे.... कई बार उन्होंने लिखा भी था कि वे अपने जीवन से बहुत खुश हैं... उनके बीच कोई फांक नहीं है...

वैसे वाहियत प्रश्न उनके बीच नहीं उठते थे, जिनसे स्त्रियों का जीवन बज बज हो जाता है... आज देर क्यों हुई? किस यार के साथ थी?यह कपड़े में क्या फँसा है? तुम कमीन हो.... निकलो घर से... मुसलमान होता, तो अभी तलाक दे देता...

ये सवाल थे ही नहीं वहाँ... और शायद इसीलिए दुनिया जलती थी उनके सौभाग्य से... पीठ पीछे लोग उनकी आलोचना करते थे। साहित्य में उनकी दखल को देह का हस्तक्षेप मानते थे। पिछले वर्ष जब उन्हें एक संपादक महोदय की नजदीकियों के कारण बड़ा अवार्ड मिला, तो काफी हंगामा हुआ। उस उपन्यास में

उन्होंने स्त्री की इच्छा के विरुद्ध पति के शारीरिक संपर्क को भी ब्लात्कार कहा था और सहमति से किसी भी प्रकार के शारीरिक कोटि के संबंध को नैतिकता से आच्छादित किया था...

किसी आलोचक ने अवार्ड पर तंज किया था," शरीर से बाहर कोई दुनिया नहीं होती स्त्री के लिए... पर उसे तब यह लिखना चाहिए कि परिवार और समाज शब्द बेमानी हैं... इस प्रकार का लेखन स्त्री की स्वतंत्र अस्मिता की जितनी पैरोकारी कर ले, पर उसे परिवार और समाज से चिपके रहने में कोई आपत्ति नहीं...."

शोभना जी तिलमिलायी थीं, पर सुदेश जी ने संभाला था," तुम्हें इन खीझ भरी प्रतिक्रियाओं के तात्कालिक जवाब से बच कर सैलिब्रेट करना चाहिए... इस छींटाकशी के बारे में सोचो ही नहीं।"

वह हँस पड़ी थीं।वे सफलता के शिखर पर थे, पर दूसरे की नजरों मैं उनकी आत्मा फिसल रही थी पहाड़ की उस चोटी से...

...

'आजाद सोच ' फांउडेशन में शोभना जी के उपन्यास ' देह का वसंत ' पर एक संगोष्ठी थी, जिसमें आयोजकों ने सुदेश जी को भी शोभना जी के साथ बुलाया था । विमर्श चल रहा था। काफी नोंक-झोंक हुई , प्रेम, नैतिकता और देह को लेकर...अंत में सुदेश जी को भी बुलाया गया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा," मैं उन लोगों में से हूँ ,जो किसी स्त्री की सफलता को अपनी पत्नी मात्र की सफलता नहीं मानता। उन्हें आगे बढ़ने से रोका नहीं जाना चाहिए... बहुत से लोग सोचते हैं कि वे परम नैतिक हैं, इसलिए उनकी स्त्री को उनके विचारों का शैडो होना चाहिए... पर मैं ऐसा नहीं मानता... मैं हमेशा से मानता हूँ कि इस व्यस्ततम समय में हम किसी तस्वीर की तरह एक पोज में नहीं हो सकते... अगर वह अपने समय में अपने लिए कहीं है, तो... या तो मुझे उदार होना चाहिए... या फिर भरोसा करना चाहिए... ऐसे में जो बचता है वह कम महत्तर नहीं है..."

लोग चौंक कर रह गए थे।

संपादक जी ने कहा," यह संयोग है कि मेरे विचार भी सुदेश जी से मिलते हैं... हम जब तक कुछ पूर्वग्रहों को अपने अंदर नहीं तोड़ेंगे... स्त्री का सम्मान नहीं हो सकता..."

...

उस रात शोभना जी के साथ सोने में उन्हें अपूर्व सुख का अनुभव हुआ। संपादक जी की स्मृति धुल गयी उनके जहन से... एक नदी रेत से निकल कर बहने लगी थी उनकी देह में... जिसकी सर्पिल लहरों ने जितनी बार उन दोनों को उछाला ... अनंत तक उछाला... असंख्य मणि-दीपियाँ छिटक गयी नसों में...

बिस्तर से उठकर सुदेश ने सिगरेट पी और ऐश ट्रे में उसे रगड़ कर बुझाया। शोभना को फिर-फिर चूमा और कहा," तुम्हारी हर सफलता मेरी सफलता है...तुम आगे बढ़ो... यू केन टच दि स्काई...

...

दूसरे दिन राजधानी के अखबारों में सुदेश जी के इस खतरनाक वक्तव्य की उपन्यास से भी अधिक चर्चा थी। कुछ लोगों को यह वक्तव्य एक उच्च पदस्थ व्यक्ति आत्म-छल नजर आ रहा था, तो कुछ को सामयिक और बौद्धिक लग रहा था... एक अखबार वाले ने ऐसी योजना बनायी, जिसमें शोभना जी तथाकथित संपादक के साथ सुदेश को भी घेरने की साजिश थी। कुछ पत्रकार सुदेश जी के दफ्तर में पहुँच गए... सुदेश मुस्कूराए। फिर चाय का आर्डर दिया और कहा," पूछिए...हालाँकि यह जरूरी नहीं है कि इन्शान किसी की हर बात का जवाब दे... लेकिन मैं भरसक कोशिश करूँगा..."

" यह आपकी महानता है... आप उच्च कोटि के इंटैलेक्चुअल हैं पत्रकार ने मक्खन लगाते हुए उनसे पूछा ," क्या आप को लगता है कि कल जो आपने अपनी पत्नी के पक्ष में कहा, वह नैतिक वक्तव्य था...? सचमुच किसी पुरुष के लिए ऐसा सोचना मुमकिन है?"

" सौ फीसदी।" वे हँसकर बोले।

" तो आप उपन्यास की नायिका के इतर संबंध

को सही मानते हैं?"एक पत्रकार ने विस्मय से पूछा।

" स्त्री देह मात्र नहीं है..." उन्होंने दार्शनिक अंदाज में कहा।

पर उपन्यास में तो देह ही पर जोर है.."

" आपने वही देखा

" मतलब?" पत्रकार चकराया।

" मतलब आप बताइए.." सुदेश मंद-मंद मुस्कूराए।

" आप कह क्या रहे हैं..."

" आप पूछ क्या रहे हैं..?

" इसमें उच्च वर्ग की आत्मा का खोखलापन है...."

" हो सकता है..." सुदेश ने कुछ सोचते हुए कहा, " पर सोशल सर्वे के अनुसार सबसे निचले स्तर पर यह खोखलापन सबसे ज्यादा है... "

" पर वहाँ उसे अनैतिक भी कहा जा सकता है...." पत्रकार ने गुगली मारी," वहाँ किसी विषय पर कोई विचार इतना उलझा नहीं होता ... मेरा मतलब है सही बात के लिए सही शब्द इस्तेमाल किया जाता है..."

" स्त्री के हम कब तक गाजर-मूली ट्रीट करेंगे?" उन्होंने सिगरेट सुलगायी,"अब हमें कुछ अलग किस्म की नैतिकताओं के बारे में भी सोचना चाहिए...मतलब शाकाहारी रिएक्शन्स के बारे में."

"आशय बताएँ।"

सुदेश ने कहीं दूर विलमते हुए कहा," मान लीजिए अगर आपने अपनी पत्नी को पर पुरुष के साथ सोया देख लिया तो आप क्या करेंगे? बताइए क्या करेंगे?"

" और आप...?"

" मैं उस पुरुष के जाने का इन्तज़ार करूँगा...." उन्होंने कहा," तब ही किसी प्रकार की

बातचीत करूँगा।"

" आप झूठ बोल रहे हैं..." पत्रकार ने तपाक से कहा।

" तो सच आप बोलिए कि कैसा रीयेक्शन होना चाहिए..." उनके चेहरे पर शानदार मुस्कान उभर आयी। यह हेलीकाप्टर शाट था, जो बाउण्ड्री के बाहर गिरा था।

" कत्ल कर देना चाहिए ऐसी कुल्टा औरत को..." पत्रकार चीखा," आप ज्यादा उदार हैं , तो बोलिए घर से भगा क्यों नहीं देंगे उसी के साथ....?इतना कैसे बर्दाश्त किया जाएगा किसी से...."

" उपन्यास में ऐसा नहीं होता है..."

" मैं जीवन के बारे में पूछ रहा हूँ।"

"तो क्या उपन्यास में जीवन नहीं होता?"

" होता होगा " पत्रकार लड़खड़ाया,"इसलिए तो,अवार्ड को लेकर संशय है। साहित्य के गलियारे में विस्मय बना हुआ है..."

"सही है, पर इस पर मेरा रीयेक्शन सकारात्मक है।" वे सहज भाव से बोले," मुझसे आप मेरी ही राय ले सकते हैं, अपनी जुबान मेरे मुँह में रखिएगा या उंगली करिएगा, तो मतलब कुछ और हो जाएगा..."

" यहीं लोगों को कनफ्यूजन है कि यह एक पुरुष की स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं है... एक डेप्लेमेटिक बयान है..." पत्रकार ने फिर से मानो बात संभाली।

" अच्छा! आपकी बहन अगर दुश्चरित्र हो और आप पंचायत करने गए हों, तो क्या करेंगे?" सुदेश ने फिर सीधा सवाल किया।

" आप व्यक्तिगत सवाल कर रहे हैं?" पत्रकार बौखलाया," यह बातचीत की शालीनता के खिलाफ है... आप ऐसा नहीं पूछ सकते..."

" और आप?" आप क्या कर रहे हैं?" वे तल्ख हुए।

" हमें उपन्यास के बारे में बात करनी चाहिए..."पत्रकार बैकफुट पर आया," इसमें कशीदगी नहीं होगी।"

"यह अच्छी बात है।"

"तो हम शुरु करें..."

"नहीं कुछ बात शोभना जी से पूछिए।"उन्होंने ऊब कर कहा," उपन्यास उन्होंने लिखा है... पुरस्कार उन्हें मिला है... मैं तो एक शैडो हू की तरह हूँ उस प्रक्रिया में..."

...

शाम हो गयी थी। वे लोग कमरे से बाहर आए। सुदेश भी बाहर आए । कुछ गिफ्ट देकर सबको विदा किया। किसी ने कहा," क्या आप घर नहीं जाएँगे?"

"जी मुझे किसी का इन्तज़ार करना है।" उन्होंने हँस कर कहा।

पत्रकारों की समझ में कुछ नहीं आया।

...

उन लोगों के जाने के बाद मिसेज सिन्हा आयीं और कहा," टेंस लग रहे हैं...? कौन लोग थे??"

" थे कुछ लोग " भारी मन से कहा उन्होंने।

" क्या पूछ रहे थे?"

" बोर किया उन्होंने।" वे बोले," चलो गेलार्ड होटल चलते हैं। हम उस बकवास के बारे में क्यों सोचें...."

" नहीं, आज नहीं जा सकूँगी..." वह मुस्कूरायी," मि.सिन्हा आ गए हैं, एक बार आपको फिर से उदार होना होगा...शोभना जी भी खुश होंगी..."

"उसे उस संपादक से फुर्सत मिले तब न?" उन्होंने खिसया कर कहा। मिसेज सिन्हा के हाथ से कप का प्लेट छूट कर टूट गया।

" यह आप क्या कह रहे हैं?"

" वही जो तुम सुन रही हो...."

" पर अखबारों में तो आपने कुछ और कहा है...?"

"हम जिस वर्ग से आते हैं, उसमें सच का यही स्वरूप है.. हम अपने अंदर कई किरदारों को जीते हैं... हर किरदार का अपना पक्ष है.... अखबार मेरा सच नहीं है। यह अलग बात है कि मैंने बहुत कुछ बचाया है अपने जीवन में... मैं बचाव कर रहा हूँ सभ्यता का.. मोरल वैल्यूज का... "

" मतलब आप झूठ ओढ़ कर स्वांग कर रहे हैं?" वह अकचकायी," मैं तो...."

" बेशक!" वे उकता कर बोले," यू गोट इट राइट..."

" तो आपके मन में शोभना जी के लिए आदर नहीं है?" वह हैरत के अथाह जल में डूब रही थी।

" एग्जेक्टली..." उनका चेहरा विकृत हुआ," एक मूल्यवान समझदारी है, जो हमारे दांपत्य-जीवन की जमा पूँजी है, पर यह काला धन है..."

" अगर यही बात मि.सिन्हा जानें तब?" वह खुद से उलझती हुई बोली।

" तुम भी फ्लर्ट कही जाओगी, शोभना की तरह उनकी नजर में..." उन्होंने झटके में कहा।

" ठीक है मैं जा रही हूँ ..." उसने उसाँस लेकर कहा," अब लौटना भी संभव नहीं, मैं उनके साथ कनाडा चली जाऊँगी... यही कहने आयी थी, पर अब लगता है..."

" ये रु. रख लो..." उन्होंने हड़बड़ा कर कहा।

" नहीं अब इसकी जरूरत नहीं।"

" क्यों ?" वे अचरज से भर कर बोले।

"मि. सिन्हा के पास काफी पैसे हैं।"

" मेरी यादगारी के लिए...?" उन्होंने अंचेभे के

भाव से कहा।

" आप भी अवार्ड देंगे?..." वह बिफरी," मैं आपसे प्रेम करती थी...पर अब लगता है आपकी सोच में भी औरत के लिए डिस्क्रिमिनेशन है....कोई भी औरत पुरुष के इस दोहरे चरित्र को समझ कर दुखी हो सकती है... मैं बहुत अपसेट हुई हूँ आज..."

"सचमुच?" उनके स्वर में आत्म- व्यंग का भाव था... जो उन्हें अपने अमूर्त्त आक्रोश से असहज कर रहा था, पर वे जैसे खुद के विचारों को संभाल नहीं पा रहे थे... कुछ उनके हाथों से छूट कर लगातार टूट रहे थे....

"हाँ क्यों नहीं? शोभना जी जानेंगी तो उनका दिल भी टूट जाएगा... जोर का एक धक्का लगेगा उनके विश्वास को.." वह विरक्त होकर बोली," व्हाट इज दि डिफरेंस बिटवीन यू एण्ड सम वन इल्स...?

"सच कहने से अगर चोट पहुँची हो, तो मैं कहूँगा इन एकांत क्षणों में भी मुझे तुम सच कहने दो... मुझमें क्या कमी है? मेरा क्या दोष है? क्या मैं एक्टर हूँ? किस बात के लिए यह सब करूँ? मैं किसकी भूमिका में हूँ.. क्या मैं सच के बदले झूठ बोलूँ और रैडिकल कहलाऊँ?"

"यह सवाल आप किस से कर रहे हैं....?"

"अभी तो तुम से....!" जैसे मन के आईने पर अचानक उनके साँप ने दंश मारा हो।

"मुझे लगता है शोभना जी का ही नहीं...आप मेरे प्रेम का भी अपमान कर रहे हैं।" मिसेज सिन्हा उठ गयीं," अब मुझे चलना चाहिए...बा ॅय-बा ॅय मि कोबरा. ..."

मिसेज सिन्हा के इस अप्रत्याशित अंदाज से सुदेश के अंदर तीव्र प्रतिक्रिया हुई ,लगा जैसे उन्होंने चिल्ला कर कहा हो ....मेरा पूरा नाम सुदेश कोबरा हैमिसेज सिन्हा... मगर उनकी आवाज गले मैं फँस कर रह गयी। वे सकपका से गए।

कृष्ण कुमार यादव पोस्टमास्टर जनरल "काशी-वाराणसी साहित्य महोत्सव" में "काशी साहित्य" सम्मान से विभूषित

प्रशासन के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी कृष्ण कुमार यादव की तमाम उपलब्धियाँ

वाराणसी में पहली बार आयोजित हो रहे त्रिदिवसीय "काशी-वाराणसी साहित्य महोत्सव" (3-5 फरवरी, 2023) में चर्चित साहित्यकार एवं ब्लॉगर, वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव को साहित्य तथा राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान, समर्पण तथा उपलब्धि के लिए "काशी साहित्य" सम्मान से विभूषित किया गया। श्री यादव को यह सम्मान महोत्सव के प्रधान संरक्षक एवं पूर्व सांसद (राज्यसभा) श्री रवींद्र किशोर सिन्हा ने प्रदान किया। श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर धाम के कॉरिडोर सभागार में आयोजित उक्त कार्यक्रम में श्री काशी विश्वनाथ न्यास के अध्यक्ष प्रो. नागेंद्र पाण्डेय, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. के.जी सुरेश, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी, लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नई के पूर्व कुलपति प्रो. राम मोहन पाठक सहित तमाम विद्वतजन मौजूद रहे।

गौरतलब है कि श्री कृष्ण कुमार यादव लोकप्रिय प्रशासक के साथ ही सामाजिक, साहित्यिक और समसामयिक मुद्दों से सम्बंधित विषयों पर प्रमुखता से लेखन करने वाले साहित्यकार, विचारक और ब्लॉगर भी हैं। विभिन्न विधाओं में आपकी सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और आपके जीवन पर भी एक पुस्तक "बढ़ते चरण शिखर की ओर : कृष्ण कुमार यादव" प्रकाशित हो चुकी है। देश-विदेश में विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता और प्रशासन के साथ-साथ सतत् साहित्य सृजनशीलता हेतु आपको शताधिक सम्मान और मानद उपाधियाँ प्राप्त हैं। उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव द्वारा ''अवध सम्मान'', पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्री केशरीनाथ त्रिपाठी द्वारा ''साहित्य-सम्मान'', छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री शेखर दत्त द्वारा ''विज्ञान परिषद शताब्दी सम्मान'' से विभूषित आपको अंतर्राष्ट्रीय ब्लॉगर्स सम्मेलन, नेपाल, भूटान और श्रीलंका में भी सम्मानित किया जा चुका है। विभागीय दायित्वों और हिन्दी के प्रचार-प्रसार के क्रम में अब तक श्री यादव लंदन, फ्रांस, जर्मनी, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, भूटान, श्रीलंका, नेपाल जैसे देशों की यात्रा कर चुके हैं। आपके परिवार को यह गौरव प्राप्त है कि साहित्य में तीन पीढ़ियाँ सक्रिय हैं। आपके पिताजी श्री राम शिव मूर्ति यादव के साथ-साथ आपकी पत्नी श्रीमती आकांक्षा भी चर्चित ब्लॉगर और साहित्यकार हैं, वहीं बड़ी बेटी अक्षिता (पाखी) अपनी उपलब्धियों हेतु भारत सरकार द्वारा सबसे कम उम्र में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

(ब्रजेश शर्मा), सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय - पोस्टमास्टर जनरल वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी -221002

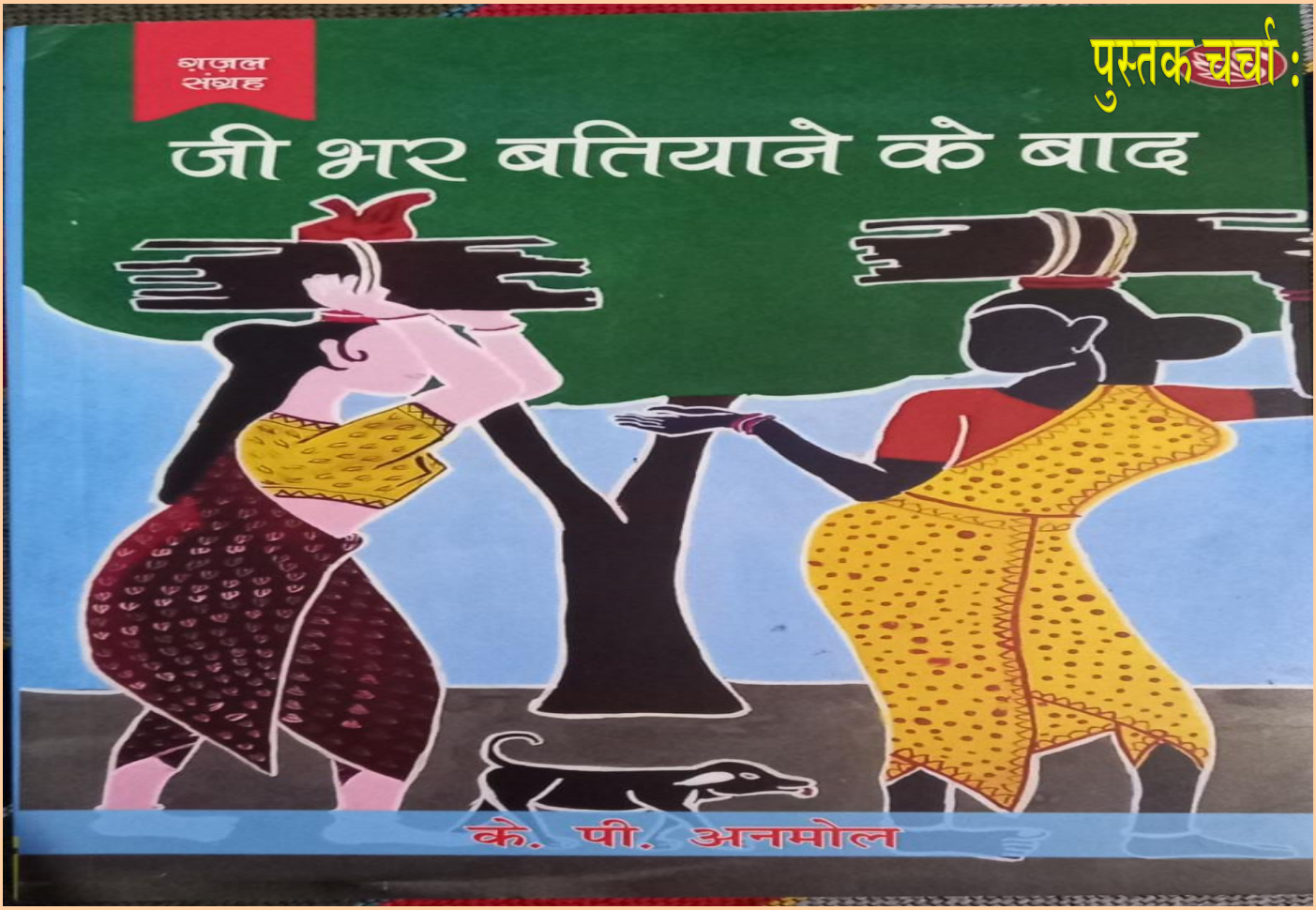

नयी कहन, नया तेवर, नई ख़ुशबू की ग़ज़लें: जी भर बतियाने के बाद

- आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'

इन दिनों बहुत सारी पुस्तकें मिलीं। उनमें कुछ लघुकथाओं की हैं, कुछ ग़ज़ल संग्रह हैं। कुछ कविताओं की हैं व कुछ निबंध की। कुछ कहानियों की भी। मैं अपनी व्यस्तताओं के चलते इन पुस्तकों को पढ़ नहीं पायी थी। कल थोड़ी फ़ारिग हुई तो पुस्तकों को टेबल से उठाकर अपने सिरहाने ले आयी और उन्हें पढ़ना शुरू किया। इनको पढ़ने का क्रम मैंने वही रखा, जिस क्रम में ये मेरे पास आयीं। उसमें सबसे ऊपर के क्रम से चलते हैं।

यह है ग़ज़ल संग्रह 'जी भर बतियाने के बाद', जिसके लेखक के० पी० अनमोल हैं। इस ग़ज़ल संग्रह को रात दो बार पढा और तसल्ली से पढ़ा। दो बार इसलिए कि पहली बार लेखक को अपने छोटे भाई की तरह पढा, अचंभित हुई उसके लेखन को लेकर कि छोटे से अनमोल में विचारों की इतनी गहराई है....वाह्ह! फिर लगा नहीं, इसको एक आलोचक की तरह पढ़ना होगा अगर मैं अपने अनुज का भला चाहती हूँ पर दुबारा इस संग्रह को पढ़कर एक तसल्ली हुई, एक विश्वास हुआ कि वास्तव में इन दिनों हिन्दी ग़ज़ल सफलता के शिखर की ओर अग्रसर हो रही है। हिन्दी ग़ज़ल की दुनिया में बेहतरीन कहने वाले जो नए युवा ग़ज़लकार अपनी पैठ बना रहे हैं, अपने पाँव गहराई से जमा रहे हैं, के० पी० अनमोल उन्हीं युवा ग़ज़लकारों में से एक हैं।

अनमोल को मैं लगभग 12 सालों से जानती हूँ। उनके शुरू के लेखन से भी वाकिफ़ हूँ। उनको 12 सालों से निरंतर पढ़ रही हूँ। अच्छा लिखते हैं और यह लेखन निरंतर निखरेगा यह तसल्ली तो थी पर इतनी जल्दी लेखन इस मुक़ाम तक पँहुच जाएगा, यह नहीं ज्ञात था। 'जी भर बतियाने के बाद' इस शीर्षक से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि जी भर बतियाने के बाद ही यह ग़ज़लें लिखी गयी हैं। वह जी भर बतियाना किसी से हो सकता है, अपने घर के गमलों में उगे पौधों से, अपने खिड़की-दरवाज़ों से, अपने दोस्तों से, अपने परिजनों से, अपनी माँ से, अपने परिचितों से, अपने पड़ोसियों से, अपने आस-पास के वातावरण से, हवा से, बरसात से, धूप से, नदी, झरनों, तालाबों, पक्षियों, पेड़-पौधों से, बिटिया से और ख़ुद अपने-आप से, लेखक की तमाम ग़ज़लें इस बात की गवाही दे रहीं हैं कि लेखक अपने समय के हर पल से बतियाता है। बतियाने का मतलब यह नहीं कि जुबान से शब्दों में बात की जाए। बतियाने के लिए मन व आँखों का खुला रहना ज़रूरी है, ज़रूरी है पल-प्रतिपल को मापने व भाँपने का एक खुला नज़रिया। एक अच्छे लेखक के लिए व उसके लेखन की नवीनता के लिए इस तरह का बतियाना बेहद ज़रूरी है।

इस संग्रह में कुल अस्सी ग़ज़लें व कुछ आज़ाद शेर हैं, हर ग़ज़ल एक नयी कहन की तस्दीक़ करती हुई नज़र आती है। कहीं रिश्तों की

कसमसाहट है तो कहीं रिश्तों की परवाह व प्यार भी, कहीं संवेदनाओं की गहन अनुभति है तो कहीं समय की नब्ज़ को टँटोलता मन का चिकित्सक। अपनी क़लम के चरख़े पर अपने समय के कपास को बहुत बारीक़ी से काता है अनमोल ने और उससे जो पैरहन तैयार हुआ है इस ग़ज़ल संग्रह के रूप में, वो आने वाली पीढ़ियों के लिए बानगी के तौर पर एक सुंदर तोहफ़ा है। इस संग्रह ने अपने भीतर समसमायिक गज़लों के साथ कुछ प्रयोगात्मक ग़ज़लें भी समेटी हैं वो बहुत आकर्षक लगीं। नयी कहन, नया तेवर, नई ख़ुशबू और बेशक़ पूरानी ज़मीन में नई फ़सल इस संग्रह को संग्रहणीय बनाता है। बानगी के तौर पर कुछ शेर देखिए-

संसार अजब शय है अजब शय है अजब शय
हाँ यार, अजब शय है अजब शय है अजब शय

इतनी लम्बी रदीफ़ की यह ग़ज़ल चमत्कार पैदा करती है, विस्मृत करती है।

इसके साथ ही इस संग्रह की ग़ज़ल 76 "भीतर-भीतर एक अगन है, बाहर पानी-पानी है/ बाहर पानी-पानी है यह कैसी प्रेम कहानी है" बहुत ही अनूठी ग़ज़ल बन पड़ी है। जब संग्रह पढ़ते हुए आगे बढ़ते हैं तो प्रयोगात्मक ग़ज़ल में ही एक चमत्कार से और रूबरू होते हैं-

ख़ुशबू ख़ुशबू ख़ुशबू ख़ुशबू ख़ुशबू ख़ुशबू ख़ुशबू
हाँ तू हाँ तू हाँ तू हाँ तू हाँ तू हाँ तू हाँ तू

यक़ीनन एक अलग ही ख़ुशबू की ग़ज़ल बन पड़ी है, जैसे कच्ची मिट्टी की बरसाती ख़ुशबू।

ये तो कुछ प्रयोगात्मक ग़ज़लें, जिन्होंने मुझे बाँधा और ऐसा बाँधा कि लगा आस-पास कोई इत्र की शीशी खुली छूट गयी। साथ ही इस संग्रह की कई और ग़ज़लें लेखक के गहरे विचारों व सधे भावों के हस्ताक्षर के प्रमाण हैं। मसलन-

दिल की शाखों से कभी लब पे उतारे न गये
यूँ पुकारे गये हम जैसे पुकारे न गये

एक आह्ह, एक कराह, एक उदासी समेटे इस ग़ज़ल में नमी-सी नज़र आती है और नमी होनी भी चाहिए। बिना नमी के कविताई व शेरियत के अहसास मर जाते हैं। एक शेर और देखें-

घुसा है जिंदगी में इस तरह मुआ गूगल
कि हो गया है ज़रूरत से भी बड़ा गूगल

आज हम गूगल के इतने आदी हो चुके हैं कि हम ख़ुद से कुछ भी याद नहीं रखना चाहते या याद रखने की कोशिश ही नहीं करते क्योंकि इस गूगल की सुविधाओं ने हमें बहुत ही छिछला बना दिया है। कोई चीज़ अब भीतर तक बहुत देर थाम कर रखने की हमारी क्षमता क्षीण हो गयी है। अब हम हर बात में गूगल सर्च करने लगे हैं। अधिक सुविधाएँ आदमी को आलसी बना देती हैं।

एक छोटी बहर की ग़ज़ल, जो बहुत गहरी, जीवन दर्शन की बात कह जाती है मिट्टी के बहाने-

जिस्म जैसे मकान मिट्टी का
क्या भरोसा है जान मिट्टी का

किसको होता है मोह मिट्टी से
कौन रखता है ध्यान मिट्टी का

इन तमाम ग़ज़लों के साथ-साथ इस संग्रह की बहुत सारी ग़ज़लें हैं, जो पाठकों द्वारा बहुत-बहुत पसंद की जाएँगी, लेखकों द्वारा सराही जाएँगी, समीक्षकों द्वारा भी फिर-फिर उद्धृत की जाएँगी। बेहतरीन ग़ज़ल संग्रह के लिए के० पी० अनमोल जी को बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ।
साथ ही इस संग्रह के प्रकाशक राहुल शिवाय जी को बहुत सुंदर प्रकाशन, मुद्रण, टंकण के लिए साधुवाद। कुल मिलाकर एक बेहतरीन संग्रह बन पड़ा है 'जी भर बतियाने के बाद'।

समीक्ष्य पुस्तक- जी भर बतियाने के बाद :

विधा- ग़ज़ल
रचनाकार- के० पी० अनमोल
प्रकाशक- श्वेतवर्णा प्रकाशन, नई दिल्ली
संस्करण- प्रथम, 2022
मूल्य- 150 रूपये

अर्चना गौतम मीरा

असल के पीछे का असल
ज़्यादातर हमें पता नहीं चलता
असल के पीछे का असल
असल के पीछे का असल अकसर
ख़ामोश खड़ा रह जाता है
तआरुफ़ के इंतज़ार में
तालियों वाले तालियां बटोरते हैं
सिक्कों वाले सिक्के
असल बात तो यह है कि दरअसल
इन सिक्के वालों और ताली वालों के
बीच भी कई हैं इनके टायर
जिनकी बदौलत ये दौड़ रहे हैं
एक झूठ की ज़मीन पर ज़्यादा हाय -
तौबा मचाए असल के पीछे का असल
तो उसके साथ कोई भी दुर्घटना घट
सकती है सच मानिए
नहीं होता रत्तीभर गुमान किसी को
जताते तो यही हैं जैसे मेरी गली
और पीछे की तीन गलियों में
हर साल कई श्वान शावक कुचले जाते हैं
और इन सब
छोटी - छोटी बातों पर
जो कि छोटे - बड़े शहरों में
अकसर होती रहती हैं
हास्यास्पद है 'पेटा' का
शोर मचाना भला ये भी कोई बात हुई
बात उठाने की कि
महिला अगुआ के घर में महिला सताई
ना जाए चुपचाप कोई नशे में है
कोई नशा ढूंढ रहा है असल के पीछे का
असल कभी भूले से
मिल भी जाए तो कूड़ेदान के साथवाली
दीवार पर
लापता की तलाशवाले
पोस्टर सरीखा कई बार
बेचारा वह ताबूत में उठ बैठता है
अधमरा
पर छटपटाकर
घुट जाता है
कतारों में चलती भेड़ों को
पड़ने नहीं जाता फ़र्क.

"इंग्लिश पप्पू"

(व्यंग्य)

दिलीप कुमार

पाकिस्तान के भूतपूर्व गृहमंत्री शेख रशीद दक्षिण एशिया की राजनीति में मनोरंजन के प्रमुख साधन माने जाते रहे थे, ये हजरात वही हैं जो इंडिया पर पाव किलो वजन के परमाणु बम मारने की धमकी दिया करते थे। जब शेख रशीद गृहमंत्री थे तब बिलावल को उनका सबसे प्रमुख आलोचक माना जाता था ,अब बिलावल जरदारी वजीर -ए-ख़्वारिजा हैं तो शेख रशीद उनके सबसे बड़े क्रिटिक हैं । ये वही शेख रशीद हैं जो कुछ वक्त के लिये पाकिस्तान के रेल मंत्री बने थे तब उन्होंने कराची से लास एंजिल्स तक ट्रेन चलाने की बातें शाया हुई थीं। शेख रशीद को पाकिस्तान की राजनीति का "कॉमेडी किंग " और बिलावल को शेख रसीद का "इंग्लिश वर्जन" माना जाता है।

भारत को दिन भर एटम बम से उड़ा देने की धमकियां देने वाली और पाकिस्तान को दुनिया का सबसे अमीर और खुशहाल मुल्क बताने वाली टीवी एंकर फिजा खान के शो पर पाकिस्तान के वर्तमान विदेश मंत्री और भूतपूर्व गृहमंत्री के बीच बातचीत शुरू हुई।

शेख रसीद टू बिलावल-

"आप पाक के हालात कैसे सुधारेंगे आप, हमारी सरकार थी तब आप हमें तो भिखारी कहते थे"।

बिलावल –

"वी विल टेक डोनेशन एंड बेग फ्रॉम आवर फ्रेंड्स "।

शेख रशीद को अंग्रेजी समझ नहीं आयी वो मन ही मन झल्लाये मगर उन्होंने सोचा कि इस मसले पर पूछेंगे तो वो लगातार अंग्रेजी बोलेगा तो मेरी फजीहत हो जाएगी।

शेख रशीद –

"आप कश्मीर को इंडिया से छीनकर पाकिस्तान में कैसे मिलाएंगे "?

बिलावल-

"अफगानी तालिबान विल डू फार अस"।

शेख रशीद मन ही मन कुढ़े , फिजा की तरफ देखा ,फिजा ने भी कंधे उचका दिए कि फॉरेन मिनिस्टर को मैं उर्दू या पंजाबी में बोलने की ताकीद की हिमाकत मैं नहीं कर सकती।

शेख रशीद-

"मुस्लिम उम्मा की कौमे यकजहती आप कैसे करेंगे"?

"वी विल बेग आल मुस्लिम कन्ट्रीज ,

ए क्रॉनिक बेगर कैन बी चूजर्स"।

शेख रशीद पस्त हो गया ,उसने कहा –

"देखें जी पाकिस्तान की 95 फीसदी आबादी

इंग्लिश नहीं समझती ।इस अवाम को अपनी बात बतानी है तो उर्दू या पंजाबी में कहें "।

बिलावल मन ही मन कुढ़े, उर्दू या पंजाबी में कहूंगा तो अवाम समझ जाएंगे कि मैं क्या कह रहा हूँ,जबकि आज तक मैं खुद नहीं समझ पाया कि मैं क्या कहता रहता हूँ।

शेख रशीद –

"रमीज राजा का आप क्या करेंगे , इंडिया वाले उन्हें अब कमेंट्री करने के लिये वीजा नहीं देंगे तो "?

बिलावल -

"ही इज आवर क्रिकेटिंग पप्पू , देयर शुडबी एनफ पप्पूज इन आल वाक आफ लाइफ"।

शेख रसीद ने कहर भरी नजरों से बिलावल को देखा और कहा –

"अवाम को इंग्लिश नहीं आती वो क्या मतलब निकाले इस बात का "?

विलावल –

"अवाम को नहीं आती या आपको नहीं आती "

ये कहकर बिलावल हो -हो करके हँसा।उसको खुद पर हँसता हुआ देखकर शेख रशीद अंगारों पर लेट गया।

शेख रशीद –

" जी सुना है शाहिद आफरीदी, बाबर आजम को हटा कर अपने दामाद शाहीन शाह को पाकिस्तानी क्रिकेट टीम का कप्तान बनाएंगे"।

बिलावल –

"आई लव दिस, मेरे नाना ने भी तो अपने दामाद को मुल्क का सरबराह बनाया था "।

शेख रशीद-

"आपकी उम्र निकली जा रही है आपने शादी नहीं की ,क्या आप शेख रशीद बनना चाहते हैं उन्होंने भी शादी नहीं की है " ये कहकर शेख रशीद हो -हो करके हंसा तो बिलावल अंगारों पर लोट गया।

बिलावल-

"वेल मेरे पापा ने भी तभी शादी की थी जब उनकी मूंछे पक गयी थीं , आई हैव एनफ टाइम "।

शेख रशीद –

"इमरान खान कहते हैं कि आप पप्पू टाइप बच्चे हैं आपसे कोई लड़की शादी को तैयार नहीं होगी "।

बिलावल –

"इमरान खान खुद तो इमरान हाशमी बन बैठा है ,उसके आडियो -वीडियो जस्ट अमेजिंग हैं । मैं पाकिस्तान का सबसे एलिजबल बैचलर हूँ। सलमान खान की फिल्में इंडिया में नहीं चलती ,लेकिन कैरियर इसीलिये चल रहा है कि वो अनमैरिड हैं , यू कैन कंसीडर मि पोलिक्टिकल सुपरस्टार ऑफ पाकिस्तान "।

शेख रशीद –

"जी मीडिया तो आपको पप्पू ऑफ पाकिस्तान कहता है "।

बिलावल इस सवाल से असहज हो गया । उसने फिजा की तरफ देखते हुए कहा -

"नो ,नो । चेक यर फैक्ट्स , समवन इज लेडी पप्पू ऑफ मीडिया ,इट्स फिजा खान "।

शेख रशीद फिजा खान की इस बेइज्जती पर बहुत खुश हुआ कि अब तक उसकी फजीहत हो रही थी तो फिजा बहुत मजे ले रही थी।

शेख रशीद –

"सुना है पाकिस्तानी तालिबान ने खैबर पख्तूनवा को एक आजाद मुल्क डिक्लेयर कर

दिया है ,वहां पर फॉरेन मिनिस्टर ऑफ पाकिस्तान का पोर्टफोलियो किसी और को दिया गया है ,तो आप अब आधे -अधूरे पाकिस्तान के फॉरेन मिनिस्टर हैं।

बिलवाल

"ये इंडिया और रा की साजिश है। वी विल फाइट बैक, टीटीपी ने अपना एक सूबे का फॉरेन मिनिस्टर बनाया है, हमारे पास रेस्ट ऑफ पाकिस्तान के तीन सूबे अभी भी हैं। हम तीन तीन फॉरेन मिनिस्टर बनाएंगे "।

शेख रशीद –

"पाकिस्तान में इतनी बिजलीं क्यों कटती है "।

बिलावल –

"जी बिजली कटती नहीं है, हम बिजली काटते हैं, अगर मुसलसल बिजली आती रहेगी तो लोग काम करते रहेंगे ,इससे उनके जिस्म और जेहन थक जाएंगे। इसीलिए अवाम को सुकून देने के लिये लाइट काटी जाती है "।

शेख रशीद –

"पाकिस्तान में बहुत महंगाई है , लोगों को खाने के लिये आटा नहीं मिल पा रहा है आपकी हुकूमत में "।

बिलावल –"यू सी, यहां भी हम पब्लिक वेलफेयर का ही काम कर रहे हैं। आटे की रोटी पकाने , खाने में मेहनत लगती है। हम अपनी अवाम को आराम देना चाहते हैं । हमारी सलाह है कि अवाम आटे की बात न करे ,चावल खाये या फिर चावल की बनी बिरयानी खाये "।

शेख रशीद –

"पाकिस्तान में बच्चों की बर्थ रेट इतनी ज्यादा क्यों है ,आप इस पर कुछ करते क्यों नहीं "।

बिलावल –

"देखें जी हमारे यहां इंग्लैंड,ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड की टीमें अभी टेस्ट क्रिकेट खेलने आयी थी । हमारे स्टेडियम बिल्कुल खाली-खाली थे। जब इंडिया में टेस्ट मैच होता है तो उनके स्टेडियम भरे रहते हैं । हम " स्टेडियम भरो स्कीम" पर काम कर रहे हैं। इंशाअल्लाह दस पंद्रह सालों में हमारे स्टेडियम इंडिया की तरह भरे होंगे "।

शेख रशीद –

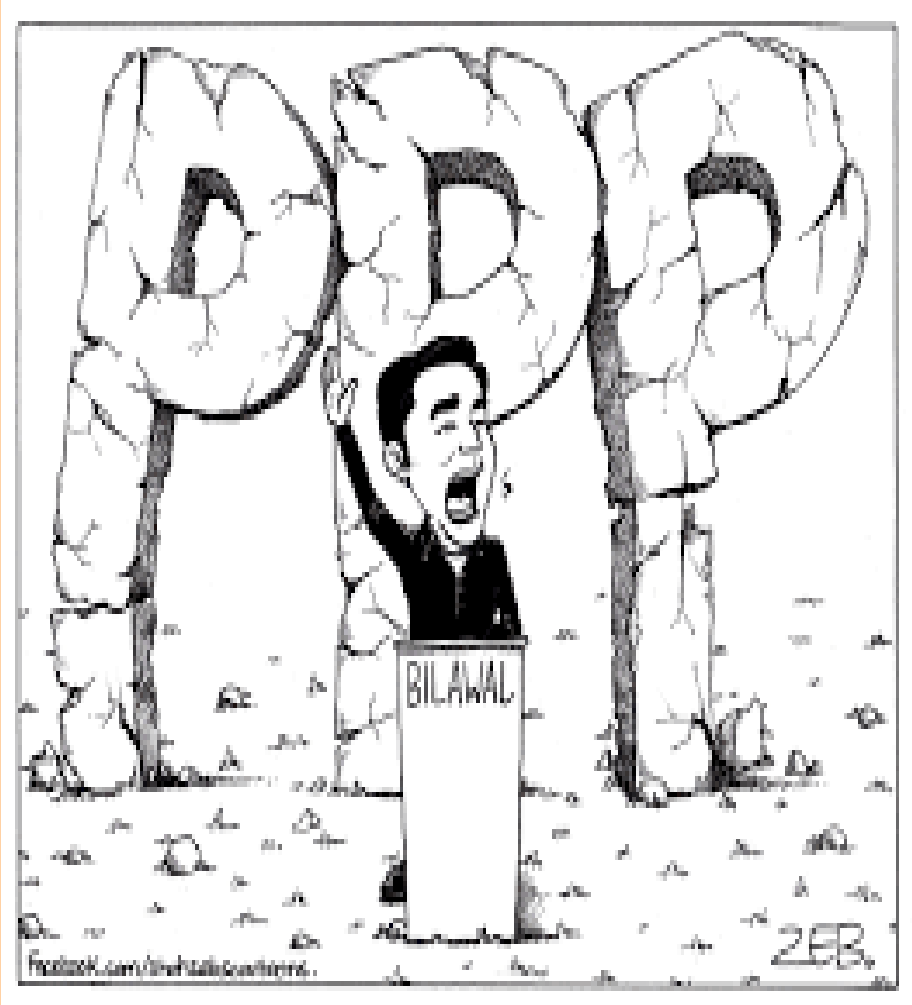

"लेकिन इंडिया के स्टेडियम इसलिये नहीं खाली रहते कि वहां पे आबादी नहीं है ,वहां लोग स्टेडियम में टेस्ट मैच देखना वक्त की बर्बादी मानते हैं । लोग काम पर जाते हैं इसलिये स्टेडियम खाली रहते हैं "।

बिलावल –

"देखें जी ,इंडिया एक गरीब मुल्क है ,इसलिये वहाँ क्रिकेट मैच होता है तो अपने बंदों को वो काम पर भेज देते हैं। पाकिस्तान में इतनी गरीबी नहीं है , हमारे यहां तो मैच में हम सारे शहर की लाइट काट देते हैं सिर्फ स्टेडियम की लाइट जलाने के लिये, हमारा मानना है कि प्लेयर्स जब स्टेडियम में लाइट की रोशनी में खेल रहे हैं तो वो अपना काम कर रहे हैं इस बात के उनको पैसे मिलते हैं ,वो काम करें। अवाम क्यों काम करे,लाइट रहेगी तो अवाम मैच देखकर एक किस्म का काम करेगी ही। पाकिस्तान ने मैच हारना ही है , पब्लिक पहले टाइम वेस्ट करके मैच देखेगी फिर पाकिस्तान के हारने पर स्ट्रेस लेगी। इसलिये अवाम की खिदमत के लिये ये फ़ैसला लिया गया है "।

शेख रशीद –

"अफगानी तालिबान आपको मार रहे हैं ,आप तो कहते थे कि वो आपके भाई हैं ,फिर ऐसा क्यों "?

बिलावल –

"यू सी , ये इंडिया और रा की साजिश है। हम अमेरिका से तालिबान को ठिकाने लगाने के लिये डॉलर लेते थे ,उसे पूरा रख लेते थे ,फिर तालिबानियों को थोडा सा सड़ा हुआ गेंहू और असलहा -बारूद भेजते थे , तब वो थोड़ा सी रोटी खाकर बाकी का पेट बारूद के धमाके को सूंघ कर भर लेते थे । लेकिन अब सब बदल गया है "।

शेख रशीद-

"क्या बदल गया अब वो आपके भाई नहीं रहे "।

बिलावल –

"देखो असली भाई तो वो तालिबान खान यानी इमरान खान के हैं । मतलब हमारे भी भाई हैं। बदल ये गया कि एक तो अमेरिका

वहां से चला गया तो तालिबानों के नाम पर मिलने वाला डॉलर हमको मिलना बंद हो गया । दूसरे तालिबानी लड़ाके कबीले हैं । लड़ते रहने की उनकी आदत है , पेट भर जाए और पैरों में चप्पल भी न हो तो वो लड़ेंगे ही। इंडिया ने साजिशन तालिबानों को इतनी रसद दे है ,अब वो बैठ कर खाते हैं , उनके पेट भरे हैं ,सामने लड़ने को अमेरिकन नहीं है और उनको किसी न किसी से तो लड़ना ही है । कभी अमेरिका से लड़ते हैं कभी खुद आपस में और जब लड़ने को कोई नहीं मिल रहा है तो अब हमसे लड़ रहे हैं ।इंडिया साजिश करके उनको अनाज न देता तो वो हमसे न लड़ते"।

शेख रशीद –

" लेकिन तालिबान आपके मुल्क के नक़्शे को नहीं मानते। वो डूरंड लाइन भी नहीं मानते और आपके वजीरिस्तान को कब्जा करके अफगानिस्तान में मिलाना चाहते हैं"।

बिलावल –

"देखें जी ,ये भी इंडिया और रा की साजिश है । पहले हम अफगानिस्तान को अपना पांचवा सूबा मानते थे और उसे पाकिस्तान में मिलाने की फिराक में थे ,पाकिस्तान ने इसकी पूरी तैयारी भी कर ली थी । लेकिन जब से अफगानिस्तान की टीम इंडिया में क्रिकेट खेलने गयी तो वहां के लोगों ने न जाने क्या पट्टी पढा दी ,क्रिकेटर्स ने ये बात तालिबानियों को समझा दी कि इससे पहले कि अफगानिस्तान को पाकिस्तान अपने मुल्क में मिला कर पांचवा सूबा बना ले । हमें पहले ही हमला करके कबीलाई इलाके वजीरिस्तान को अफगानिस्तान में मिला लेना चाहिये। ये इंडिया ,रा और इंडियन क्रिकेटर्स की साजिश है "।

शेख रशीद–

"ये पाकिस्तानी रुपया डॉलर के मुकाबले इतनी तेजी से क्यों गिर रहा है"?

बिलावल-

"इट्स नाट लाइक दैट। ये झूठी खबर इंडिया और रा ने साजिशन उड़ाई है । मैंने अपने खुद अपने घर की छत पर से यूस डॉलर और पाकिस्तानी रुपया एक साथ गिराया, लेकिन पाकिस्तानी रुपया उतना तेजी से नीचे नहीं आया, उस दिन तो डालर पहले गिरा था, पाकिस्तान रुपया न सिर्फ डालर के मुकाबले धीरे से नीचे आया बल्कि उस दिन तो डॉलर के ऊपर ही आकर गिरा हमारा पाकिस्तान रुपया। आई कैन कन्फर्म यू"।

ये कहकर बिलावल हँसा तो शेख रशीद भी हंसने लगा । फिर दोनों ने एक दूसरे को गले लगा लिया और ठहाके लगा कर हंसने लगे। उन दोनों को हंसता देखकर पाकिस्तानी की अवाम बिलख -बिलख कर रोने लगी।

पाकिस्तान की अवाम के फ्यूचर के बारे में सोचकर आपकी भी आँख नम हो गयी क्या ?

केशव शरण

कई-कई गुना अधिक

दूरी क्या है ,
एक बिन्दु से
दूसरे बिन्दु तक का
अंतराल ,
यही न !
तो इसे
अंतराल ही कहें न !!
मैंने देखा
अहम का एक बिन्दु
और फिर एक दूसरे अहम का
एक दूसरा बिन्दु ,
मुझे लगा
दोनों के बीच का अंतराल
कुछ और है
और दूरी
कुछ और है
अंतराल से कई-कई गुना अधिक
और अपार

***

ऐसा नहीं है कि सिर्फ़

देखो चारों ओर
बसंत की आहट है
पर तुम्हें घबराहट है घोर
और तुम्हारा दिल
पीपल के पत्ते की तरह
डोल रहा है
धीरे-धीरे स्थिर होगा वह
और अटकेगा
हर शै में
हर मंज़र में
सोचना बंद कर दो
खाने में नमक कर दो
कि नमकीन होने वाली है रुत
जवान और हसीन होने वाली है
रुत
कलियाँ आने लगी हैं
बौर लगने लगे हैं
कामदेव जी जगने लगे हैं
ऐसा नहीं है कि
सिर्फ़ पत्ते झर रहे हैं

बालिकाओं में शिक्षा के बाद परिवर्तन व नारी का स्थान

प्रदीप छाजेड़

आज के समय में शिक्षा का खूब - खूब विस्तार हुआ है। इसके विस्तार के परिणामस्वरूप बालिकाओं में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है | बालिकायें शिक्षा प्राप्त करने के बाद घर , समाज आदि कीउन्नति में तो अपना अमूल्य योगदान दे रही है ही साथ में राष्ट्र के विकास में भी अपना शीर्ष पद पर से वायें दे कर देश के सही से निर्माणमें व विश्व पटल पर सेवायें देकर अपनी अलग पहचान क़ायम की है। जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र महासभा के कार्यालय में सेवाये हो याराष्ट्रपति , प्रधानमंत्री , वितमंत्री आदि जैसे पद हो हर जगह कही न कही हम महिलाओं को देख सकते है। बालिकायें शिक्षा ग्रहण करआगे शादी के बाद महिलाओं के रूप में पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलती है। औरत:-और का अर्थ है : - आत्माबली, संकल्प पूरक। र का अर्थ है:- ऊर्जा वर्धक ।त का अर्थ है:- सरस्वती - स्वरुप। औरत शब्द में इतनी इतनी विषेशताए होती है। इसअर्थ की सही से सार्थकता कब नजर आती है जब एक मकान घर बन जाता है और घर एक मंदिर बन जाता है। भारतीय संस्कृति में नारीके सम्मान को हम ऐतिहासिक स्तर पर भी देख सकते है। जब में भारतीय संस्कृति की बात करता हूं तो जैन, बौद्ध, वैदिक सभी परंपराएंआ जाती है। जन्हा स्त्री की पूजा होती है वन्हा देवता रमण करते है, यह उदात स्वर भारतीय परंपरा का रहा है। जैन परंपरा की बात करे तो आदि पुरुष भगवान ऋषभ माता मरूदेवा का आदेश का कितना सम्मान करते थे वह उस घटना से पता लगता है जब युगल में उस कापुरुष साथी आश्चर्यजनक घटना में उसकी जीवन यात्रा शेष हो जाती है और माता कहती है इसका विवाह ऋषभ के साथ कर दो। जैनपरम्परा उक्त घटना को विवाह संस्था का उदय मानती है। ऋषभ ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को लिपि कला और सुंदरी को गणित की कला सिखाई। 16 महासतियो का वर्णन जैन परम्परा में नारी जातिके प्रति अत्यंत सम्मान को दिखाता है। तीर्थंकर परंपरा में श्वेताबार संप्रदाय 19 वे तीर्थंकर मल्लिनाथ को स्त्री को सर्वोच्च आध्यात्मिक पद देना स्वीकृत करता है। भगवान महावीर ने चंदनबाला का उद्धारकरके उनको 36000 साध्वियों की प्रमुख बनाया। विनोबा भावे के शब्दो में भगवान महावीर ने नारी जाति को जो अधिकार दिए वे को ईसाधारण नही थे। जो साहस महावीर ने दिखाया वह बुद्ध में नही दिखाई दिए। यह विनोबा जी का मानना है। तेरापंथ का गौरवशालीइतिहास देखे तो आचार्य भिक्षु के समय खंडित लड्डू को पूर्ण करने वाली तीन साध्वियों ने संवत 1821 में अपना साहस और शौर्यदिखाया। भिक्षु स्वामी ने उनको सचेत किया एक भी कालधर्म को प्राप्त हुई तो शेष दो को संलेखना का मार्ग अपनाना होगा। वे अडिगरही है । जयाचार्य ने साध्वी सरादरां जी को तैयार किया और प्रथम साध्वी प्रमूखा बनाया और नारी जाति का कितना सम्मान बढ़ाया।यह परंपरा गतिशील रही। नवम अधिशास्ता आचार्य तुलसी ने नारी की चेतना को विकसित करने में नए आयाम स्थापित किए। नयामोड़ आंदोलन से सुप्तता को मिटाया और विकास की नई उड़ान भरने का आकाश दिया। विकास मूल्यों के साथ हो यह उनकी विशेषप्रेरणा रही। पूर्व साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभा जी आचार्य श्री तुलसी की कृति है। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने उनको शासन माता केगौरवमयी स्थान पर आसीन किया था। वर्तमान नवम् साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभा जी को आचार्य श्री महाश्रमण जी ने नियुक्त कियाहै। महिलाओं में क्षमता भी होती है और अनेकों नैसर्गिक गुण भी। ममता, सहज वात्सलय, करुणा, पृथ्वी के समान सहिष्णुता, दृढ़संकल्प शक्ति भी विद्यमान रहते है। संस्कार निर्माण में महिलाओं की भूमिका विशिष्ट होती है। नारी और नर एक गाड़ी के 2 पहियें हैं ।दोनो एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। दोनों की एकरूपता ही पूर्ण विकास है। नारी सद्गुणों की खान हैं। वहीं नर भी नारायण से किसी से कम नहीं है। दोनों का युगल ही सृष्टि का सृजनहार है। यत्र नार्यस्तु पूज्यंते,रमन्ते तत्र देवता। नारी के अंदर बसे नारित्व के गुणों काध्यान आता है| वात्सल्य, स्नेह, ममता, दया, करुणा, बलिदान, सहनशीलता, लज्जा, हिम्मत, शील आदि अनेक गुणों को आत्मसातकिया हे नारित्व ने| इन सारे गुणों को धारण करने वाली समस्त नारी जाति को मेरा नमन|

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

न मुकरने वाला गवाह

प्रद्युम्न कुमार

भगवतपुर नामक एक गाँव था। जहाँ पर विभिन्न जातियों के लोग रहते थे। किन्तु गाँव में दो जातियो की संख्या अन्य की अपेक्षा अधिक थी। एक थी अहीर और दूसरी कुर्मी। गाँव का मज़रा काफी बड़ा था इस कारण से लगभग सभी के पास पर्याप्त मात्रा में जमीनें थी। जैसा कि देखा अक्सर देखा जाता है कि गाँवो में कुछ अलाल किसिम के लोग होते हैं तो भगवतपुर गाँव भी इसका अपवाद नहीं था। यह वे लोग थे जो अपनी सारी जमीन को बँटाई पर दे रखे थे और जो भी बटाईदार दे देता था उसी में सन्तोष भी कर लेते थे। या यूँ कहें कि सन्तोष नहीं करते तो करते ही क्या। गाँव में कुछ लोगों का चाक बाक चौकस बना हुआ था। जो थोड़े से लोग गरीब थे वे इन्ही से कर्ज पाती लेकर अपना गुज़र बसर किया करते थे। पर इस गाँव में एक खासियत यह थी कि लोग शादी विवाह या फिर अन्य कामकाज के समय एक दूसरे के दरवाजे जरूर जाया करते थे और यह भी उनसे यह भी पूँछते थे कि दादू कउनो कमती हो तो तनकिउ संकोच की जरूरत नही आय। इस तरह से जरूरतमन्दों को हौशला तो मिल ही जाता था साथ ही सभी के सहयोग से उनका कार्य भी अच्छे से निपट जाता था।

ऐसे ही समय बीत रहा था। सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था किन्तु एक दिन एक ऐसी घटना घटी जिसकी उम्मीद किसी को भी नहीं थी। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि पहले के जमाने में छोटे मोटे विवाद पंचायतों के माध्यम से ही निपटा लिए जाते थे। कभी कभार को छोड़कर पंचों के निर्णय को लोगों द्वारा स्वीकार कर लिया जाया करता था। भगवतपुर गाँव में कुर्मी विरादरी के चमन लाल और विरजू नाम के दो भाई रहते थे जिनमें चमन लाल के दो बेटे एक बेटी और विरजू के एक बेटा दो बेटी थीं। चमन लाल बन्दूक का अच्छा निशानची था। आसमान में उड़ती वाणियों या फिर हाड़ी पक्षी का शिकार बड़ी सहजता से किया करता था। जिसे देख सभी दंग रह जाते थे। आज तक कभी भी उसका निशाना चूका नहीं था। इस बात का गुरुर उसे हमेशा रहता था। वहीं विरजू का निशाना उतना अच्छा नहीं था। यह बात उस समय की है जब बाँदा के इस ग्रामीण इलाके में डकैतों का बोलबाला था। सन्तोषा ददुवा जैसे बड़े डकैतों के आतंक से सारा पाठा क्षेत्र थर्राता था। ऐसे में सरकार ने भी लोगों को उनकी रक्षा के लिहाज से बन्दूकों का लाइसेन्स सहजता से दे रही थी अतः स्वरक्षा के लिए बन्दूक का लाइसेंस होना एक आम सी बात हो गई थी। गाँव के एक दो घरों को छोड़कर लगभग सभी घरो में लाइसेंसी बन्दूकें हो गईं थी। भले ही इसके लिए उन्हे अपनी पैतृक जमीन के कुछ हिस्से को बेचना क्यूँ न पड़ा हो।

चमनलाल जो अपने आसपास के गाँवों में अक्सर पंचायतों में जाया करता था। उसको आस पास के गाँवों मे आदर के साथ पंचायतों में पंचायत के लिए बुलाया जाता था। भगवतपुर से चार -पाँच किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक गाँव महरट्ठा था जिसे आजकल मठा का पुरा बोला जाता है। मठा में चमन लाल को पंचायत के लिए बुलाया गया। पंचायत करने

की असल वजह यह थी कि दो भाइयों के बीच बंटवारा करवाना था। जिसमें पंचू का छोटा भाई रघुराज अपने भतीजे रघू जो पंचू का पुत्र था के बीच बंटवारा चाहता था। पंचायत के माध्यम से वह रघु के हिस्से आने आने वाली पाँच बखरियों में से तीन पर अपनी दावेदारी इस आधार पर कर रहा था कि उसके तीन पुत्र हैं जबकि उसके भाई पंचू के एक पुत्र रघू ही है। यदि रघुराज को रघू की तीन बखरियाँ पंचों द्वारा दिलवा दी जायें तो दो-दो उसके तीनो पुत्रों के लिए और दो बखरियाँ उसके रहने के लिए हो जायेंगी। लेकिन उसकी इस बात पर सभी पंच तो नहीं पर एक पंच चमनलाल जो रिश्ते में रघुराज का साला था ने रघुराज की तरफदारी की और कहा रघुराज को रघू की तीन बखरियाँ मिलनी ही चाहिए। रघू को यद्यपि यह निर्णय स्वीकार नहीं था फिर भी उसने पंचों से कहा आप सभी ने तर्क दिया कि उसके चाचा के तीन बेटे हैं हैं इसीलिए उसे रघू की तीन बखरियाँ मिलनी चाहिए। जबकि आप सभी अच्छे से जानते हैं कि मेरे पिता का मैं इकलौता पुत्र हूँ इसलिए आधे का हिस्सेदार हूँ। फिर भी मैं आप लोगों की बात मान लेता हूँ लेकिन इस बात के लिए मैं आप सभी पंचों से एक इकरार नामा लेना चाहूँगा कि भविष्य में यदि मेरे तीन नहीं पाँच बच्चे हुए तो पाँचों पंच एक-एक बखरी उन बच्चो के गुजारे के लिए देंगे। क्योंकि उनके हिस्से को आज आप लोगों द्वारा उसके चाचा रघुराज को दिला दिया गया है। रघू की बातें सुनकर पंच हक्का बक्का रह गये और उन्होने हाथ खड़े कर लिए। लेकिन कहते हैं न कि जबरा से जीत पाना इतना आसान नहीं होता है। अतः रघू के हिस्से में आई पाँच बखरियों में से तीन की जगह दो बखरियाँ रघुराज को दिला दी गई। रघू ने ईश्वर पर भरोसा करके इस निर्णय को स्वीकार कर लिया। पंचायत खत्म हुई लेकिन पंचों के द्वारा किये गये अन्याय का परिणाम मिलना अभी बाँकी था।

काफी समय बीत गया अब एक पंचायत भगवतपुर में चमनलाल और उनके दामाद के बीच होनी थी । मामला यह था कि चमनलाल और उसकी बेटी के पति अनिल ने बराबर-बराबर पैसे लगाकर एक एस्कार्ट ट्रैक्टर खरीदा था। किन्तु ट्रेक्टर के सारे कागजात चमन लाल के नाम थे। अनिल को यह नहीं

मालूम था कि उसका सगा ससुर एक दिन ट्रैक्टर में उसको हिस्सा देने से मना कर देगा। इसी बात को लेकर पंचायत थी जिसमे चमनलाल ने अपनी तरफ से रघुराज को बुलाया और दामाद अनिल ने रघू को बुलाया था। पहले के जमाने में पानी भी अधिक बरसता था। इतनी सड़को का जाल भी सभी जगह नहीं फैला था। अतः असाढ़, सावन, भादों के तीन महीनो में एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिए लग्गी या लाठी के सहारे जाना पड़ता था। क्योंकि दूसरे गाँव जाने वाले रास्तो में घोटई- घोटई भर पानी रहा करता था। रघू भी भादों के महीने में लाठी लेकर भगवतपुर पहुँचा तो बहुत से लोगों ने मजाक में कहा कि कउरहा आया है पंचायत करने। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि बच्चों को ननिहाल में अक्सर इसी नाम से पुकारा जाया करता है सो रघू ने भी इस बात का कोई बुरा नहीं माना।

यदि रघुराज को रघू की तीन बखरियाँ पंचों द्वारा दिलवा दी जायें तो दो-दो उसके तीनो पुत्रों के लिए और दो बखरियाँ उसके रहने के लिए हो जायेंगी। लेकिन उसकी इस बात पर सभी पंच तो नहीं पर एक पंच चमनलाल जो रिश्ते में रघुराज का साला था ने रघुराज की तरफदारी की और कहा रघुराज को रघू की तीन बखरियाँ मिलनी ही चाहिए।

ट्रैक्टर के आ जाने से दोनों लोगों की खेती जोती जाने लगी। कुछ समय तक तो सब कुछ ठीक रहा किन्तु समय बीतने के साथ ही चमनलाल को बेइमानी सूझी अतः उसने एक दिन अनिल से कहा महिमान ऐसा है कि अब से तुम्हारे खेतों की जुताई का तुम्हे पैसा लगा करेगा। यह सुन अनिल के तो होश ही उड़ गये । उसने कहा ऐसा क्यों? उसके जवाब में चमन लाल ने अनिल से कहा जो पैसा तुमने ट्रैक्टर लेने में लगाया था वह तो जुताई में पट गया। इस पर अनिल ने गॉव के कुछ बुर्जुगों से अपनी आप बीती कही तो उन्होने उसे पंचायत करने की सलाह दी। जो शायद अनिल को भी विवाद निपटाने का उचित माध्यम लगा। अनिल पंचायत की तैयारी ही कर रहा था कि चमन लाल ने उसके पहले ही पंचायत बुलाने का निर्णय ले लिया था और अपनी जान

पहिचान के लोगो को पंचायत में बुलाया था। इस बात की भनक जब रघू को लगी,तो उसने अनिल को बुलाकर कहा महिमान साहब यदि आपकी इजाजत हो तो आपकी पंचायत में मैं आपकी तरफ से रहना चाहूँगा। अनिल ने रुआसे स्वर में कहा भैया सब लोग तो उनके है आप क्या करेंगे? रघू ने उसे ढाढस बंधाया कि वह उसके साथ अन्याय नहीं होने देगा। अनिल के लिए वैसे भी मरता क्या न करता वाली स्थिति थी। अतः उसने जैसी आपकी मर्जी कहकर पंचायत में आने के लिए रघू को मंजूरी दे दी। रघू नियत दिन को भगवतपुर पंचायत में पहुँच गया। जब पंचायत बैठी तो पंचों के समक्ष दोनो पक्षों ने अपनी बातें रखी। पंचायत के पंचों ने दोनो पक्षों की बाते बड़े गौर से सुनी। कोई कुछ और बोल पाता उससे पहले ही रघू जो एक पंच की हैशियत से पंचायत में बैठा था ने चमन लाल से कहा मामा आप जब दूसरो के हिस्सा न होने पर भी उसे हिस्सा दिलाते हैं तो अब अपनी बारी आने पर अपनी ही बात से क्यों मुकर रहे हैं। ट्रैक्टर खरीदने में जब पैसा दोनों का बराबर-बराबर लगा है तो तुमने भी तो अपने खेतों की जुताई की और अनिल महिमान ने भी की है। ऐसे में उनका हिस्सा कैसे खत्म हो गया और आपका बना रहा। फिर यह तो तुम्हारे सगे दामाद हैं आप इन्हे इनका हिस्सा क्यों नहीं दे रहें हैं। अब चमनलाल को काटो तो खून नही। अतः अनिल को उसका हिस्सा चमन लाल को अनमने मन से ही सही देना पड़ा।

अभी कुछ समय ही बीता था कि चमनलाल और विरजू के खेत की मेड़ पर उगे हुए एक छोटे से बबूल को लेकर दोनो भाइयों के बीच विवाद हो गया। चमनलाल और उनके बेटे ननकउना का कहना था कि बबूल उनकी ओर है अतः उस पर उनका ही अधिकार है जैसा कि गाँवों में अक्सर इस तरह के छोटे मोटे विवाद होते रहना एक आम सी बात है। पर यहाँ पर भी वही बात थी। उस बबूल में ठीक से एक बोझ लकड़ी भी नही निकलती पर विवाद की जड़ तो था ही। यद्यपि विवाद में कोई दम नहीं थी फिर भी विवाद तो विवाद होता है कभी भी बड़ा रूप ले सकता है और कुछ ऐसा ही इस विवाद में भी हुआ। विरजू और उसके पुत्र रमाकान्त ने कहा कि तुम रस्सी लगाकर नाप लो यदि यह तुम्हारी तरफ हो तो तुम्हारा और यदि बीच मेड़ में हो तो इसमे हमारा हिस्सा भी होगा। धीरे -धीरे विवाद गहराता ही चला गया और एक स्थिति तो यह आ गई कि दोनों पक्ष अपनी -अपनी लाइसेन्सी बन्दूक लेकर आमने सामने आ गये। वो कहते हैं न कि होनी को कौन टाल सका है आज तक कि चमन लाल और विरजू टाल सकते अतः यहाँ भी वह टाली नहीं जा सकी। बात की बात में चमनलाल का बेटा ननकउना बन्दूक की नाल को अपने चाचा विरजू की तरफ तान दिया यह देखते ही विरजू के पुत्र रमाकान्त ने ननकउना को गोली मार दी वह वही पर ढेर हो गया। उसके हाथ से बन्दूक गिर गई जिसे उठाने का प्रयास चमन लाल करने लगा तो जैसे ही चमन लाल बन्दूक की ओर झुका वैसे ही रमाकान्त ने दूसरी गोली भी दाग दी इस तरह से चमन लाल भी धराशायी हो गया । इस दोहरे हत्याकाण्ड ने गाँव में भय का माहौल बना दिया था।

इस बात की सूचना जैसे ही हलके के थाने को मिली तो दरोगा हमराही पुलिस के साथ भगवतपुर आया और दोनो बाप बेटों को हथकड़ी डालकर पकड़कर ले गया। दोनो को जेल भेज दिया गया जहाँ पर दोनों को आजीवन कारावास की सजा हुई। इस बीच गाँव का माहौल भी काफी तेजी से बदल चुका था। बीस साल का समय भी तो कोई कम थोड़ा होता है। एक युग का खात्मा हो जाता है। अब रघू का भी व्याह हो गया था। वह भी तीन पुत्र एक पुत्री का पिता बन चुका था। कस्बे में उसका अच्छा कारोबार चल रहा था बेटी की शादी हो चुकी थी बड़े बेटे से एक पुत्री भी थी। गाँव में चाचा लोग अब भी उसकी समद्धि से भी जले भुने रहते थे। वो कहते हैं जाको राखे साइयाँ, मार सके ना कोय वाली कहावत यहाँ पर चरितार्थ हो रही थी। लेकिन रघुराज कुछ कर सकने की स्थिति में नहीं था। चाचा रघुराज के पौत्र व नाती भी बेकारी का जीवन जी रहे थे। जिसे देख रघू को यद्यपि मलाल होता था कि एक की सजा आखिरकार पूरे पारिवार को क्यों मिल रही है? किन्तु मन मे एक तरह का सन्तोष भी होता था कि यह सब उसके ही सन्तोष का फल है जो आज वह इस मुकाम पर है। उसके चाचा का परिवार उस स्थिति में । उधर विरजू और उसके बेटे की सजा पूरी होने में यद्यपि अभी कुछ समय बाकी था किन्तु सरकार की सज़ा माफी योजना के तहत इस स्वतंत्रता दिवस के पूर्व ही उन्हे जेल से रिहा कर दिया गया था।

रघू अपने घर के सामने एक दिन धूप सेंक रहा था तभी विरजू वहाँ आया। लम्बी लम्बी पकी हुई दाढ़ियों और उस पर बीस वरिस का लम्बा अन्तराल । इतने लम्बे समय में अच्छे-अच्छे चेहरे बदल जाया करते हैं तो फिर यह तो जेल यात्रा करके आया हुआ था। सो रघू को पहिचानने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी या यूँ कहें कि उसने उस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लेकिन जब विरजू ने कहा दादू पहिचाने कि न पहिचाने तो जरूर उसने गौर से उसके चेहरे की ओर देखा तब जाकर बोला पहिचाना तभी विरजू ने कहा तो अन्दर आने को नहीं कहोगे। रघू ने कहा क्यों नहीं? आओ अन्दर बैठते हैं इस प्रकार कहकर कुर्सी उसकी ओर बढ़ा दी। हाल चाल पूंछने के पश्चात उसने जेल में रहते हुए अपनी सम्पूर्ण कहानी बताई कि उसे जेल में कितनी परेशानी कितना आराम मिला। इसके बाद उसने कहा दादू मुझसे या मेरे परिवार से जो गलती हो गई थी उसको अब तो माफ कर दो। ईश्वर ने हमें हमारे किये की काफी सजा दे चुका है। किन्तु रघू ने कहा कि मामा मैं कैसे माफ कर दूँ? ठीक है तुम अपना रास्ता चलो मैं अपना रास्ता। मेरा तुमसे कुछ भी लेना देना नहीं है।

ऐसी ही चर्चा के दौरान एक टीस रघू के मन में अब भी उठ रही थी वह यह थी कि समय आदमी से क्या से क्या करा देता मनुष्य तो इसका निमित्त मात्र होता है,और फूटे ढोल सरीखे बजता रहता है। उसने कहा आज भी जब कभी मैं भगवतपुर जाता हूँ ओर मेड़ के बीचोबीच लगे हुए उस बबूल के पेड़ को देखता हूँ तो उस समय घटित हुआ वह दृश्य बरबस मेरे जेहन में कौंध उठता है। आश्चर्य तो तब और अधिक हो उठता है जब मैं देखता हूँ कि सिर्फ जिस एक बबूल के पेड़ की वजह से इतनी भीषण हृदय विदारिणी घटना घटी है वह तो आज भी कभी न मुकरने वाले गवाह की तरह अविचलित खड़ा हुआ है । दो हत्याओं का गवाह वह बबूल उतना का ही उतना आज भी है जो मेड़ के बीचोबीच खूंथ सरीखे खड़ा है। यद्यपि इसका कारण बकरियों का उसकी पत्तियों का चर जाना है या फिर लोगों द्वारा उसकी ढांखे काट दिया जाना है। पर आज भी वह मुझे अपने बयान से न मुकरने वाले गवाह की भाँति अडिग खड़ा महसूस होता है।

लघुकथा

पानी

नीना सिन्हा

"रधवा के माई! ओलावृष्टि और बेमौसम की बरसात से सारी फसल खराब हो गई है। क्यों न शहर चलें? दिहाड़ी मज़दूरी मिल जाएगी। साथी ने रहने की जगह खोज रखी है। बच्चों को भूखा कैसे रखें?"

"ठीके है रधवा के बापू! और कुच्छो नहीं सूझ रहा है?"

दोपहर होते-होते सीमित गृहस्थी समेटकर पास के शहर जा पहुँचे। अंधियारा कमरा एक छोटी सी बस्ती में, धूल और गंदगी से भरा हुआ; एक कोने में सामान जमाया, बेटे को कहा कि खाली डिब्बों में कुछ पानी भर लाए, ताकि कमरा धुल सके।

"माँ! इतने सारे डिब्बों में पानी मैं अकेला कैसे ला सकूँगा?"

"तू चल बेटा! तेरी बहन को पीछे से भेजती हूँ, अभी मेरी मदद कर रही है। झाड़ू लगाकर धोने से ही कमरा रात में सोने योग्य होगा।"

वह नल पर गया, सप्लाई का पानी जा चुका था। पता लगा, आधा किलोमीटर दूरी पर एक चापाकल है।

"बच्चे! अगर जरूरी हो चापाकल से ले आओ, नहीं तो शाम को पानी आता है।"किसी ने सलाह दी।

उसने वापस जाकर माँ को बताया और चल पड़ा। रास्ते में नजर एक वाटर पार्क पर पड़ी; एक फव्वारे से पानी तेजी से ऊपर जाकर वापस गिर रहा था। गिरते पानी में कुछ लोग उछल कूद मचा कर नहा रहे थे। ऐसी जगह सिर्फ टीवी पर देखी थी।

गार्ड से पूछा, "चाचा! क्या यहाँ से पानी ले सकता हूँ?"

"नहीं बच्चे! यह मनोरंजन की जगह है, पानी लेने की नहीं?"

"मुझे आधा किलोमीटर पैदल चलना पड़ेगा। मुझे पानी लेने दीजिए।"

"अंदर जाने की फीस ढाई सौ है, दे सकते हो? यहाँ चारों ओर सीसीटीवी कैमरे लगे हैं, गलती होते ही मेरी नौकरी चली जाएगी।"

"जब बस्ती के नल में पानी नहीं आ रहा है, तो यहाँ इतना सारा पानी कैसे आ रहा है?"

"बच्चे! ये अमीर लोगों की जगह है? यहाँ पानी जमा करके रखा जाता है।"

"चाचा! क्या भगवान भी अमीर-गरीब का फर्क करके पानी देते हैं? हमारी बस्ती में नल सूखा है और अमीरों के नल से पानी इतनी तेजी से आ रहा है, क्यों?"

तब तक माँ-बहन पीछे से पहुँच गई, उसे कानों से घसीटते हुए घर की ओर ले गई, पर बच्चे का दिलो-दिमाग अभी भी अपने प्रश्न का उत्तर ढूँढने में लगा हुआ था!

सरहद

देशों की तरह
किताबों की
कोई सरहद नही होती
वो यहाँ वहाँ
दिख ही जाती हैं I
बेतरतीब सी रखी
किताबें प्रमाण हैं ,
की वो
पढ़ी भी जाती हैं ;
तो कहीं
शो केस में
तरतीब से
सजी सँवरी
पढ़ने को
आमंत्रित करती हुई सी
शो केस की
शोभा बढ़ाती सी
प्रतीक्षारत....
किताबों का
कोई धर्म
जाति या
संप्रदाय
भी तो नही होता
ना ही उम्र ,लिंग भेद
ना अमीर गरीब
का अंतर
वो तो अपने में
सहेजे समेटे ज्ञान
को बाँटने को
आतुर
लालायित करती
सर्वस्व वारने को
तत्पर
उनके मौन निमंत्रण
को जिसने समझ लिया
उसने रस लिया
क्योंकि
किताबों की
कोई सरहद नहीं होती ।

डॉ मालती महर्षि

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, भोजपुरी अध्ययन केंद्र में 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' पर परिचर्चा :

सांस्कृतिक विरासत में मातृभाषा का अहम योगदान - पोस्टमास्टर जनरल कृष्ण कुमार यादव

हमें अपनी मातृभाषाओं की ओर लौटना होगा। दुनिया की ज्ञान परंपरा से जुड़ने के लिए अन्य भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए, लेकिन मातृभाषा की अपनी अलग ही अहमियत है। मातृभाषा 'हम' की अवधारणा पर कार्य करती है 'अहम्' की नहीं जो कि वसुधैव कुटुम्बकम का मूल प्राण तत्व है। उक्त उद्गार चर्चित साहित्यकार एवं वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' पर भोजपुरी अध्ययन केंद्र में आयोजित 'मौलिकता और मातृभाषा' विषय पर आयोजित परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये।

पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि, अपनी विरासत को संरक्षित रखने और अगली पीढ़ियों तक सभ्यता और संस्कृति की थाती पहुंचाने में मातृभाषा का योगदान अतुलनीय है। भारत में भाषाओं और बोलियों की बहुलता है, अत: इनके बीच सामंजस्य और समन्वय की आवश्यकता है। अमृत काल के दौर में एक दूसरे के सम्मान से हम अपनी मातृभाषाओं का संरक्षण और संवर्द्धन कर सकते हैं। मातृभाषा के विकास के लिए इसको रोजगार और व्यापार से जोड़ने की जरूरत है।

मुख्य अतिथि पद्मभूषण प्रो. देवी प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि भाषा के माध्यम से हमें यथार्थ का बोध होता है कि हम क्या हैं तथा मातृभाषा के माध्यम से हमें अपने यथार्थ व्यक्तित्व का बोध होता है। व्यक्ति के मौलिक भाव उसके मौलिक विचार उसे उसकी अपनी मातृभाषा में ही आते हैं, उसके नवीन ज्ञान के स्रोत उसकी मातृभाषा से प्रस्फुटित होते हैं। मातृभाषा नवीन मार्ग दिखलाती है।

मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य देते हुए सोच-विचार पत्रिका के सम्पादक डॉ. जितेंद्र नाथ मिश्र ने भाषा का अर्थ लक्षण बताया जिसमें उसका अस्तित्व उसकी अस्मिता आदि सम्मिलित होते हैं जिससे वह व्यक्ति को प्रकाशित करती है। मातृभाषा व्यक्ति के समस्त को समाज के सम्मुख प्रस्तुत करती है। मातृभाषा संस्कृति का लक्षण है। उसमें मौलिकता, क्षमता तथा प्रतिभा है।

स्वागत वक्तव्य देते हुए वरिष्ठ कवि व केंद्र समन्वयक प्रो. श्रीप्रकाश शुक्ल ने कहा कि भोजपुरी को मान्यता दिलाने के प्रयास 1960 से शुरू हुए थे लेकिन अभी तक उसे अपना सम्मान नहीं मिल पाया है अतः भोजपुरी को उसको अपना सम्मान मिलना चाहिए तथा 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के साथ साथ एक 'राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' की भी घोषणा होनी चाहिए। डॉ. शुक्ल ने कहा कि मौलिक चिंतन स्वाभाविक, स्वाधीन तथा स्वविवेक से तय भाषा में ही हो सकता है अर्थात उसमें कोई औपनिवेशिक दबाव नहीं हो और मातृभाषाओं में यह शक्ति होती है। मातृभाषा अन्य नहीं अनन्य होती है, वह स्वाधीनता और विवेक से युक्त होती है। विशिष्ट वक्ता अध्यक्ष वैदिक दर्शन विभाग प्रो. श्रीकृष्ण त्रिपाठी ने कहा कि मातृभाषा वह भाषा है जो एक बच्चे को उसकी माँ सिखाती है। मातृभाषा हमारे संस्कृति एवं संस्कारों को लेकर चलती है तथा उससे बंधुत्व व प्रेम बढ़ता है। मातृभाषा का प्रयोग, उसका परिष्कार और विकास ही देश को प्रतिष्ठा दिलाता है।

हिंदी विभाग में सहायक आचार्य डॉ. अशोक ज्योति ने कहा कि मातृभाषा में वह शक्ति है जो राष्ट्रों का निर्माण कर सकती है। बांग्लादेश का निर्माण हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं। व्यक्ति को अपने समाज का व्यवहार अपनी मातृभाषा में करना चाहिए तथा अपनी मातृभाषा के व्यवहार में हमें हीनता का बोध बिल्कुल भी नहीं होना चाहिए। भाषा के प्रति जो समाज जितना चैतन्य रहेगा वो समाज अपनी जड़ों से उतना ही मजबूत होगा।

कार्यक्रम का संचालन केंद्र की शोधार्थी शिखा सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन उदय प्रताप पाल ने किया। कार्यक्रम में केंद्र के संगीत शोधार्थियों ने रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' तथा लोकगीत 'रेलिया बैरन' की सांगीतिक प्रस्तुति भी दी। इस अवसर पर प्रो. देवेश त्रिपाठी, प्रो.धनंजय पाण्डेय, डॉ. प्रभात कुमार मिश्र, डॉ. विवेक सिंह, डॉ. महेंद्र कुशवाहा, डॉ. प्रीति त्रिपाठी, डॉ विंध्याचल यादव के साथ तमाम साहित्यकार, प्राध्यापक, बुद्धिजीवी और शोधार्थी उपस्थिति रहे।

-अक्षत पांडेय, हिंदी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

शालिग्राम में राम जी

"योगिन: अस्मिन सा रामं उच्यते "योगी ध्यान में जिस शून्य में रमण करते हैं उसे राम कहते हैं।* वह अगम अपार और अविनाशी है। चराचर का नियंता, पालक, तारक तथा घालक है। वही तो राम है। जो जीव मात्र में प्राणवंत का आलोक है वही सत्यत: परमसत्ता का अंश प्रकाश है। बाबा गोस्वामी तुलसी के अनुसार-

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।.....

जन्म से मृत्यु पर्यंत राम अंग-संग हैं। राम मात्र एक नाम नहीं वरन् जीवन दर्शन है। मानसकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने भगवान राम को महाकाव्य श्रीमद् रामचरित मानस में मर्यादा के आदर्श पुरुष के रूप में निरुपित एवं परिभाषित किया है। राम शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की दो धातुओं रम् और घम से हुई है। रम् का अर्थ रमना अथवा निहित होना है जबकि घम का अर्थ है ब्रह्मांड का रिक्त स्थान। अत: राम का पूर्ण अर्थ "ब्रह्मांड में निहित या रमा हुआ है, अर्थात, ब्रह्मांड में स्वयं सर्वोच्च ब्रह्म निवास करता है।

अभिवादन में हम दो बार राम-राम शब्द का उच्चारण करते हैं। इसके पीछे वैदिक कारण है कि - हिन्दी वर्णमाला का 27वां वर्ण "र" है, "आ "द्वितीय वर्ण तथा 'म' .25 वां वर्ण है। इन सबका योग 27+2+25=54 (एक राम का योग) है। जब हम दो बार राम (54+54=108) बोलते हैं तो योग 108 हो जाता है जोकि पूर्ण प्रकाम ब्रह्म का द्योतक है। इसी कारण हमें 108 बार जप करने का विधान बताया गया है। किन्तु राम-राम कह देने से यह प्रक्रिया सुतह पूर्ण हो जाती है राम लोक के देव पुरुष हैं। जो लौकिक जीवन का आदर्श जीवनीय पद्धति का

मूल और जीव की उत्पत्ति का कारण भी। राम जीवन हैं , आसरा और आश्रय हैं, असहाय की लकुटि के संग ही सफलता का परिणाम है। समग्रतः *"हारे के हरि राम हैं"*।

एक लम्बी प्रतीक्षा के बाद सुदीर्घ न्यायिक प्रक्रिया के बीच गुजरे विवाद की जय का प्रासाद है अयोध्या में निर्माणाधीन श्रीरामलला मंदिर। लगभग पांच सौ वर्षों के कालखण्ड ने अनेक उतार चढ़ावों को अपना साक्षी बनाया है। सनातनियों को अपने आराध्य का अर्चन करने का अधिकार मिला। मंदिर में श्री रामलला के विग्रह के साथ ही पूर्ण रामदरबार (राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) की मूर्तियाँ उत्कीर्ण करने के हेतु उपयुक्त पत्थर की तलाश आरम्भ हुई। उच्च स्तरीय मंदिर निर्माण से संबंधित उच्च समिति ने तय किया कि काली गण्डकी नदी में प्राप्य शालिग्राम (दूसरा नाम सालग्राम) पत्थर से विग्रहों का आकर्षक कलात्मक निर्माण किया जाए। चूंकि यह पत्थर अन्य पत्थर की अपेक्षा मजबूत एवं आध्यात्मिक महत्व का है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार इस संबध मे बहुश्रुत कथा प्रचलित है। धार्मिक ग्रंथों में माता तुलसी तथा भगवान शालिग्राम (विष्णु श्रीहरि) की चर्चा है। जलंधर नामक दैत्य ने माता पार्वती को अपनी पत्नी बनाने के लिए कैलाश पर्वत पर आक्रमण कर दिया। वहीं दूसरी ओर जलंधर असुर को बचाने के लिए उसकी पत्नी वृंदा ने तपस्या आरम्भ कर दी। इस तपस्या से देवगण चिंतित होने लगे। सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में गए।भगवान विष्णु ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करते हुए, देवों को अभयदान दिया।

भगवान विष्णु ने जलंधर का स्वरूप धारण करके वृंदा के समक्ष पहुँच गए। वृंदा ने अपने समक्ष अपने पति जलंधर को देखकर तपस्या त्याग दी। इसी के साथ ही उसका पात्य रक्षा व्रत की तपस्या खंडित हो गयी। उधर जलंधर का वध हो गया। जैसे ही इस छल का भेद खुला तो आवेश में आकर वृंदा भगवान विष्णु को भूलोक पर वास करने का शाप दे दिया।बैकुण्ठ के समस्त देवगण वृंदा के पास पहुँचे।उससे क्षमा याचना करते हुए भगवान विष्णु शाप मुक्त करने का आग्रह किया। वृंदा ने भगवान विष्णु को क्षमा तो कर दिया किन्तु स्वयं को अग्नि में समर्पित कर भस्मभूत हो गयी। कहा जाता है उसी भस्म से

माता तुलसी का प्राकट्य हुआ।

तुलसी ने घोर तपस्या की तो श्रीहरि ने वरदान दिया कि अब तुम काली गण्डकी के रूप में जानी जाओगी और यहीं शालिग्राम (सालिग्राम) स्वरूप में मैं विराजमान रहूँगा। भगवान शालिग्राम और तुलसी का विवाह सम्पन्न हुआ। मान्यता है कि जहाँ शालिग्राम का पूजन अर्चन होता है वहाँ माता लक्ष्मी स्वयं निवास करती हैं। इहलोक में शंख को ब्रह्मा, शिवलिंग को शंकर तथा शालिग्राम को विष्णुजी का प्रतीक माना गया है। शालिग्राम केवल मुक्ति क्षेत्र तथा गण्डकी नदी (नेपाल) में ही सुलभ हैं। यह श्याम, नील, भूरे तथा सुवर्णी हो सकते हैं। इसमें स्वर्णिम आभ शालिग्राम दुर्लभ हैं।

श्री राम मंदिर निर्माण समिति की उत्तर प्रदेश ,भारत सरकार तथा नेपाल सरकार के मध्य २वर्ष पर्यंत चली मंत्रणा उपरांत मूर्ति निर्माण हेतु शालिग्राम शिला दान पर सहमति बनी। शिलाओं की खोज शुरू हुई। 26 तथा 14 टन भार की दो शिलाएं उपयुक्त पायीं गई। जिन्हें फरवरी 2023 के प्रथम सप्ताह में नेपाल के जानकी मंदिर के महंत तथा पूर्व उप प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वाहन पूजा अर्चन पश्चात गण्डक नदी वाहनों द्वारा रवाना हुई। यात्रा पथ में हजारों लाखों श्रद्धालुओं ने इन शिलाओं में अपने आराध्य भगवान राम जी को सम्मुख पाया । मानों भगवान स्वयं भक्त के द्वार पर कृतार्थ करने आए है। यह यात्रा पथ वहाँ सुनिश्चित किया गया जहाँ से त्रेतायुग में भगवान रामजी दुलहा बनकर मैया सीताजी से पाणिग्रहण करके अयोध्या में मंगल किया था। यह यात्रा मिथलांचल और पूर्वांचल के गाँव-गाँव, नगर, कस्बा के मध्य होकर गुजरी। क्या बाल-अबाल, क्या वृद्ध-युवक, क्या उच्च-अंतज्य, क्या जाति -धर्म, क्या अगड़े - पिछड़े सब एकसार, सब भाव विह्वल भक्त अपने आराध्य के दर्शन का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे थे। किसी के हाथ में पूजन सामग्री से परिपूर्ण थाली, दान हेतु वस्त्रादि तो वहीं निर्बलों अनाथों के हाथ पुष्प माल और पुष्प पांखुरी लिए था। कोई भी रीते हाथ अपने रामजी पास नहीं जाना चाह रहा था। मनकाम्य भी तो बस यही था -

क्या लागे मेरा.....तेरा तुझको अर्पण.....

बस एक मोक्ष कामना का भाव। शीत की गलन में राजमार्ग के दोनों किनारे पनही विहीन लाखों का जगह-जगह विशाल जनसमूह सागर न भेद विभेद, न धक्का रेला, न होड़ न प्रदर्शन इस अटूट निश्छल भक्ति भाव राम जी से संयुज्य कर रहा था।

इस जनसागर का भक्तिभाव और अपने आराध्य में संलग्न आस्था राजनीति के छद्म चेहरे और कुत्सित प्रलाप को मुँह चिढ़ा रही थी। भगवान राम जी को समर्पित जयघोष उन पर भी भारी था जिन्हें रामचरित मानस तथा सनातनी ग्रंथ जलाने के साथ ही बाबा तुलसी सहित ब्राम्हणों को अत्यंत निकिष्ट बकने से भी संकोच नहीं। आस्था के सम्मुख कुत्सित राजनीति घुटने के बल दिखा। लक्ष्य साधने वालों को यद्यपि पदोन्नति का पुरुस्कार मिल गया हो, परन्तु आम जनमानस के सामने अपना चेहरा शायद ही दिखा पाएँ। समय किसी को क्षमा नहीं करता है। वह अपनी वसूली ब्याज सहित करता है। बस समय लगता है। दोनों शिलाएं अयोध्या में मंदिर समिति को मिथिला बोली में लिखित संधिपत्र के साथ मूर्ति निर्माण हेतु सुपुर्द कर दिया गया है। सत्ता पक्ष और विपक्ष को निगाहें अब सियासी गणित के भजन फल पर है। जहाँ सत्तापक्ष अपना पलड़ा भारी देख रहा है वहीं जन मानस का आस्था से खिलवाड़ पर चोट के कारण आक्रोश अंकन करने योग्य है। बस इन्ही शब्दों के साथ-

"रामजी तन, मन में, खन में कटा में और जन-जन में.....

डॉ रघुनंदन प्रसाद दीक्षित 'प्रखर'

ढेंकुरी पर कौआ

ढेंकुर की पत्नी का नाम ढेंकुरी है। नए लोग इनके विषय में नहीं जानते हैं। पहले दो तरह के कुएँ होते थे। एक खेतों में सिंचाई का दूसरा पीने और रोजमर्रा के निस्तार के लिए छोटा, संकरा कूप। इसे लोग कुइयाँ कहते थे। सिंचाई के लिए बने चौड़े गहरे और बड़े कूप को इदारा या कुआं कहते थे। इदारे से जल निकासी में प्रयुक्त लकड़ी के संयंत्र को ढेंकुर तथा आम निस्तार के कूप में ढेंकुरी लगाई जाती थी। पानी निकालने के लकड़ी के इस यंत्र में एक तरफ़ रस्सी से बालटी या डोल बँधा रहता है और दूसरी तरफ़ पत्थर बँधा रहता या मिट्टी का लोंदा लगाकर भार लगाते थे।

ढेंकुर से पानी ढीलने वाला व्यक्ति अपने शारीरिक हावभाव से खुद को शक्तिशाली प्रकट करता। जब ढेंकुर में सिरे में रस्सी के सहारे बंधी बाल्टी कुएँ के भीतर पानी भरने जाती तब रस्सी को बलपूर्वक नीचे की तरफ खींचना होता था। कुएँ की पाट पर बैठा हुआ व्यक्ति तब हाथों को फुर्ती से चलाकर देखने वालों को आकर्षित करने लगता था। ढेंकुर की कृपा से बड़ी उम्र के लड़कों का विवाह तक हो गया। जब लकड़ी पक्ष के लोग लड़के को ढेंकुर ढीलते देखे तो प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाते थर। लड़के के पिता जी मौके को भाँपकर बात में चमकीला मुलम्मा चढ़ाने से कब चूकते, 'अरे शाह जी, यह अकेले दम दो एकड़ का खेत सींच डालता है। गए साल दो सौ बोरा धान हुई और इतना ही गेंहू निकला। घर में खाने-पीने की कोई कमी नहीं। दूध-घी की कोई कमी है, आपकी दुआ से काली भैंस अगला बच्चा देने तक दूध देती है। लड़की पक्ष वाले आँखों से इशारे फेंक कर शादी 'ओक्के' कर देते। तो ऐसी थी ढेंकुर की किरपा साहेब।

रामानुज अनुज

यही नहीं सुबह-सबेरे जब ढेंकुर से फसलों की सिंचाई चलती तब अद्भुत संगीत की चौगोलबन्दी पूरे वातावरण में गूँजती। ऐसा संगीत अब धरती पर नहीं सुना जा सकता है। खेद का विषय है अब की पीढ़ी नलजल योजना में फँसकर, रस्सी, बाल्टी, ढेंकुर-ढेंकुरी जैसे पुराने कूप-जल निकासी यंत्रों को भूल गए हैं। वैसे ढेंकुरी की मृत्यु के पच्चीस साल ही बीते हैं लेकिन यहाँ कौन किसको याद रखता है, अब तो पिता जी को भी मृत्यु के बाद तेरह दिन तक याद रखना मुश्किल पड़ता है। अच्छा है, स्कूल में, नौकरी में, पिता जी के नाम की जरूरत पड़ती है वर्ना पिता जी के नाम का कोई लेख न मिलता, जीवित होते हुए भी मरे मान

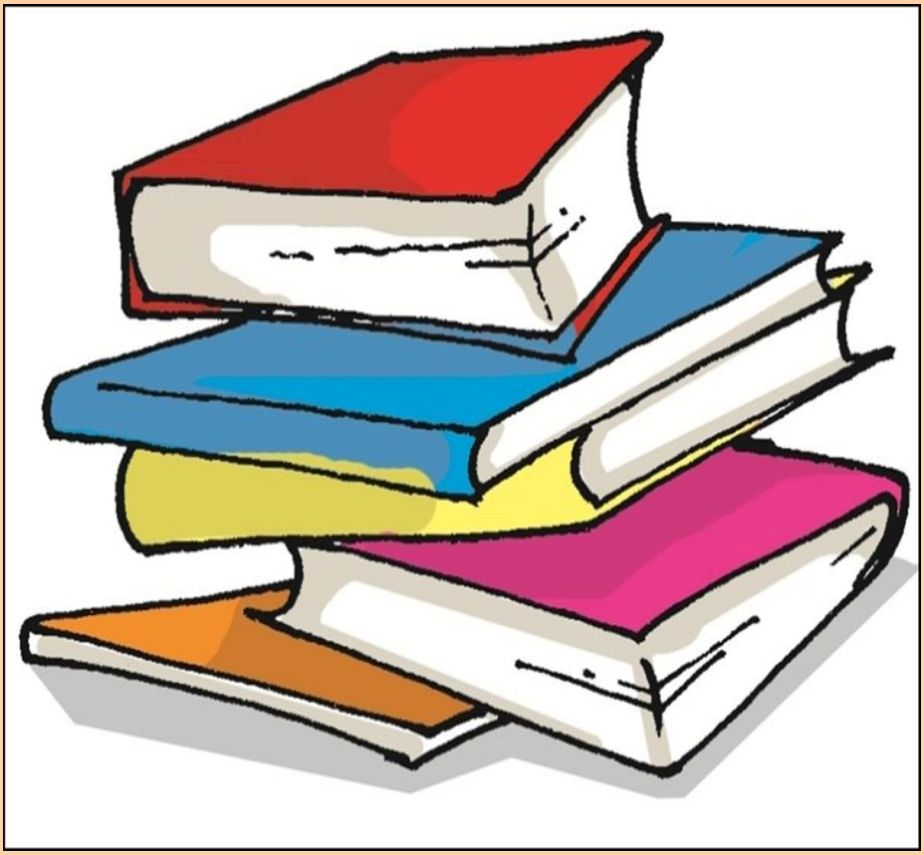

लिए जाते। प्रत्येक व्यक्ति के नाम के साथ पिताजी फेवीक्विक लगाकर चिपके हैं। उन्हें हटाना आसान नहीं है। जैसे तेजभान पुत्र माताबदल, माताबदल कभी भी तेजभान को छोड़ने वाले नहीं हैं।

सभी ऐसे नहीं होते हैं यह श्रवण कुमार की धरती है, वीरों से धरती खाली नहीं हो सकती। मूली प्रसाद जी जैसे साहित्यकार भी हैं जो पिता जी की याद में एक किताब ही रच डाली है। मूली प्रसाद का लिखा खोजी उपन्यास प्रकाशित हुआ है, पृष्ठ खोलते ही बड़ी-बड़ी मूँछ वाली एक तस्वीर दिखती है, जिसके नीचे स्वर्गीय पिता गाजर सिंह को सादर-आदर समर्पित है। धन्य हैं ऐसे पुत्र जो पिता को याद रखते हैं।

किताब का नाम है, 'ढेंकुरी पर कौआ।' बड़े ही अच्छी सोच के व्यक्ति हैं, मूली जी, ढेंकुरी के साथ कौवे का भी एक साथ क्रियाकर्म कर दिए। कौवे के बंशज अभी पूरी तरह से विलुप्त नहीं हुए हैं। वे पढ़े-लिखे लोगों की तरह नियोजित परिवार रखने लगे हैं, इसलिए उनकी संख्या कम है। 'हम दो, हमारे दो नहीं, एक' के नियम को कड़ाई के साथ मानने वाले कृष्णवंशी पक्षी हैं। यहाँ पर मूली प्रसाद से भयानक चूक हुई है। जिंदा प्रजाति को भी ढेंकुरी पर बैठाने लगे। एक संकट उनके सिर में आ सकता है। कहीं कौवे नाराज होकर मूली प्रसाद को हड़काने न लगें---'मूली परसाद, अब न ढेंकुर है न उसकी घर वाली ढेंकुरी है, तुम्हें मालुम नहीं है कि हम मरी हुई चीजों पर नहीं बैठते। अब हम तुम्हारे सिर में बैठकर काँव-काँव करेंगे।

वैसे कौवों का कोई ठिकाना नहीं कि कब कहाँ पर बैठ जाएँ। वे कुदरती हवाई यात्री हैं। उड़कर कहीं भी बैठ सकते है, इमली का सूखा ठूँठ और आदमी का सिर इनके लिए एक जैसा है। पुराने समय में कौवे का सिर पर बैठना महाअशुभ माना जाता था। बहुत नाटक-टिटिम्मा के बाद अशुभता से मुक्ति मिलती थी। किसी नई बहू के सिर में बैठने पर उसके मायके चिट्ठी पठानी होती थी, 'समधिन साहब! आपकी बिटिया की मौत हो गई है।' चिट्ठी पढ़वाकर माँ-बाप, भाई, परिवारजन, शोक में रोते-विलखते, गाँव के सयाने समझाते, रोओ नहीं, उसकी जिनगी ऐतनय रही, रोए से का उआ जी उठी।'

कोई न कोई समझदार भी होता आया है, जद्यपि समझदार लोग हर काल खण्ड में दाल में नमक की तरह अल्प रहे हैं। वह आता फिर से उसके सामने चिट्ठी खोली जाती, वह झट से आँखें चिट्ठी के नीचे टिकाकर पढ़ लेता। नीचे नकलची परीक्षार्थियों की चुटका भाषा में इबारत लिखा होता, 'आपकी लड़की मरी नहीं आए, मूड़ी मा कौआ बैठा है, दोख मिटावय निमित्त चिट्ठी पठाई गई। शेष शुभ, हिआँ कुशल सब भांत भिलाई। हुआँ कुशल राखें रघुराई।'

मायके वालों का शोक मिट जाता, खुशी छा जाती जैसे तेज सर्दी में आँच वाली धूप आ गई हो। मुरझाए चेहरे गदगद हो जाते। भुइयां बाबा में नारियल फोड़कर प्रसाद बाँटा जाता।

कौवे का सिर में बैठना कभी-कभी अत्यंत शुभ भी होता था। एक नेता जी चुनाव में खड़े थे। कहाँ खड़े थे, क्यों खड़े थे यह तो उन्हें खुद ही पता नहीं है। यूँ समझिए बस ठूँठ की तरह खड़े थे, तभी उनके सिर में पक्षीराज बैठकर बीट कर उड़ गए। यकीन मानिए उस चुनाव में वे भारी मतों से विजयी घोषित हुए। कौवे करामाती पक्षी हैं, नहीं मानते हैं तो अब मान लीजिए।

बुंदेलखंड और बघेलखण्ड की धरती पर नई बहुओं के लिए कौआ संदेशवाहक है। 'उठा धना बोल गयो मगरे में कौवा। लगत तोहरे मैके से आवा बलउआ।' कागपुराण पर बहुत बहस हो गई, अब आते हैं मूल विषय पर---यानी मूली प्रसाद के खोजी उपन्यास 'ढेंकुरी पर कौआ' पर'।

पहले छोटी भूमिका, 'जब किसी की नई पुस्तक छपती है, तब वह क्या-क्या नहीं करता। प्रथम, हजारों रुपये खर्च कर कुछ रटे-रटाये तोतों से भाषण करवाता है, वह उनकी जी हुजूरी में इतना झुकता है कि साल भर कमर दुखती है। कुछ विनम्रता में इतना झुकते हैं कि दोबारा से कभी सीधे खड़े नहीं हो पाते हैं। फिर न्यूज बनती है। अखबार वालों की कृपादृष्टि हुई तो छाप दिए, वरना रद्दी की टोकरी में, तस्वीर और भाषण, धूल खाइए प्रेम से। यह कष्टनीय प्रक्रिया को विमोचन या लोकार्पण कहते हैं।

यहाँ किताब का कम लेखक के झोलदार ख़लीसे का अधिक लोकार्पण हो जाता है।

'अब आगे का हाल और बेहाल, बेचारा वह सोशल साइट पर अमेज़न की लिंक के साथ इस प्रत्याशा में सचित्र पोस्ट डालता है कि कोई पाठक तरस खाकर शायद किताब खरीदे, परंतु बेदर्द पाठक, बधाई, शुभकामनाएं लिखकर कचूमर ही निकाल देता है।

अंततः पुराने विवाह घर में पुस्तक विमोचन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि को छोड़कर सभी विद्वान वक्ता आ गए थे। बार-बार जेल की दीवार फाँदकर भागे हुए मुजरिम की तरह उनकी तलाशी की जा रही थी। प्रश्न, सुझाव और उत्तर एक साथ आने लगे। कोई कहता, 'फोन कर उनका पता करो। सुझाव आता, 'किसी को भेजकर पता करवाना सही रहेगा।'

अंततः नाक में रुमाल दबाए हुए कार में चढ़कर मुख्य अथिति जी पधारे, उनके खैरमकदम में पंडाल में बैठे हुए उठकर दौड़ चले। दौड़ें क्यों न, मुख्य अतिथि भले मुख्यमंत्री नहीं थे, किंतु योग्यता तो रखते ही थे। ऐसे व्यक्ति के स्वागत में दौड़ना ही चाहिए। वे आते ही माइक पकड़े कार्यक्रम के सूत्रधार से बोले, 'भई! लंबी खींचने वालों को मेरे जाने के बाद बुलाना। आप किताब खुलने की फोटो के बाद डायरेक्ट मेरा भाषण करा देना।' सूत्रधार, जी सर कहता हुआ सिर हिलाने लग गया।

आननफानन में किताब का विमोचन हो गया। मुख्य अतिथि लघुकथा से भी छोटा भाषण दिए। उन्हें न तो ढेंकुरी के विषय में जानकारी थी, न कौवे के बारे में जानते थे। वे ढेंकुरी की लंबाई पाँच फीट काटकर, कौवे की पूँछ में जोड़कर चलते बने। मूली प्रसाद उनके आने भर से गदगद थे कि पूरे देश की चिंता करने वाले आए तो सही, उनका आना ही बहुत है। उनके जाते ही सुनने वाले भी चल पड़े। मूली प्रसाद हाथ उठा-उठाकर थक गए पर किसी ने उनके हाथ की लिहाज नहीं की। पैर उठाकर अनुरोध करते तो शायद बात बनती।

□□□□□

ग़ुबारो-गर्द हर इक चश्मे-नम में डाल दिया
बड़ी सफाई से उसने भरम में डाल दिया

जमा हुआ था जो गोबर ब्रिटेन की गायों से
गुलाब चाचा जी ने पाठ्यक्रम में डाल दिया

बग़ैर रुत के मुसर्रत की तेज़ बारिश ने
हमारी फ़िक्र के छप्पर को ग़म में डाल दिया

इन्हें तो ठीक से अपना भी काम आता नहीं
ये मर्द ज़ात को किसने हरम में डाल दिया

हमें तो सिर्फ़ डराना था अपने दुश्मन को
सो हमने फूल को धीरे से बम में डाल दिया

ग़ज़ल हमारी भी अब इन्क़लाब लाएगी
उबलते ख़ून को हमने क़लम में डाल दिया

हमारे देश के फौजी को भी सुकून कहाँ
जो काश्मीर से निकला असम में डाल दिया

सुशील साहिल गोड्डा

बुलाती है हमें माटी
चलो माटी से मिलते हैं।

हुई हैं खिड़कियाँ अन्धी
हवा के पाँव सहमे हैं।
अंदेशे जागते ऐसे
समूचे गाँव सहमे हैं।

कहाँ पर कूकती कोयल
चलो चलकर के सुनते हैं-

सुलगती रात डसती है
ये तन्हा दिन सताता है,
नहीं जब गैस जलती है
तो चूल्हा याद आता है।

सिकी कल्ले पे सौंधी सी
वो रोटी याद करते हैं-

वो गलियां गांव की यारों
बहुत अब याद आती हैं,
हवायें साँझ की आकर
जहाँ लोरी सुनाती हैं।
हमारा गाँव ऐसा है.
जहाँ सपने महकते हैं

सोनिया अक्स

"सड़क पर लड़की"

सड़क के कोने पर लड़की हो
या फिर,
सुबह की ताजगी में,
बगीचे की बेंच पर बैठी लड़की हो ,
आते जाते लोगों की,
नजरों का शिकार बन जाती है,
लड़की अकेली क्यों है?
क्या सोच रही है लड़की ,
सड़क पर खड़ी ,
बेंच पर बैठी,
किसी के इंतजार में है क्या?
सड़क को कोई मतलब नहीं है,
बेंच भी नही पूछती है,
कि लड़की तू अकेली क्यों है?
बेंच पर बैठी लड़की,
सुबह की ताजी हवाओं को,
सांसो में भरती है,
गुजरती है तितलियां फूलों के पास जाती हुई,
उसके करीब से,
अपने रंगों पर इतराती हुई,
सड़क पर खड़ी लड़की बचती है
गाड़ियों के निकलते हुए धुँए से,
कहीं मैला ना हो जाए चेहरा,
इंतजार नहीं है उसे किसी का,
खुश है लड़कियां अकेलेपन में,
गुजरता जाता है समय,
उनको अकेले देख कर,
शहर देख रहा है अकेली लड़की को,
वो भर लेगी रंग,
अपने जीवन के कोरे कैनवास पर,
अकेली रहेगी तो चलेगी,
संघर्ष के पथ पर,
बची रहेगी शिकारियों के बिछाए जाल से,
अकेली वो लड़की |

इन्दु सिन्हा "इन्दु"

मेला राम नगरिया में राष्ट्रभाषा/मातृभाषा सम्मेलन एवं 'थपेड़े' उपन्यास का लोकार्पण

अपराकाशी फर्रुखाबाद अंर्तगत माँ भागीरथी के तट पर पुण्य माघी राम नागरिया मेला के सांस्कृतिक पांडाल में हिन्दी साहित्य भारती (वैश्विक) की फर्रुखाबाद इकाई द्वारा राष्ट्रभाषा/मातृभाषा सम्मेलन दिनांक 01 फरवरी 2023 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ मंचासीन गणमान्य विभूतियों ने माँ वागेश्वरी के चित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्जवलन करके किया गया। सरस्वती वंदना सुश्री स्मृति अग्निहोत्री ने प्रस्तुति की। सम्मेलन में हिन्दी मनीषी डॉ राजकुमार सिंह (हिन्दी विभागाध्यक्ष) ,डॉ. अरविंद कुमार (प्राध्यापक) राजकीय महाविद्यालय) शाहजहाँपुर, श्री श्रीकांत अवस्थी (कानपुर) एवं मुख्य अतिथि वी डी मिश्र (उपाचार्य, ज.न.वि.) राजस्थान सुहित स्थानीय विद्वान आचार्य ज्योती स्वरूप अग्निहोत्री, जवाहर सिंह गंगवार, डॉ. प्रभात अवस्थी, रामबाबू मिश्र (संस्था जिलाध्यक्ष) आदि ने हिन्दी के संवर्धन एवं प्रसार प्रचार में बाधाऐं तथा तत् समाधान पर विचार व्यक्त किए। डॉ अरविंद कुमार ने हिन्दी भाषा को युवाओं हेतु रोजगार मूलक बनाते हुए तकनीक से जोड़ने को बात रखी। मंचस्थ समस्त साहित्यकारों को उत्तरीय तथा प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मध्य उपन्यासकारा श्रीमती भारती मिश्रा के थपेड़े उपन्यास का लोकार्पण आगंतुक अतिथियों द्वारा किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री राजेन्द्र त्रिपाठी (पूर्व शासकीय अधिवक्ता) तथा संचालन डॉ रघुनंदन प्रसाद दीक्षित 'प्रखर' ने किया। सर्वांत में डॉ प्रभात अवस्थी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। **रिपोर्ट - डॉ प्रखर दीक्षित (फर्रुखाबाद)**

कसाई!

शायद यह उसकी अंतिम यात्रा है।आँखों में आँसू और हृदय में पसरा अज्ञात डर…कितना प्यार किया उसने उससे! वह भी तो उसका कितना ध्यान रखता था!कितना प्यार करता था!कभी किसी चीज़ की कमी नहीं रहने दी।खुशनुमा पलों के कई चित्र उसकी आँखों के सामने घूम गए।

आज अचानक ही उसने मुझे इस खूंखार आँखों और कठोर चेहरे वाले को सौंप दिया।हाँ बदले में कड़क गुलाबी नोटों की गड्डी इस डरावने से दिखने वाले गाड़ी वाले ने उसे दी थी।

फिर इसी के साथ वह संसार में वह निपट अकेली हो गई।

ज़ोर का ब्रेक! गाड़ी रुकी...ड्राइवर ने हाथ बाहर हवा में निकाला और वही कड़क गुलाबी नोट उस वर्दी वाले को थमा दिए। और गाड़ी फिर चल पड़ी।

काँपते हृदय और कातर निगाहों से वह अपने आस-पास देखने लगी।उसके जैसी ही कई सखियाँ! डर के मारे चेहरा सफेद हो गया।

चींऽऽऽ की आवाज़ के साथ गाड़ी रुक गई ।कबरी और उसके जैसियों को उतार,हाथ में धारदार छुरा लिए बड़ी-बड़ी लाल-लाल आँखों और मोटी मूँछ वाले के हवाले कर वह नोट गिनने लगा।

कबरी की आँखें डबडबाई और उसने भींच आँखें बंद कर सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दिया।

यह क्या!फिर वही चींऽऽऽ की आवाज़....कबरी ने आँखें उठाकर देखा-एकगाड़ी रुकी। खीसें निपोरते,गले में रुमाल बाँधे लाल दाँत वाले ने एक निरीह सी दीखने वाली एक किशोरी को बाल पकड़ लगभग खींचते हुए पान चबाते,भयानक चेहरे वाले जानवरनुमा आदमी के हाथ में थमा दिया और नोट गिनने लगा।

लड़की के मुँह को कपड़े से कसकर बंधा हुआ है। लड़की की बड़ी-बड़ी भूरी बेबस आँखें मदद के लिए इधर उधर तक रहीं थीं। एकाएक वह फूट-फूट कर रो पड़ी। गुलाबी गोरे कपोलों पर आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा।

अंदर एक तूफान सा उठा पर बेबस कबरी कसमसा कर रह गई।

भीगी आँखें और क्षण का सत्य-'कबरी! लड़की! और... कसाई!

यशोधरा भटनागर

पंख मोड़ कर, बैठा पाखी।
बोले किससे मन की साखी।।
नदी - नाल सब सूख गए।
बोले क्या रिश्ते की बैसाखी।।

गाँव का मनई शहर को भागा।
कब से टेर रहा मुंडेर से कागा।।
भूल गए सब स्नेह स्वजन को।
तोड़ गए क्यों मन का धागा।।

खाली-खाली बाग-तड़ाग सब।
बुझे - बुझे से राग-फाग सब।।
कास - पटेर में रन -बन भटके।
लुटे-पिटे से भाग-अभाग सब।।

पीपल नीम से डर कर बोले।
मन का भेद वो खुद पर खोले।।
काठ बने हम खड़े यहाँ पर।
मौसम भी प्रति पल विष घोले।।

तन मरघट मन आँगन सूना-सूना।
अपना दुख है,दुख से भी दूना।।
सुख की आस बड़ी है लम्बी।
काया कातर छाया क्या छूना।।

बैरी साजन प्रीत क्या जाने।
गाँव - गली की रीत क्या जाने।।
सदियाँ बीते पर भाव ना रीते।
दिल का दरद तो दिल ही जाने।।

संजय कुमार सिंह

गज़ल

ले जाती है हमको ये किस्मत कहाँ कहाँ
ये लाती है जीवन में तोहमत कहाँ कहाँ

गरीब पुत्री का ब्याह रचाए या पेट भरे
दहेज की मिले उसको गुर्वत कहाँ-कहाँ

भाई ने दी नेक सलाह तो मारी लात
विभीषण ही होते हैं बेइज्जत कहाँ-कहाँ

महंगाई डायन बनकर खाती गरीब को
शिकस्ता रही है उसकी हालात कहाँ-कहाँ

हो गई दफ्तरों की हालत बहुत खराब
देना पड़ती है हमको रिश्वत कहाँ-कहाँ

पेट सीकर भी रह लेता गरीब भूखा
रहे उसके जीवन में दुर्गत कहाँ-कहाँ

गांव से जब-जब भी आया गोबर शहर में
झेली है उसने रोटी की किल्लत कहाँ-कहाँ

कभी सुख मिला कभी दुःख मिला आदमी को
मिलती है मुसीबत में मुसीबत कहाँ-कहाँ

गर्दिश से आज तक उभरा नहीं है रमेश
करता है हाड़तोड़ मेहनत कहाँ-कहाँ

रमेश मनोहरा

होना ही बहुत है

पेड़ पर
पत्तियाँ देखो तो
सुकून मिलता है।

पक्षी देखो
यदि पेड़ पर
तो भी
सुकून मिलता है।

पत्तियां होगी
तो
बची रहेगी हरियाली
पक्षी है
तो आप
अकेले नहीं हैं
आपके आसपास
एक आवाज है।

पेड़ पर
पत्तियों का होना ही
बहुत है।

बहुत है
होना पक्षियों का भी।

राजेन्द्र ओझा

सियासत

ये सियासत तुम्हें जीने नहीं देगी,
दो वक्त की रोटी भी खाने नहीं देगी,
तुम सब कर लेना चाहे फिर मर जाना,
मगर इसके खिलाफ मत होना
कहे ये वो सब सही कहती हैं,
तुम्हारी बातें इसे झूठी लगेगी,
ये तुम्हें न्यायालय से दिवालिया
घोषित करा सकती है।
सब कर लेना फिर चाहे भूखे रहना,
मुझे मालूम है तुम्हारी भूख
सिर्फ रोटी की ही रहेगी,
मगर इसकी भूख संसद भवन, न्यायालय
और सरकारी इमारतें तक खा जाएगी।
ये सियासत तुम्हारी झोंपड़ियों में नंगें
पांव आएगी,
मगर उस दिन जिस दिन इसको जरूरत
होगी।
तुम्हारी जरूरत सिर्फ मकानों की रहेगी,
मगर इसकी ज़रूरत का अंदाजा
कोई भी नहीं लगा सकता
ना तुम ना मैं

- गुलशन पंवार

प्रेमलता यदु

धरोहर

जब किसी कोरे कागज़ पर कुछ चुने हुए अक्षरों का आपस में संगम होता है तो वे एक नए रूप में शब्द बन कर पन्नों पर उभर आते हैं. उन्हीं उकेरे हुए शब्दों से मिलकर जब कई और अन्य शब्द अपना सामंजस्य बिठाते हुए चलने लगते हैं तब कही जाकर बनती है कोई नज़्म, शायरी, गीत, ग़ज़ल, कव्वाली, कविता, कहानी या फिर कथा. जिसे बाद में किसी पत्र-पत्रिका, पुस्तक, किताब या फिर उपन्यास के रूप में संग्रहित कर लिया जाता है धरोहर के तौर पर भावी पीढ़ी और समाज के लिए.

अपने मन के भावों और समाज में घटित हो रहे घटनाक्रमों को अपनी पैनी नजरों के साथ, देखने समझने के उपरांत जब कोई शख्स उसे अपनी मन चाही विधा में लिखने लगता है, तब जन्म होता हैं एक लेखक, रचनाकार, साहित्यकार व कथाकार का, जो समाज को ताउम्र बहुत कुछ देने की चाहत रखता है और शायद देता भी है, तभी तो वक्त के साथ उनके विचार और नजरिए का समाज भी सम्मान करता है, परन्तु आज के डिजिटल युग में कई अहम पुस्तकें घर की अलमारियों और पुस्तकालयों में धूल खाती पड़ी हुई है. जिन्हें चंद लोगों के अलावा, कोई पन्नें पलटने वाला भी नहीं. इस वजह से बड़ी ही कैफियत से सहेज कर रखी गई कई पुस्तकों के पन्नें भी पीले पड़ गए है क्योंकि आज के डिजिटल युग में युवा पीढ़ी के हाथों डिजिटल लाइब्रेरी जो लग गई है.

कावेरी देवी अपने घर के एक कमरे में खुले सैल्फ पर रखे अपने पति व लेखक केशवनाथ जी की एक पुस्तक हाथों में लिए उन पर से धूल झाड़ती हुई यह सब सोच रही थी.

इस कमरे में रखे अलमारियों में केवल उनके पति के द्वारा लिखी गई पुस्तकें या पत्र-पत्रिकाएं ही नहीं थी, अपितु और भी कई मशहूर लेखक लेखिकाओं की पुस्तकें रखी हुई थी. कई सालों से यह कमरा एक छोटे से लाइब्रेरी के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था, ज़हां किताबों के पन्नों की महक आज भी बरकरार थी.

तभी पुस्तक में अपने पति की तस्वीर देख कावेरी देवी उस दिन को याद कर भावुक हो उठी, जब उनकी शादी केशवनाथ जी से हुई थी और सबने उनसे कहा था कि तुम्हारे पति केवल सरकारी दफ्तर में मुलाजिम ही नहीं है बल्कि एक लेखक भी हैं. यह सुनते ही वह यह सोच कर डर गई थी कि वह तो निरक्षर हैं और उसके पति इतने पढ़े लिखे, कैसे निभा पाइएगी वो यह सात जन्मों का बंधन लेकिन केशवनाथ जी इतने सहज और सरल व्यक्तित्व के धनी थे कि कावेरी देवी को रिश्ते निभाने के लिए कभी कोई प्रयत्न करने की अवश्यकता ही नहीं पड़ी. सब कुछ अपने आप बड़ी ही मुकम्मल तरीके से निभता चला गया.

शादी के उपरांत केशवनाथ जी ने उन्हें निरक्षर भी नहीं रहने दिया. व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने स्वयं ही उन्हें अक्षर ज्ञान करा कर इस काबिल बनाया कि वह धाराप्रवाह पढ़ने व लिखने लगी.

ठक...ठक....."कौन है...?" "दादी मां मैं पवित्रा" "ओह....पवित्रा आओ बेटा....आओ...." "दादी मां आप यहां लाइब्रेरी में इन किताबों के बीच क्या कर रही है....?"

"इन किताबों में धूल चढ़ गई थी उन्हें साफ कर रही हूं."

"ओह हो दादी मां आपको क्या जरूरत है इनकी धूल साफ करने की, आप जानती है ना आपको एलर्जी है, आपका दमा बढ़ गया

तो.... चलिए जल्दी बाहर निकलिए."

कहती हुई पवित्रा अपनी दादी का हाथ पकड़, उन्हें कमरे से बाहर ले आई.

कमरे से बाहर आकर कावेरी देवी बोली- "अरे लेकिन तुम मुझे ले कर कहां जा रही हो "

"हॉल में दादी..... हॉल में... सभी वहीं बैठे हैं और मम्मी पापा आप से कुछ कहना चाहते हैं."

कहती हुई पवित्रा कावेरी देवी के कांधे पर अपना हाथ रख उन्हें हॉल में ले आई, जहां पहले से ही कावेरी देवी का बेटा अनिमेष और बहू संपदा बैठे हुए थे लेकिन वहां एक शख्स ऐसा भी था जिसे कावेरी देवी नहीं पहचानती थी. कावेरी देवी को देखते ही संपदा उठ खड़ी हुई और बोली-

"अम्मा जी आइए, इनसे मिलिए. ये है इंटीरियर डिजाइनर मनीष वर्मा. ये हमारी लाइब्रेरी का मेकओवर कर उसे एक खूबसूरत लीविंग रूम में परिवर्तित करने में हमारा सहयोग करेंगे."

कावेरी देवी ने आश्चर्य से कहा-

"मेकओवर....!"

तभी पवित्रा बोली-

"हां दादी मेकओवर....अब लाइब्रेरी, लाइब्रेरी नहीं.... हमारा नया लीविंग रूम होगा. जहां हम सब साथ बैठकर अपना क्वालिटी टाइम स्पेंड करेंगे. साथ चाय पिएंगे, बातें करेंगे, मूवी देखेंगे, ऑनलाइन गेम खेलेंगे और आप चाहें तो ऑनलाइन पढ़ भी सकती हैं ."

यह सुन कावेरी देवी थोड़ा अचंभित होती हुई बोली- " लाइब्रेरी.... लीविंग रूम....! तो लाइब्रेरी कहां होगा."

कावेरी देवी के इस प्रश्न पर संपदा थोड़ी मुस्कुराती हुई, बड़ी ही सहजता से उन्हें समझाती हुई बोली-

"अम्मा जी आजकल कोई किताबें नहीं पढ़ता है, सभी मोबाइल और लैपटॉप पर ऑनलाइन पढ़ लेते हैं. ऐसे में लाइब्रेरी का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता है. अब उन किताबों का मूल्य रद्दी से ज्यादा कुछ है भी नहीं. उन किताबों को तो अब कोई खरीदना भी नहीं चाहता."

किताबों के लिए रद्दी सुन कावेरी देवी की आंखें छलक आई और वह केवल इतना कह पाई थी कि फिर तुम सारी किताबों का क्या..... करो.....

तभी अनिमेष बीच में ही, कावेरी देवी की बात पूरी होने से पहले बोल पड़ा-

"अम्मा उसका इंतज़ाम हो गया है, दो चार दिनों में रद्दी वाला आ कर उन किताबों को ले जाएगा और कल से मिस्टर वर्मा अपना काम शुरू कर देंगे."

बहू के बाद अब अपने बेटे और एक रचनाकार पिता के पुत्र से किताबों के लिए रद्दी सुन कावेरी देवी बेहद आहत हुई, और बिना कुछ कहे अपने कमरे में आ गई. आज उन्हें इस बात का बेहद अफसोस था कि एक पुत्र के लिए पिता के द्वारा छोड़े गए रूपए, पैसे, धन संपत्ति सभी मूल्यवान है परन्तु धरोहर के रूप में छोड़ी गई बहुमूल्य पुस्तकें रद्दी....!

अगले दिन से लीविंग रुम का कार्य प्रारंभ हो गया और कावेरी देवी ने चुप रहना ही बेहतर समझा. दूसरे दिन अपने कमरे में बैठी कावेरी देवी पढ़ रही थी तभी डोर बैल बजा. संपदा ने दरवाजा खोला तो सामने खड़ी एक लड़की ने अपने दोनों हाथों को जोड़ते हुए कहा-

"नमस्ते मैं विद्या हूं. मैं एक शोधार्थी हूं क्या यह घर दिवंगत केशवनाथ जी का है...?"

संपदा हैरानी से उस लड़की को देखते हुए बोली-

" जी हां मैं उनकी बहू हूं, कहिए मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूं."

विद्या विनम्रतापूर्वक बोली-

" मैं केशवनाथ जी के साहित्य पर शोध कर रही हूं, मुझे केशवनाथ जी की कुछ पुस्तकें चाहिए. मेरे और मेरे जैसे कई हिंदी साहित्य के शोधार्थियों के लिए वो पुस्तकें बेशकीमती है. क्या मुझे वो पुस्तकें मिल सकती है."

एक दिन पूर्व संपदा ने जिन पुस्तकों को रद्दी कहा था,आज एक अनजान लड़की उन किताबों की महत्ता बता रही थी. संपदा को अपनी सोच पर अफसोस हुआ और वह अपनी ग़लती को सुधारने की चाह से बोली-

" हमारे लाइब्रेरी में रिनोवेशन का काम चल रहा है लेकिन फिर भी आप चाहें तो पुस्तकें देख सकती है." कहती हुई संपदा ने विद्या को लाइब्रेरी का रास्ता दिखाया.

कुछ देर बाद हाथों में कुछ पुस्तकें लिए विद्या लाइब्रेरी से बाहर आई और संपदा को धन्यवाद कहते हुए बोली -

"मैं बहुत जल्द पुस्तकें लौटा दूंगी." विद्या के जाते ही रद्दी वाला भी आ गया और संपदा से बोला-

" मैडम मैं रद्दी किताबें लेने आया हूं."

संपदा बड़े आदर भाव से बोली-

" माफ करिए भैया, हमारे यहां कोई रद्दी पुस्तकें नहीं है, आप जा सकते हैं."

जब संपदा यह सब रद्दी वाले से कह रही थी इसी बीच कावेरी देवी भी वहां आ गई थी और संपदा को बड़ी हैरानी से देख रही थी. उन्हें इस तरह हैरानी से अपनी ओर देखता देख संपदा मुस्कुराती हुई बोली-

"अम्मा जी मैं जान गई हूं किताबों का महत्व. किताबें कभी रद्दी नहीं होती, ये तो भावी पीढ़ी के लिए धरोहर होती है फिर भी लाइब्रेरी का मेकओवर तो होगा ही लेकिन लाइब्रेरी.... लाइब्रेरी ही रहेगा."

संपदा के ऐसा कहने के उपरांत दोनों मुस्कुराती हुई लाइब्रेरी की तरफ चल पड़ी.

अगिहाने

जो बात मैं कहने जा रहा हूँ आप भले ही उसे कहानी समझें पर कहानी नहीं है एक सत्य घटना है अब स्वाभाविक है आप पूँछेंगे कि सत्य घटना मैं क्यों सुना रहा हूँ ?

तो इसके उत्तर में मैं क्या कहूँ ?

यों समझ लीजिए कि अपने मन का बोझ हल्का कर रहा हूँ आप सुन लें तो कृपा होगी और किसी को तो सुना भी नहीं सकता डर लगता है मैं ही क्या उनसे तो सभी डरते हैं मेरे गाँव के ही क्या शहर के भी प्रभाव भी तो बहुत है उनका सत्ता में भी उनका प्रभाव है इसीलिए कल जब शहर के स्थानीय समाचार पत्र में यह घटना प्रकाशित कराने गया तो उसने साफ इनकार कर दिया कहने लगा " भाई क्या पेपर बंद हो बाओगे "

वैसे तो वो घटना मेरे गाँव के अधिकतर उसकी चर्चा नहीं की है आप भी किसी से नहीं कहें कहीं उनके कानों में भनक पड़ गई तो- बाप रे बाप सड़ाक सड़ाक कोड़े पड़ेंगे पीठ पर जैसे दुल्लन की पीठ पर पड़े थे

आप सोच रहे होंगे कि मैं क्या बके जा रहा हूँ ? अनेक प्रश्न आपके मस्तिष्क में उभर रहे होंगे

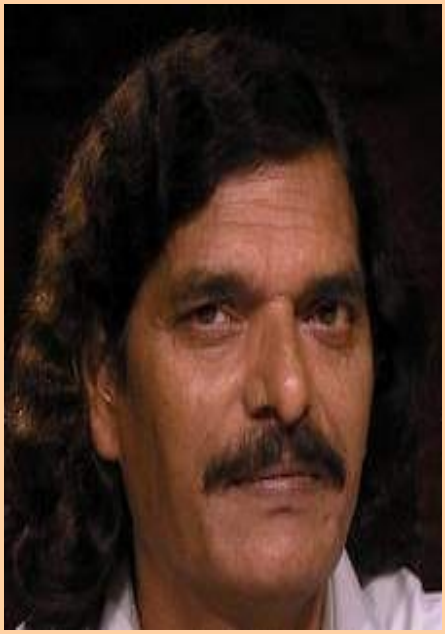

जैसे ....

दुल्लन कौन है ? उसकी पीठ पर कोड़े क्यों पड़े ? किसने मारे ?

वह कौन है जिनका इतना भय व्याप्त है ?

वह घटना क्या है जिसे मैं सुनाना चाहता हूँ ?

अच्छा तो पहले मैं यह बता दूँ कि दुल्लन कौन है ? उसकी पीठ पर कोड़े क्यों पड़े ? नहीं यदि पहले मैं यह बता दूँ कि वो कौन हैं जिनका भय इतना व्याप्त है तो ठीक रहेगा

तो सुनिए वो हैं मेरे गाँव के भूतपूर्व ज़िमीदार साहब के वारिस नाम नहीं लूँगा वैसे सब उन्हें कुंवर साहब कहते हैं दो भाई हैं बड़े को बड़े कुंवर साहब छोटे को छोटे कुंवर साहब कहते हैं उनके बारे में कुछ भी बताऊँ उससे पहले मेरे गाँव की सही सही स्थिति के बारे में सुनिए

मेरा गाँव शहर से पाँच किलोमीटर दूर एक मेन रोड पर स्थित है गाँव की आबादी मुश्किल से

एक हजार होगी गाँव के अधिकतर मकान कच्चे हैं बीच में कुंवर साहब की पक्की हवेली गरीबी की उपहास उड़ाती सी खड़ी है इस गाँव में पहले एक ज़िमीदार थे करीब दो हजार बीघे खेती के मालिक अंग्रेजों की कृपा से रायबहादुर का घिताब मिला सब राजा साहब कहने लगे ये सब बातें में संछेप में सुना रहा हूँ क्योंकि मुझे पूरी घटना भी सुनानी है सम्भवतः आपके पास समय कम होगा

हाँ दुर्भाग्य से राजा साहब के कोई संतान नहीं हुई तो उन्होंने अपना वारिस अपने दूर के भतीजों को घोषित किया और चल बसे

भतीजों ने इतनी बड़ी जागीर पहले कभी नहीं देखी थी पर मेरे विचार से उन्होंने ज़िमीदार टाइप के पिक्चर अवश्य देखे होंगे एवं उसी टाइप के उपन्यास पढ़े होंगे

जागीर मिलने पर कुंवर साहब कहलाने लगे छोटे कुंवर साहब घर पर ही रहते हैं और बड़े कुंवर साहब सत्ता दल से सम्बंधित होने के कारण कभी लखनऊ कभी दिल्ली रहते हैं कभी कभी आते हैं

मैं कह रहा था कि उन्होंने ज़िमीदार टाइप के पिक्चर देखे होंगे उपन्यास पढ़े होंगे यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि उनके कार्यकलापों से ऐसा प्रतीत होता है जब कुंवर साहब व उनके घरों की कन्याएं कोई भी शाम को घोड़े पर बैठ कर हाथ में बंदूक लेकर निकला करते हैं तो उनकी आँखों में वही चमक होती है जैसी मैंने पिक्चरों में ज़िमीदारों की आँखों में देखी है उनकी आवाज़ में भी वही कड़क होती है जैसी ज़िमीदार टाइप के पिक्चर या उपन्यास के हीरो की आवाज़ में होती है वो स्वयं को उसी ढंग से निभाने की कोशिश करते हैं अत्याचार भी वैसा ही करते हैं उनकी पहुंच बहुत दूर तक है इसलिए सामान्य व्यक्ति उनसे डरते हैं

अब मैं आपको दुल्लन वाली बात बताऊँ

दुल्लन हमारे गाँव का एक मात्र धोबी है सभी के कपड़े वही धोता है कुंवर साहब के कपड़े भी सालाना कुछ नाज के एवज में धोता है चार बच्चे हैं एक औरत एक बूढ़ा बाप है है नहीं था

जिस दिन यह घटना घटी जो मैं आपको सुनाऊंगा उसके तीन दिन पहले दुल्लन की बकरी कुंवर साहब के खेत में चली गई थोड़ा नुकसान भी कर दिया फिर क्या था कुंवर साहब ने दुल्लन को बुलबा भेजा दुल्लन का बाप भी साथ में गया

दुल्लन के बाप ने लाख कहा साहब मारिए नहीं जुर्माना कर दीजिए पर उसकी एक न सुनी उसी के सामने दुल्लन की पीठ पर कोड़े बरसने लगे सड़ाक एक .. सड़ाक दो ...सड़ाक तीन ... चार पाँच और न जाने कितने ?

दुल्लन के बाप से न देखा गया और वो उसी दिन गाँव छोड़ कर चला गया आज तक नहीं आया

किसी ने भी दुल्लन को यह सलाह नहीं दी कि थाने में रिपोर्ट कर दे क्योंकि सभी जानते हैं कि दरोगा एस पी का अक्सर उनके यहाँ आना जाना खाना पीना होता है

मैंने दबी ज़ुवान से कहा था कि कुंवर साहब के कपड़े धोना बंद कर दे तो उसने कहा " भइया क्या कह रहे हो ताल पर कपड़े धोना भी बंद करवा देंगे " मैं यह भूल गया था कि गाँव का एक मात्र तालाब भी उनके अधिकार में है अब आप ही बताइए है न उनका भय स्वाभाविक ?

हाँ तो अब मैं असली घटना पर आऊँ यह घटना दुल्लन वाली घटना के तीन दिन बाद घटी

घटना से पहले मैं यह बताऊँ कि यह घटना किसके साथ घटी ? वो कौन थे ? कहाँ से प्रारंभ करूँ ?

पंचायत घर से ? या अगिहाने से ?

अगिहाने से ही प्रारंभ करता हूँ

अगिहाने को आपके यहाँ क्या कहते हैं ? नहीं

जानता पर हमारे यहाँ अगिहाना ही कहते हैं हाँ कहीं कहीं अलाव भी कहते हैं पर इतना बताऊँ कि अगिहाना गड्ढा खोद कर बनाया जाता है और उसमें आग जलाई जाती है सर्दी की रात्रि में काफ़ी काफ़ी देर रात गए तक उस जलती आग के पास बैठते हैं और तापते हैं

जिस दिन दुल्लन वाली घटना घटी उसी दिन रात्रि में हम कई लोग अगिहाने के पास बैठ कर ताप रहे थे शाम का झुटपुटा हो गया था दुल्लन वाली घटना से सभी दुखी बैठे थे तभी दूर से कुछ व्यक्ति आते दिखाई दिए नज़दीक आने पर देखा उनमें एक बूढ़ा था उसके साथ करीब अठारह वर्ष की एक लड़की एक ज़वान लड़का एक ज़वान औरत एक करीब बारह वर्ष का लड़का था कुल मिलाकर पाँच प्राणी थे सामान के नाम पर उनके पास कुछ पोटलियाँ थीं बस वेशभूषा से वो मुसलमान लग रहे थे

वे लोग अगिहाने के पास खड़े हो गए

भइया कहीं रात में रुकने को जगह मिल सकती है ? बूढ़े ने प्रश्न किया वे लोग सर्दी से ठिठुर रहे थे

कुछ उत्तर देने से पहले मैंने कहा - अगिहाने पर बैठ लो ठंड लग रही होगी वे लोग जैसे इस प्रतीक्षा में ही थे हम लोगों ने स्थान बनाया और वे बैठ गए

वार्तालाप के दौरान पता चला कि वे लोग गरीबी से परेशान होकर अपना गाँव छोड़ कर मजदूरी करने निकले हैं

ज़वान लड़का बूढ़े का बड़ा पुत्र ज़वान औरत लड़के की पत्नी ज़वान लड़की बूढ़े की पुत्री और वो छोटा लड़का बूढ़े का छोटा पुत्र था

रात को कहीं सर छुपाने की जगह मिल जाती सरकार ? बूढ़े की आँखों में प्रश्न चिह्न था मुझे उनकी स्थिति देख कर दया आ गई मैंने उन्हें अपनी रिस्क पर पंचायत घर के बरामदे में रुकने को कह दिया

पंचायत घर में छोड़ कर जब मैं चलने को हुआ तो इंसानियत के नाते पूछा - खाने का सामान है आपके पास ?

बूढ़ा तत्काल बोला - है सरकार सब है रोटियां पड़ीं हैं खा लेंगे

मुझे उसकी आवाज़ कहीं दूर से आती सी लगी तभी छोटा लड़का बोला - नहीं अब्बा झूठ बोल रहे हैं हमारे पास कोई रोटियां बोटियां नहीं हैं हम लोगों ने कल से खाना नहीं खाया है

चुप रह हरामजादे मुझे खाले बूढ़े ने अकड़ कर बच्चे को डाटा

मैंने कहा " बाबा क्यों डांटते हो बच्चा भूखा है तो कहेगा नहीं " चलो बेटा मेरे साथ चलो मैं तुम्हें खाना खिलाऊंगा यह जानते हुए भी कि पूरा परिवार भूखा है मैंने उस बच्चे से ही कहा

मैं बच्चे को बुला लाया और खाना खिलाया यह जानते हुए भी कि पूरा परिवार भूखा सोएगा पर क्या करता मैं तो खुद ही ....?

मुझे पूरी रात छटपटाहट रही न जाने कब आँख लग गई प्रातः देर से उठा उठते ही पंचायत घर गया वे वहाँ नहीं थे लोगों के द्वारा पता चला कि कुंवर साहब की हवेली पर काम से लग गए हैं

काम क्या था ?

पुरानी हवेली की एक कच्ची दीबार को खसाना और उसकी मिट्टी को आधा फर्लांग दूर एक गड्ढे में डालना

शाम को उन्हें पंचायत घर में स्थान नहीं मिला मैंने उन्हें अपने कमरे के दालान में रुकने को कह दिया वही उन्होंने ईंटों का चूल्हा बना कर रोटी बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया तभी मेरा वार्तालाप प्रारंभ हो गया मुझे ज्ञात हुआ कि कुंवर साहब का काम ठेके पर तय हुआ है उतना सब काम पचास रुपये में तय हुआ है मैं चौंका यह काम तो कम से कम दोसो रुपये का था इन बेचारों को तो काफ़ी दिन लग जाएंगे

मुझे न जाने क्यों उस परिवार से सहानुभूति होने लगी

दोपहर खाना खाया था ? मैंने प्रश्न किया

नहीं सरकार हम लोग तीन साल से दिन में एक टेम ही खाते हैं पहले जरूर कुछ गुड़गुड़ी लगती

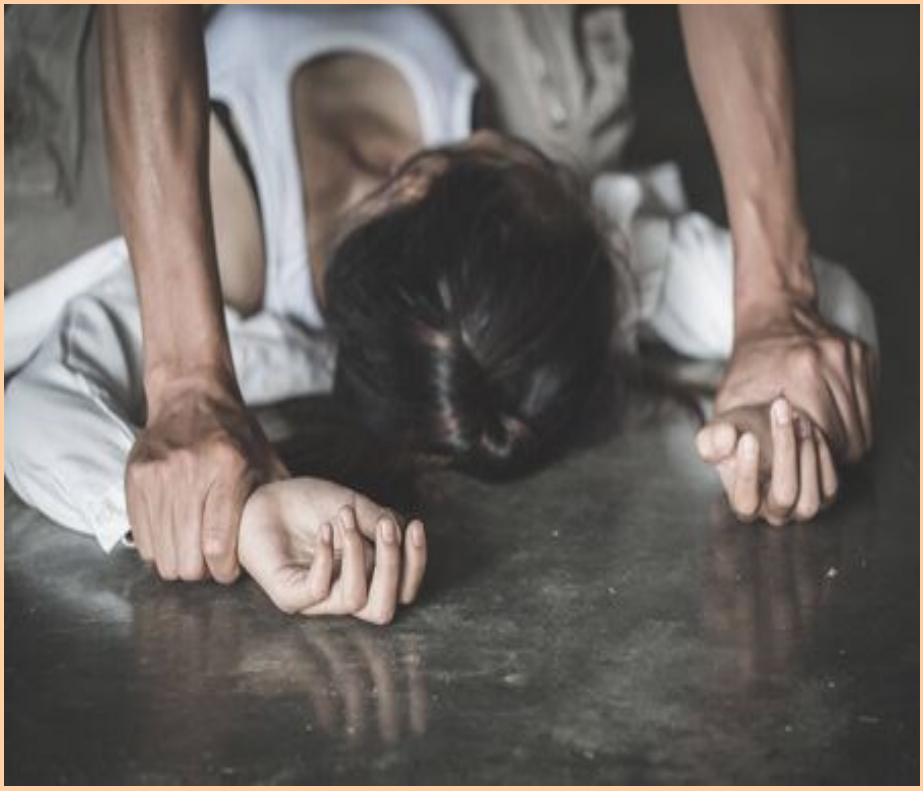

थी पेट में पर अब आदत हो गई है बूढ़े ने कहा

मुझे अपने गले में कुछ फंसा फंसा सा लगा मैं अकारण खखारने लगा

रात्रि में प्रकाश के लिए मैंने उन लोगों को मिट्टी के तेल की एक ढिबरी देदी और मैं कमरे में सोने चला गया

मेरे कमरे की खिड़की उसी दालान में खुलती है जिसमें वे ठहरे थे काफ़ी रात तक मैं उनके विषय में सोचता रहा तभी मुझे कुछ कुनमुनाहट सुनाई दी मैं अपनी जिज्ञासा न रोक सका खिड़की खोल कर उसके सहारे खड़ा हो गया मैंने देखा बूढ़े की लड़की और छोटा बेटा पास पास सो रहे थे बूढ़ा अलग एक कोने में टखनों को पेट में छुपाए पड़ा था ज़वान लड़का और उसकी पत्नी कुछ फासले से अलग अलग लेटे थे तभी मैंने सुना छोटा लड़का अपनी बहन से कह रहा था - आपा थोड़ा चुपट जाओ न ठंड लग रही है

लड़की ने उसको चिपटा लिया

थोड़ा और कसके चिपटो न - लड़का फिर बोला

लड़की ने और कस के चिपटा लिया

थोड़ा और कस के बहुत ठंड लग रही है

लड़का फिर घिघयाया अब क्या करूँ जा अगिहाने के पास लेट जा लड़की ने कहा और जैसे यह प्रस्ताव लड़के को जंचा वो उठा और अगिहाने के पास लेट गया कुछ चीथड़े अपने ऊपर डाल लिए अगिहना अब भी सुलग रहा था मैंने देखा अगिहाने के पास कुछ कुत्ते लेटे हुए थे पहले तो वो गुर्राए फिर चुप हो गए सम्भवतः समझ गए होंगे उन्हीं की बिरादरी का है

तभी मेरी दृष्टि लड़के की बहू पर पड़ी उसकी अंगिया लगभग फ़टी थी वो प्रायः अर्धनग्न पड़ी थी उसे देख कर मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ जबकि छोटे कुंवर साहब की पत्नी का बड़े गले का ब्लाउज देख कर शरीर में एक लकीर सी खिंच जाती है

बहुत देर हो गई बकते बकते सम्भवतः आप बोर हो गए होंगे इसलिए घटना पर आता हूँ

हुआ यह कि वो काम कर के सो गए उसी रात कुंवर साहब की घोड़ी खो गई दिन भर तलाश किया नहीं मिली तब कुंवर साहब ने यह परिणाम निकाला हो न हो यही लोग चोर हैं इन्हीं लोगों ने किसी तरह घोड़ी गायब करबाई है

फिर तो कुंवर साहब ने बूढ़े को उसके लड़के को बच्चे को यानिकि पूरे परिवार को बुरी तरह पीटा और रात भर हवेली में कैद रखा

दूसरे दिन कुंवर साहब ने पुलिस बुलाई दारोगा जी पूरे परिवार को थाने यह कह कर ले गया कि " पूछताछ " करेंगे

हवेली से जब वह परिवार निकल कर जा रहा था तो दृश्य देख कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए बूढ़ा और उसका लड़का लगड़ा रहे थे लड़के की बहू और छोटा लड़का रो रहे थे पर लड़की चुप थी एकदम चुप चाल में कुछ लड़खड़ाहट थी पूरे परिवार ने भरे नेत्रों से मुझे देखा पर लड़की ने एक बार भी नहीं

मैं सबकुछ समझ गया था

एक हूक सी मेरे मन में उठी वहाँ खड़ा रहना मुझे दुष्कर कार्य जान पड़ा और मैं वहाँ से हट गया

दूसरे दिन कुंवर साहब की घोड़ी पास के गाँव में मिल गई किसी तरह अपने आप खुल गई थी उसी दिन वो पूरा परिवार थाने से लौटा अपनी पोटलियाँ लेने

वह दृश्य दिल दहलाने वाला था गाँव के बहुत से लोग एकत्रित थे बूढ़े का परिवार लड़खड़ाता हुआ फटेहाल आ रहा था सभी के चेहरे पर आंसुओं की खुश्क लकीरें थीं पूरे गाँव में मुर्दानी छाई हुई थी किसी का साहस उनसे कुछ भी पूछने का नहीं हुआ पूरा परिवार थाने में हुई " पूछताछ " के बाद लौटा था

वह और नज़दीक आए

मैंने देखा गौर से देखा लड़की के गालों पर खरोंच के निशान थे आँखें सूजी हुई थीं दोनों आँखें लाल थीं एकदम लाल मुझे लगा ये आँखें नहीं दहकते हुए अगिहाने हैं आज किसी को भी ठंड नहीं लगेगी मैं फुसफुसा उठा

वे लोग नज़दीक आए दालान से अपनी पोटलियाँ उठाईं और चल दिए जिधर से आए थे उधर ही

- सलाम सरकार ! बूढ़े ने चलते समय कहा

इस बार उसका सरकार कहना चुभ गया

- सरकार मैं नहीं हूँ सरकार कुंवर साहब हैं सरकार दरोगा जी हैं मैं बड़बड़ाया

चलते समय मैंने एक बार फिर उस लड़की की ओर देखा - उसकी आँखें अब भी मुझे अगिहना लग रही थीं

और उसकी गर्माहट से मेरा रोयां - रोयां झुलसा जा रहा था .

□□ सुरेन्द्र सुकुमार